धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

सितम्बर-2015 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

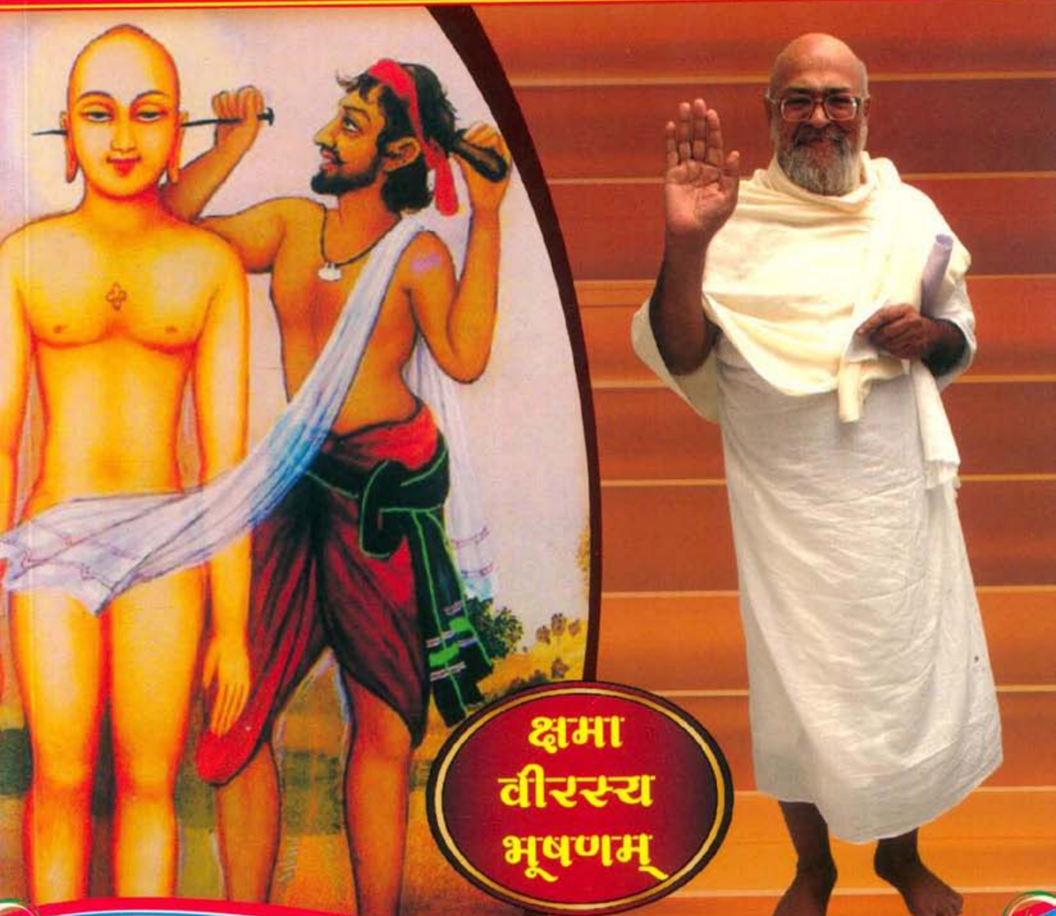

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- पर्युषण पर्व प्रारम्भ गुरुवार, 10 सितम्बर-15
- महावीर जन्म वाचन सोमवार, 14 सितम्बर-15
- संवत्सरी पर्व गुरुवार, 17 सितम्बर-15
- उपधान तप प्रारम्भ पेपराल में प्रथम प्रवेश 23 सितम्बर द्वितीय 25 सितम्बर
- अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का वार्षिक सम्मेलन 22 नवम्बर को पेपराल में

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

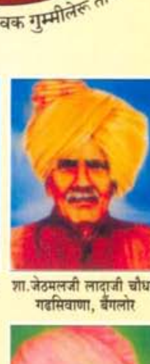

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी वंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

Rec
11/9/15

हमारे गौरव

3007

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराउ

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

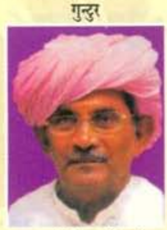
शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. [illegible]चंदजी दगाजी सकलेचा

31941

हमारे गौरव

शा. सेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वादीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओसवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाद नेल्लोर

मुथा धानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड़ में अमासर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पावेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्तु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड
रैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देमाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरड़वाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभवनदास थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, वड़ग्राम निवासी

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व. मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

हमारे गौरव

कर्नाटक

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समराजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फौजाजी
शक्तावत, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलापुर, बीजापुर

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कवदी, बीजापुर (कर्नाटक)

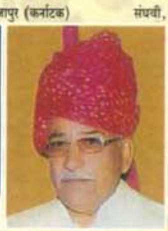

शाह सोहनलाल
मिश्रीचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

|| विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

सितम्बर-2015 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 62 अंक -9
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

आजीवन आयंबिल तप का नियम ले लिया

जैनाचार्य श्री प्रद्योतनसूरीश्वरजी म. का आगमन अपने विशाल शिष्य वर्ग के साथ राजस्थान के नाडोल नगर में हुआ। इसी धरती के लाल श्री मानदेवमुनि को आचार्य पद दिए जाने का महोत्सव आयोजित किए जाने की घोषणा हुई थी।

भव्य समारोह! अपार जनमेदिनी!

जैनाचार्यश्री भव्य सजे मंच से मंत्रोच्चारण का दौर चलाए हुए थे। आचार्यपद की क्रियाएं निरंतर थी। उन्हें मानदेव मुनि के कान में सूरिमंत्र प्रदान करना था।

श्रद्धालुओं की भीड़ एकाग्र होकर अपूर्व शांति तथा श्रद्धा के साथ पूरी धर्मक्रिया देखने में तन्मय थी। तभी जैनाचार्यश्री की दृष्टि नूतन आचार्य की क्रिया कर रहे मानदेव मुनि के कंधों पर जा टिकी। श्रोताओं को वहाँ कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन जैनाचार्य गुरुदेवश्री की उत्कृष्ट ध्यान साधना के कारण उनको मानदेव मुनि के एक कंधे पर सरस्वती देवी तथा दूसरे कंधे पर लक्ष्मीदेवी बैठी हुई दिखाई दी। जैनाचार्यश्री ठिठक गए वे क्षणिक रूक गये । उनके मन में कई विचार कौंधे, शंका भी आई कि मेरा शिष्य ज्ञानी, तपस्वी, सर्वोच्च ध्यानी तथा उन्नत आत्म शक्तियों से युक्त है, किन्तु इन देवियों के संग से संसार के कीचड़ की ओर यदि प्रवृत्त हो गया तो अनर्थ हो जाएगा।

रुके हुए गुरुदेव को गंभीर देख श्री मानदेवमुनि ने ध्यान लगाया और जैनाचार्यश्री के मन की बात का आभास कर लिया। तत्काल निर्णय किया तथा गुरुदेव के चरणों में पहुंचकर कहा-'गुरुदेव! आचार्यपद ग्रहण करने के इस अलभ्य अवसर पर मुझे आजीवन आयंबिल तप करने का नियम दीजिए।'

जैनाचार्यश्री, शिष्य के ज्ञान ध्यान चमत्कार को समझ गये। उनने हाथ जोड़कर खड़े नूतन आचार्य रूपी शिष्य को आजीवन आयंबिल व्रत का पच्चक्खाण दे दिया।

भक्तों की भीड़ गगनभेदी जय-जयकार कर उठी।

\- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	संगीत शाश्वत	11
2.	निराकुल जीवन का रहस्य (प्रवचन-3) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	12
3.	गणधरवाद (लेखांक-26) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	15
4.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-26)	17
5.	प्रश्नोत्तरी	20
6.	पेपराल में भव्य ऐतिहासिक शानदार चातुर्मास प्रवेश	21
7.	पेपराल चातुर्मास गीत (मुनिराजश्री प्रशमसेन विजयजी म.)	45
8.	वर्ग पहेली-45 (साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)	47
9.	णमोकार-जीवन के विकास का साधन (डॉ. शेखरचन्द्र जैन)	48
10.	गति सुधरी-गति सुधरी (विमल कुमार चौरड़िया, पूर्व सांसद)	52
11.	अन्यत्व भावना (2) (साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)	54
12.	दोहरेपन का त्याग करें (साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.)	56
13.	प्रभावक आचार्य पूज्यश्री विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. (साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.)	58
14.	ईर्ष्या का कटु फल (आचार्यश्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	60
15.	गुरु भक्ति गीत (साध्वी रूचिदर्शनाश्रीजी म.)	61
16.	क्या हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग हैं?	62
17.	नवग्रह शांति दिलवाते हैं ''पंचपरमेष्ठि'' (शांतिलाल सगरावत, मंदसौर)	65
18.	नवकार एवं पच्चक्खाण करने से लाभ (संकलन-विनयकुमार छिपानी)	67
19.	आत्मिक शुद्धि का पर्व पर्युषण (अचलचन्द जैन, सायला)	68
20.	सम्यक्त्व गुण को अलंकृत करने वाले-पाँच आभूषण (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	70
21.	मनुष्य स्वयं ही मित्र और शत्रु (ओंकारसिंह त्यागी, अलवर)	71
22.	कुमकुम सने पगलिये	96
23.	श्रीसंघ सौरभ	104
24.	परिषद् प्रांगण से	117
25.	जैन विश्व	136
26.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	137-138

श्री सिद्धाचल तीर्थ स्तुति

शत्रुंजय मण्डण आदि जिणिन्द, भेटतां काटे दुरगति फंद। शिव संपत्ति पावे भवि भली, सुखशाता तस सेजे मली।।1।। सकल तीरथ में जाणो सार। श्री शत्रुञ्जय ने गिरनार। जे भवि भेटे, मन संवरी, तेह ने परणे शिवसुंदरी।।2।। सकल सिद्धान्तमां एक गिरिराज, भाषे सूरिराजेंद्र महाराज। 'धनमुनि' धारे निश्चय करी, जग यश की रति तस विस्तरी।।3।।

गहुंली

(राह -निहाल)

आदि जिणंद अरजी सुणोजी कांई, मुज मननी महाराज, मुज मननी महाराज।।अ.टेर।। निजगुण आतम माहराजी कांई, हूं भूल्यो विषयने-हूं ने संग-हिवे तुम चरणे आवियोजी कांई निजगुण दाखो नि.रंग.आदिजिणंद अरजी सुणोजी कांई।।1।। निरगुण जाणी नवी छोडीयेजी कांई, तुम छो दीन तु-दयाल, साँचो बिरुद संभालियेजी साँ.कांई, मुज पीडा दो मु.टाल.आदिजिणंद अरजी सुणोजी कांई।।2।। तुंहिज शत्तुंजय अधिपतिजी कांई, तुहिज धुलेवे तुं.धु.स्वाम। तुंहिज आबूगढ़ धणीजी तुं-कांई, तुंहिज कोरटे-तुं-को.धाम. आदिजिणंद अरजी सुणोजी कांई।।3।। दरसण दुरलभ ताहरोजी कांई, ते तो मुज पर ते.तो.तीत। पिण चारित्रनी संपदाजी पि.कांई, दीजिये सुविहित दी.नीत.आदिजिणंद अरजी सुणोजी कांई।।4।। संवत रस पण नव शशिजी कांई, मृगसिरवदिनी मृ.दूज। सूरिराजेन्द्रे वंदियाजी सू.कांई, पामी अनुभव पा. चीज. आदिजिणंद अरजी सुणोजी कांई।।5।।

(राह-सलूणा)

ऋषभजिणंदने वंदिये रे, बाकरा नयर श्रीकार सलूणा। वनितानगरी राजीयो रे, मोरादेवी मात मल्हार स.।।ऋ.1।। सुंदर मूरति वन वसी रे, परमातम परसिद्ध सलूणा। आदि धरम करता प्रभु रे, पाम्या आतम रिद्ध स.।ऋ.2। नाभिरायकुल चंदलो रे, मुनिजन मन आधार सलूणा। सेवाथी संपत्ति मिले रे, पामे भवनो पार स. ।ऋ.3। सेलडीरस श्रेयांसने रे, दीनो शिवपुर राज सलूणा। नमी विनमी रिद्धि लहि रे, विद्याधर सिरताज-स. ।ऋ.4। अवसरे मुझने तारज्यो रे, सूरिराजेन्द्र जिनचंद स.। संवत रस-इषु नव शशी रे, माघसुदि सुतिथि नंद स.।ऋ.5।

प्रवचन लेखांक 3

निराकुल जीवन का रहस्य

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

धर्म और समाज

धर्म मानव की एक प्रवृत्ति है। मनुष्य ही एकमात्र धार्मिक प्राणी है। जिस प्रकार वह बुद्धि के कारण पशुओं से भिन्न है, उसी तरह धर्म की प्रवृत्ति के आधार पर भी अन्य जीवों से पृथक माना जाता है। समय-समय पर मानव ने अपनी विभिन्न प्रवृत्तियों 'जिज्ञासा, भय, दुख' से निर्वाण प्राप्त करना आदि को जिस शक्ति से तृप्त करना चाहिए, उसकी खोज का नाम धर्म है।

जैन धर्म और उसके मूल तत्व - जिस प्रकार नभ मंडल में करोड़ों तारे नजर आते हैं, किन्तु उनमें ध्रुव तारे का अपना विशिष्ट स्थान है। उसी प्रकार स्थिरता व विशिष्टता के कारण जैन धर्म प्रकाशमान है।

जैन धर्म के प्रत्येक आचार-विचार का केन्द्रबिन्दु आत्मा है। उसका उद्देश्य अनन्त मुक्ति लाभ करना है। जैन धर्म प्रत्येक आत्मा में ईश्वरीय गुणों की सत्ता स्वीकार करता है। परम सुखमय मुक्ति का जो पथ व जैन धर्म ने निर्दिष्ट किया है, वह है, सम्यक्ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र। इनका समन्वय साधक को सदा के लिए मुक्ति में प्रतिष्ठित कर देता है।

जैन धर्म के नौ मूलतत्व हैं... जीव, अजीव, पाप, पुण्य, बंध, मोक्ष, आस्रव, संवर, निर्जरा।

जैन धर्म इन्हीं तत्वों के आधार पर जीव के उत्थान-पतन, सुख-दुख और जन्म-मरण आदि समस्याओं को हल करता है।

वर्तमान जैन समाज और उससे जैन धर्म को क्षति-किसी भी समाज की सभ्यता का स्वरूप इस बात पर आधारित है कि धर्म के प्रति उसकी क्या धारणा है। और साथ ही उसकी प्रवृत्ति क्या है?

कई दार्शनिकों का मत है कि वह महान भाग्यशाली है, जो जैन जाति के कुल में पैदा हुआ, क्योंकि उसके पास धार्मिक सिद्धान्तों की बहुमूल्य धरोहर है। किन्तु आज हम अपने धर्म की महानता को समझ नहीं पा रहे हैं। बाह्याडंबरों में फंस चुके हैं।

व्रतों का महत्त्व-गंतव्य स्थान पर सुरक्षित पहुँचने के लिए और भटकाव से बचने के लिए तात्कालिक अवरोध आवश्यक होता है। हाथी पर सवार होते वक्त महावत अपने हाथ में अंकुश रखता है। घोड़े पर सवारी करते वक्त हाथ में लगाम पकड़ी जाती है। किसी भी वाहन को चलाने से पहले उसके ब्रेक्स जाँचे जाते हैं। अंकुश, लगाम या अवरोधक का अपना अलग महत्व होता है। व्रत

का भी मनुष्य जीवन में इतना ही महत्व है। जीवन-यात्रा में किसी प्रकार की दुर्घटना ना हो, इसलिए व्रतों की अत्यन्त आवश्यकता है। व्रत के पालन से आराधक अन्तिम देवलोक तक उत्पन्न हो सकता है।

आराधना का महत्त्व-आराधना जीवन को सफल बनाती है। आराधना के त्रिकोण में एक ओर आराध्य है, दूसरी ओर आराधना है और तीसरी ओर आराधक है। आराधक आराध्य तक पहुंचना चाहता है। वहाँ पहुँचने का माध्यम आराधना ही है। आराधक आराधना के द्वारा ही आराध्य को प्राप्त कर सकता है। इसलिए अपनी शक्ति के अनुसार स्वयं को आराधना से जोड़ लेना चाहिए। आराधना से जुड़े बिना आराध्य प्राप्त नहीं हो सकते। आराधना से जुड़ने के साथ ही उसके प्रति दृढ़ विश्वास भी रखना चाहिए। विश्वास नहीं होगा तो आराधना से जुड़ा नहीं जायेगा। विश्वास अनमोल औषधि है। विश्वास जीवन को स्थिरता प्रदान करता है। आराधना में स्वयं को स्थिर चित्त रखना चाहिए। अस्थिर व्यक्ति चूक जाता है, स्थिर व्यक्ति के चूकने की संभावना नहीं होती।

भार छोड़ना है-आराधना से जीवन का भार हल्का होता है और राहत प्राप्त होती है। भार को ढोते फिरेंगे, तो भार छूटने वाला नहीं है। छोड़ेंगे तो अवश्य छूट जायेगा। अपनी परेशानियाँ हमें खुद दूर करनी हैं। पकड़ कर रखने से चीजें नहीं छूटती, छोड़ने से छूट जाती हैं। खंबे को स्वयं पकड़ कर यह कहना कि खंबा मुझसे नहीं छूट रहा है, गलत है। खंभा छोड़ दो, वह छूट जाएगा। असल में परिग्रह ने हमें नहीं बांध रखा है। हमने ही परिग्रह अपने साथ बाँध रखा है। अतः उसे छोड़ दें, तो वह अवश्य ही छूट जाएगा।

बन्दर की मुसीबत-एक जगह एक सुराही में चने भरे हुए थे। एक बन्दर वहाँ आया। चने देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। चने लेने के लिए उसने सुराही में हाथ डाला और मुट्ठी में चने भर लिए। फिर उसने अपना हाथ बाहर निकालने की कोशिश की। सुराही का मुँह छोटा था और बन्दर की मुट्ठी भरी हुई थी, अतः हाथ बाहर नहीं निकला।

अब वह जोर-जोर से आवाज करने लगा। उसकी आवाज सुनकर बहुत से बन्दर उसके पास आ गये। उनमें से एक बन्दर कुछ समझदार था। हाथ न निकलने का रहस्य उसकी समझ में आ गया। उसने इशारे से उस बन्दर को मुट्ठी खोलने के लिए समझाया। उस बन्दर ने मुट्ठी खोल दी तो उसका हाथ सुराही से बाहर आ गया।

आराधना निष्फल नहीं-कहने का मतलब इतना ही है कि छोड़ने से छूट जाता है। आराधना सांसारिक दुःखों से छुड़ाती है और अन्त में मोक्ष दिलाती है। की हुई धर्म आराधना कभी निष्फल नहीं होती। समय आने पर वह अपना फल देती ही है। गुर्जर नरेश कुमारपाल ने अपने पूर्व जन्म में जो आराधना की थी, उसका फल उन्हें उनके वर्तमान जन्म में मिला। वर्तमान जन्म में भी उन्होंने सम्यक्त्व मूल बारह व्रत स्वीकार कर पुनः आराधना की और अपने भविष्य का मार्ग उज्जवल किया। उनका जीव अनागत चौबीसी में प्रथम तीर्थंकर के प्रथम गणधर का पद प्राप्त करेगा और वे मोक्ष प्राप्त करेंगे।

नरवीर का उत्थान–कुमारपाल अपने पूर्व जन्म में तेलंग देश की एक शिला नगरी में मनुष्य रूप में रहते थे। उस समय उनका नाम नरवीर था। नरवीर लूट–मार और चोरी–डकैती करके अपना गुजारा करता था। एक बार पुण्योदय से उसे आचार्यश्री यशोभद्रसूरिजी महाराज दिखाई दिए। वह महाराज का भक्त बन गया। महाराज के उपदेश से उसका जीवन बदल गया। हिंसा, चोरी, डकैती आदि बुरे काम उसने छोड़ दिये। अब वह निर्दोष जीवन जीने लगा। गुजारे के लिए उसने ओढर सेठ के यहाँ नौकरी कर ली।

ओढर सेठ धर्मात्मा थे। सामायिक, प्रतिक्रमण, पूजन आदि अनुष्ठानों में वे अपने समय का सदुपयोग करते थे। स्वामी के आचरण का प्रभाव सेवक पर भी पड़ता है। नरवीर भी मंदिर जाकर भक्ति करने लगा। धर्म की बातें उसे प्रिय लगने लगीं। वह अपना काम ईमानदारी से करता था, अतः सेठ भी उससे प्रसन्न रहते थे।

एक बार पर्युषण पर्व के अवसर पर सेठ पूजा करने जा रहे थे। उन्होंने नरवीर को भी पूजन सामग्री दी और उसे भगवान की पूजा करने की अनुमति दी। नरवीर संस्कारी था। साधु मुनिराज के संपर्क में आया हुआ था। उसने सोचा–सेठजी ने मुझे भगवान की पूजा करने के लिए कहा है और यह पूजन सामग्री मुझे दी है। अब पूजा तो मुझे करनी है, पर यह पूजन द्रव्य मेरा नहीं है। यह पर द्रव्य है। इससे मुझे इतना लाभ नहीं मिलेगा, जितना अपने द्रव्य से पूजा करने से मिलता है। अतः पूजा तो अपने द्रव्य से ही करनी चाहिए।

(क्रमशः)

प्रकृति सबकी साथी

(शुभम पंवार जैन)

एक चिड़ियाँ बैठी डाल पर,
घौंसले में पंख पसारकर
देखने लगी अपने सुंदर घर को
और कहने लगी उस नभ को
कोई पीड़ा ना देना मेरे घर को
आने वाला है एक मेहमान भौर को
मैं तुमसे ये प्रार्थना करती हूँ
आने वाले मेहमान के जीवन
की कामना करती हूँ।

तभी तीव्र पवन चली
वन में मच गयी खलबली
डर कर वो चिड़ियाँ बोली
कुछ तो रहम करो मुझ पर
आने दो मेरे बच्चे को धरा पर
सुनकर उसकी पुकार
पवन लौट गई विपरीत पथ पर।

इससे एक बात हमें समझ आती है
ये प्रकृति सबकी साथी है
हमें इसे प्रदूषण से बचाना है
हर व्यक्ति तक संदेश यह पहुँचाना है।

जल बचाओ, पृथ्वी बचाओ,
वृक्ष लगाओ
शुद्ध वातावरण में जियो और
औरों का भी जीवन बचाओ।

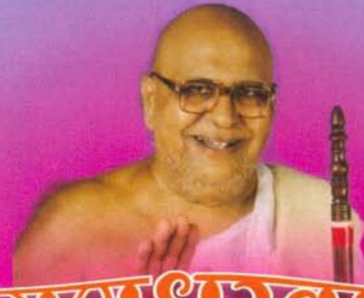

गणधरवाद

प्रवचनकार
सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महावीर– कदापि नहीं। झूठ बोलने के कारण हैं–भय, राग, द्वेष, मोह आदि। इनके वश होकर मनुष्य झूठ अथवा हिंसक वचन बोलता है। लेकिन उनका मुझमें सर्वथा अभाव है। अतः मेरे वचन पूर्णतया सत्य और अहिंसक हैं। इसीलिए मेरे वचन में विश्वास करके तुम्हें जीव का अस्तित्व मानना चाहिये।

इन्द्रभूति–परन्तु यह कैसे जानूँ कि आप सर्वज्ञ हैं?

महावीर–यदि मैं सर्वज्ञ नहीं होता; तो तुम्हारे संशयों का निवारण कैसे करता? तुम्हारे संशयों का निवारण कर रहा हूँ, यही मेरे सर्वज्ञ होने का प्रमाण है। तुम्हें जिस किसी भी विषय में सन्देह हो, जानना हो; उसे प्रस्तुत कर प्रतीति कर लो कि मैं सर्व संशयों का निवारण करने वाला सर्वज्ञ हूँ या नहीं।

यदि मैं सर्वज्ञ नहीं होता; तो तुम्हारे संशयों का निवारण कैसे करता? तुम्हारे संशयों का निवारण कर रहा हूँ, यही मेरे सर्वज्ञ होने का प्रमाण है।

शरीरान्तर में भी आत्मा है

इन्द्रभूति–स्व-शरीर में आत्मा का आंशिक प्रत्यक्ष मानने में अब मुझे कोई आपत्ति नहीं है; किन्तु यह कैसे जाना समझा जाये कि दूसरे के शरीर में भी आत्मा है।

महावीर – स्व की तरह दूसरों के शरीर में भी विज्ञानमय आत्मा के अस्तित्व को अनुमान द्वारा जाना जा सकता है कि स्व की तरह दूसरों को भी इष्ट में प्रवृत्ति और अनिष्ट से निवृत्ति दृष्टिगोचर होने से उनमें भी आत्मा है। यदि उनके शरीर में आत्मा न हो; तो घटादि की तरह इष्टानिष्ट में प्रवृत्ति-निवृत्ति संभव नहीं है। किन्तु यह प्रत्यक्ष देखते हैं। अतः अन्य शरीर में भी आत्मा का अस्तित्व मानना चाहिए।

आत्मसाधक अनुमान

इन्द्रभूति–आर्य! आपके तर्क, युक्ति और कथन से आत्मा के अस्तित्व

की प्रतीति होती है, लेकिन प्रत्यक्ष की तरह अनुमान आदि प्रमाणों द्वारा भी जब तक उसकी सिद्धि न हो जाये; तब तक निश्चित धारणा बना लेना संभव नहीं है।

महावीर – आयुष्मान! प्रत्यक्ष के लिए प्रमाणान्तरों की आवश्यकता नहीं रहती– प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्? फिर भी तुम्हारी विसंगतियों का निराकरण करने के लिए अनुमान प्रमाण से भी आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं।

सर्वप्रथम मैं तुम्हारे उस आत्मबाधक अनुमान के दोषों का दिग्दर्शन कराता हूँ जिससे तुमने माना है कि अहं प्रत्यय आदि से आत्मा के प्रत्यक्ष होने पर भी सद्भाव साधक प्रत्यक्ष आदि पाँचों प्रमाणों की प्रवृत्ति नहीं होने से आत्मा का अस्तित्व सिद्ध नहीं है। उक्त अनुमान में तुम्हारा पक्ष प्रत्यक्ष बाधित होने से पक्षाभास–मिथ्या पक्ष है। जैसे कि शब्द के श्रवण द्वारा प्रत्यक्ष होने पर भी उसे अश्राव्य (कर्ण ग्राह्य नहीं) मानना प्रत्यक्ष बाधित होने से पक्षाभास है। 'आत्मा नहीं है' यह तुम्हारा पक्ष अनुमान बाधित भी है। जैसे कि मीमांसक का 'शब्द नित्य है' पक्ष नैयायिक आदि के शब्द की अनित्यता साधक अनुमान द्वारा बाधित हो जाता है, इसी प्रकार 'मैं संशयकर्ता हूँ' इस बात को स्वीकार करने के अनन्तर 'आत्मा नहीं है' अर्थात् 'मैं नहीं हूँ'। मैं का निषेध करते हो, तो यह 'मैं' के निषेध की बात पूर्व अभ्युपगम स्वीकार से ही बाधित हो जाती है। जैसे कि सांख्य का आत्मा को अकर्ता, नित्य, चैतन्यरूप स्वीकार करने के पश्चात् उसे कर्ता, अनित्य, अचेत न कहना स्वाभ्युपगम से बाधित है। सामान्यजन भी जब आत्मा के अस्तित्व को मानते हैं; तब तुम्हारा 'आत्मा नहीं है' यह कहना लोक विरुद्ध ही कहा जायेगा। जैसे कि चन्द्रमा को अचन्द्रमा या 'चन्द्रमा नहीं है', कहना तथा 'मेरी माता वन्ध्या है ' जैसे वचन प्रयोग की तरह 'मैं आत्मा नहीं हूँ' अर्थात् 'मैं नहीं हूँ' कहना स्व वचन बाधित भी है।

आयुष्मान! प्रत्यक्ष के लिए प्रमाणान्तरों की आवश्यकता नहीं रहती– प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्?

इस प्रकार तुम्हारा पक्ष पक्षाभास–मिथ्या पक्ष है तथा भाव ग्राहक पाँचों प्रमाणों के द्वारा ग्रहण नहीं होने के हेतु से भी पक्ष का साधक नहीं होने से असिद्ध हो जायेगा और असिद्ध हेतु हेत्वाभास कहलाने से उसके द्वारा साध्य की सिद्धि नहीं होगी।

तुम्हारा हेतु व्यभिचारी भी है। जैसे कि हिमालय के परिणाम की सिद्धि तथा भूत, पिशाच आदि के बारे में अपने किसी भी प्रमाण की प्रवृत्ति नहीं होने पर भी हिमालय का परिमाण और भूत पिशाच आदि का अभाव सिद्ध नहीं होता; वैसे ही आत्मा के लिए प्रत्यक्ष आदि किसी भी प्रमाण की प्रवृत्ति नहीं होने पर उसका अभाव सिद्ध नहीं होने से हेतु व्यभिचारी है।

(क्रमशः)

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्रीमद्
विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

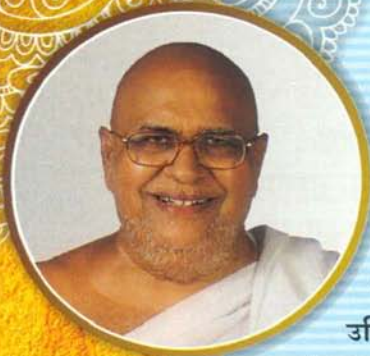

स्वर्णप्रभा उस महिला की बात सुनकर सोच में पड़ गई। वह इतना तो समझ गई कि महिला की पुत्रवधु लाड़-प्यार से पली बिगड़ी युवती है। उसे बाल्यावस्था में सही मार्गदर्शन नहीं मिला। उलटे उसके माता-पिता उसकी उचित-अनुचित सभी प्रकार की बातों को मानकर पूरा करते रहे होंगे। उसका परिणाम आज इस रूप में आया।

'आप किस सोच में खो गईं? क्या आप मेरी सहायता नहीं करेंगी?' स्वर्णप्रभा को विचारों में डूबा देखकर आगन्तुक महिला ने पूछा।

'आं....ओह...! नहीं, आप ऐसा न सोचें। मैं तो आपके विषय में ही विचार कर रही थी। मुझसे जितना बनेगा, मैं आपकी सहायता करूँगी।' स्वर्णप्रभा ने कहा। आगन्तुक महिला ने स्वर्णप्रभा के इस कथन से संतोष का अनुभव किया। इसके पश्चात् स्वर्णप्रभा ने उस महिला का पता पूछा। उसकी पुत्रवधु के माता-पिता का पता पूछा और फिर उसे आश्वस्त करते हुए कहा- 'मैं शीघ्र ही आपकी पुत्रवधु के माता-पिता से मिलकर उनसे कुछ जानकारी प्राप्त करूंगी, उसके पश्चात् आपसे आकर मिलूंगी।'

जैसे अभी तक समय व्यतीत किया, वैसे ही कुछ दिन और बिताएं। इस अवधि में धैर्य रखने की आवश्यकता है।'

' अगर आपने मेरी समस्या का समाधान कर दिया तो मैं ही क्या, मेरा पूरा परिवार आपका आजीवन ऋणी रहेगा।' आगंतुक महिला ने उठते हुए कहा।

'अरे अभी तो मैंने आपकी पुत्रवधु को देखा तक नहीं और आप ऋणी रहने जैसी बातें कर रही हैं। मैं स्वयं चाहती हूँ कि आपका परिवार दिन-रात की कलह से मुक्त हो जावे। यदि इसमें मैं कुछ प्रभावशाली कार्य कर सकी तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है। इसमें ऋणी रहने अथवा उपकार मानने जैसी कोई बात नहीं है। आप निश्चिंत होकर जाइये।

जैसे अभी तक समय व्यतीत किया, वैसे ही कुछ दिन और बिताएं। इस अवधि में धैर्य रखने की आवश्यकता है।' स्वर्णप्रभा ने कहा। आगन्तुक महिला स्वर्णप्रभा को धन्यवाद देकर चली गई।

स्वर्णप्रभा अतिथि कक्ष में बैठकर ही इस समस्या पर विचार करने लगी। वह आँखें बन्द किए अपने विचारों में खोई हुई थी। इसी समय नगर श्रेष्ठी ने अतिथि कक्ष में प्रवेश किया। स्वर्णप्रभा को वैचारिक मुद्रा में बैठा देखकर उसने कहा-'क्या नींद आ रही है अथवा किन्हीं गहरे विचारों में खोई हुई हो?'

'ऐसी क्या समस्या है, उस महिला की, जो अपने परिवार वालों को छोड़कर समाधान के लिए तुम्हारे पास चली आई।'

'ओह..! आप आ गए। कब आए आप? मुझे तो आपकी पदचाप भी सुनाई नहीं दी।' उठते हुए स्वर्णप्रभा ने कहा।

'तुम तो विचारों के सागर में डूबी हुई थीं। पदचाप कैसे सुनाई देती? यह तो बताओ कि ऐसी क्या बात हो गई कि तुम इतने गहरे सोच में खो गई थी।' नगर श्रेष्ठी ने पूछा।

'स्वामी! आज एक महिला आई थी। उसने अपने परिवार की समस्या बताकर उसका समाधान करने का आग्रह किया। मैं उसी विषय पर सोच रही थी।' स्वर्णप्रभा ने कहा।

'ऐसी क्या समस्या है, उस महिला की, जो अपने परिवार वालों को छोड़कर समाधान के लिए तुम्हारे पास चली आई।' नगर श्रेष्ठी ने पूछा।

'उस परिवार की समस्या उनकी पुत्रवधु है। मुझे ऐसा लगता है कि वह पुत्रवधु मिथ्याज्ञान से पीड़ित है। परिवार के सभी सदस्य सरल एवं सीधे स्वभाव वाले हैं। वे लोकलाज से भी डरते हैं। इस कारण वे अपनी पुत्रवधु को कुछ भी नहीं कहते और जैसा वह चाहती है, वैसा ही सब करते चले आ रहे हैं। वह अत्यधिक लाड़-प्यार में पली लड़की लगती है। यहां 'करेला और नीम चढ़ा' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। ससुराल वाले तो उसे इसलिये कुछ कहते नहीं कि क्यों व्यर्थ की कलह उत्पन्न करें और वह समझती है कि वही सही है, उसका प्रभाव सब

स्वीकार करते हैं। विनय तो उसके पास है ही नहीं।' इतना कहकर स्वर्णप्रभा ने वह सब कुछ बता दिया जो उस महिला ने बताया था।

'वास्तव में समस्या गंभीर है, किन्तु अभी तक कोई ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं हुई है, जिसका कोई समाधान न हो । सबसे पहले तो उसकी बाल्यावस्था का अध्ययन करना होगा। वास्तविक कारण, वहीं से ज्ञात हो सकेगा। उसके पश्चात् समाधान के लिए उपाय खोजे जा सकते हैं।' नगर श्रेष्ठी ने कहा।

'आपका परामर्श समीचीन है। भोजन का समय हो गया है। पहले भोजन कर लीजिए। इस समस्या के निदान के लिए बाद में विचार-विमर्श कर लिया जावेगा।' स्वर्णप्रभा ने कहा।

दो चार दिन इस संबंध में दोनों में कोई बात नहीं हो पाई। इसी बीच संयोग कुछ ऐसा बना कि नगर श्रेष्ठी को आसपुर से एक श्रेष्ठी का बुलावा आया। उस महिला की पुत्रवधु के माता-पिता भी आसपुर के ही निवासी थे। नगर श्रेष्ठी ने यह समाचार स्वर्णप्रभा को सुनाया और कहा- 'यदि तुम चलना चाहो तो तैयारी कर लो। अवसर अच्छा है। मैं अपना काम कर लूंगा और तुम अपनी खोजबीन पूरी कर लेना।'

'मैं स्वयं भी ऐसे ही किसी अवसर की तलाश में थी। मैं उस महिला के समधी के घर सीधे जाकर जानकारी लेना उचित नहीं समझती। अब यह बताइये कि चलना कब है?' स्वर्णप्रभा ने कहा।

'वहाँ तो शीघ्र ही बुलाया है। बाहर के भी कुछ व्यापारी आने वाले हैं। उनके साथ कुछ सौदा तय करना है। हम आज से चौथे दिन यहाँ से प्रस्थान कर देंगे। तब तक तुम अपनी तैयारी कर लो।' नगर श्रेष्ठी ने कार्यक्रम बता दिया।

'ठीक है, मैं तैयारी कर लूंगी। आप निश्चिंत होकर अपना सौदा निपटा लें।' स्वर्णप्रभा ने कहा।

आसपुर अयोध्या से अधिक दूर नहीं था। मार्ग भी निष्कंटक ही था। निर्धारित दिन नगर श्रेष्ठी और स्वर्णप्रभा ने अपने कुछ सेवक-सेविकाओं और कुछ सुरक्षा सैनिकों के साथ अयोध्या से आसपुर के लिए प्रस्थान कर दिया।

(क्रमशः)...

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

वाणव्यंतर देवों के कितने भेद हैं?

प्र. तिर्यञ्च किसे कहते हैं?

उ. तिर्यञ्च गति नाम कर्म का उदय जिन प्राणियों को हो रहा है, उन्हें तिर्यञ्च कहते हैं।

प्र. क्या सभी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय होते हैं?

उ. नहीं। एकन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तक तिर्यञ्च होते हैं।

प्र. मनुष्य किसे कहते हैं?

उ. मनुष्य गति नाम कर्म वाले प्राणी को मनुष्य कहते हैं।

प्र. मनुष्य के कितने भेद हैं?

उ. 303 भेद हैं। 15 कर्मभूमिज, 30 अकर्मभूमिज, 56 अन्तरद्वीपज, तीनों मिलाकर 101 पर्याप्त और अपर्याप्त के भेद से 202, समूर्च्छिम 101 सब मिलाकर 303 भेद हुए।

प्र. मनुष्य कहाँ पैदा होते हैं?

उ. अढ़ाई द्वीप में ही मनुष्य पैदा होते हैं। इसलिए उसे मनुष्य क्षेत्र भी कहते हैं।

प्र. देव किसे कहते हैं?

उ. जिसको देवगति नाम कर्म का उदय हो उसको देव कहते हैं।

प्र. देवों के कितने भेद हैं?

उ. देवों के चार भेद हैं-1.भवनपति, 2.वाणव्यन्तर, 3. ज्योतिषी, और 4. वैमानिक।

प्र. भवनपति के कितने भेद हैं?

उ. भवनपति के दस भेद हैं-1.असुरकुमार, 2. नागकुमार, 3. सुवर्णकुमार, 4. विद्युतकुमार, 5. अग्नि नकुमार, 6. द्वीपकुमार, 7. उदधिकुमार, 8. दिशकुमार, 9. वायुकुमार (पवनकुमार), 10. थणित (स्तनित) कुमार।

प्र. वाणव्यंतर देवों के कितने भेद हैं?

उ. वाणव्यंतर देवों के आठ भेद हैं- 1.पिशाच, 2. भूत, 3. जक्ष (यक्ष), 4. राक्षस, 5. किन्नर, 6. किम्पुरुष, 7. महोरग, 8. गन्धर्व।

प्र. वैमानिक देवों के कितने भेद हैं?

उ. वैमानिक देवों के दो भेद हैं- 1. कल्पोपपन्त और 2. कल्पातीत।

प्र. कल्पोपपन्न किसे कहते हैं?

उ.जहाँ इन्द्र सामानिक त्रायस्त्रिंश आदि छोटे-बड़े का भेद है उन्हें कल्पोपपन्न कहते हैं।

युग प्रभावक राष्ट्रसंत, सुविशाल गच्छाधिपति,
जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का

पेपराल में भव्य ऐतिहासिक शानदार चातुर्मास प्रवेश

अपार जन मेदिनी, विशाल शोभायात्रा, विराट धर्मसभा

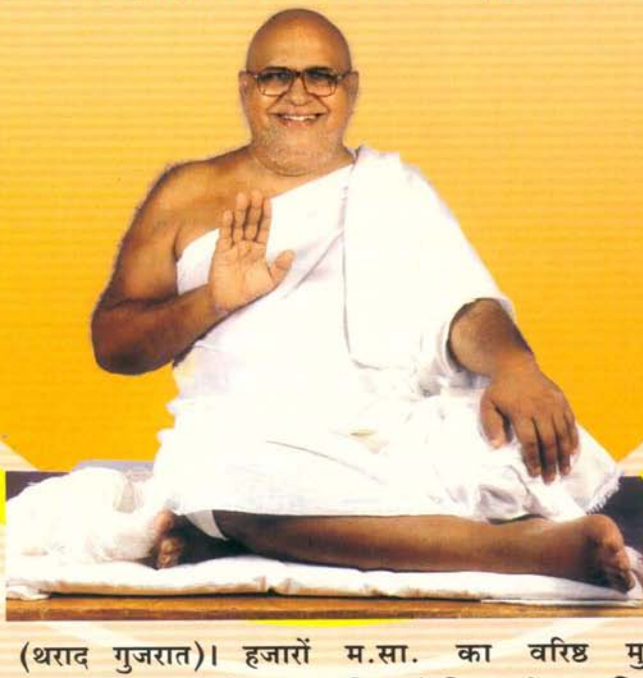

पेपराल (थराद गुजरात)। हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में अपूर्व उल्लास भावपूर्ण तथा आनन्दमय वातावरण के मध्य इस गुरु जन्म भूमि पर स्वयं गुरुदेव युग प्रभावक दीक्षा दानेश्वरी राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म. सहित सत्रह शिष्य श्रीमद् मुनियों एवं 80 साध्वीगणों के समुदाय के साथ शानदार स्वागत सह चातुर्मास प्रवेश गुरुवार दिनांक 22 जुलाई 2015 को हुआ। इस अवसर पर पूरे भारतवर्ष के कोने-कोने से

लगभग पांच हजार भक्तों सहित समीपस्थ ग्रामों के हजारों नागरिक, बड़ी संख्या में राजनेता व समाज के अग्रगण्य महानुभावों ने स्वयं को ऐतिहासिक जुलूस का अंग बनाया। जुलूस में नौ हाथी, नौ ऊँट, इक्कीस घोड़े, ग्यारह रथ, तीन बैंड, दो नर्तक दल तथा इक्यावन कलशधारी महिलाएं सम्मिलित थे। युवा दल नाचते-गाते चल रहे थे। एक रथ गाड़ी में गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि भरतपुर से लाई गई अखण्ड ज्योति विराजमाज थी। पूज्य गच्छाधिपति साहब के चरणों में वंदनार्थ उमड़ी भारी भीड़ को व्यवस्थित करने के लिए दस सुरक्षा जवानों तथा तरुण परिषद् के बीस स्वयंसेवकों ने व्यवस्था संभाल रखी थी। कोई दो किलोमीटर तक जुलूस फैला हुआ था। जुलूस को मार्ग तय करने में दो घंटे लगे।

जुलूस निकटस्थ जेतड़ा ग्राम के मुहाने से प्रारंभ हुआ जहाँ श्रीफल तथा अक्षत से सूरत (मारवाड़ में भूति) निवासी संघवी चुन्नीलाल बनेचंदजी वेद मेहता परिवार, श्री राजरतन ज्वेलर्स के श्री कमलराजजी, श्री मूलचंदजी, श्री ऋषभजी वेद मेहता ने अपने सम्पूर्ण परिवार के साथ गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चरणों में नतमस्तक होकर पहली गंहुली की। सामैया बोहेरा वाघजी भाई, खेमचंद भाई, दुधवा वाला परिवार ने चांदी के विशिष्ट कलश से अगवानी की। विशिष्ट कलश में पंच परमेष्ठि के पांच कलश भी अलग से पत्तियों पर जुड़े हुए थे। यह परिवार भी अभी सूरत में है। जुलूस में सम्मिलित नर्तक दल विशेष आकर्षण के केन्द्र थे। दो नर्तक दलों में एक आदिवासी तथा दूसरा ग्रामीण क्षेत्र का था। भटिण्डा के बैंड की ध्वनि चारों ओर गूंज रही थी। इसके साथ पंजाबी कलाकार पंजाबी नृत्य कर रहे थे। मार्ग के दोनों ओर ग्रामीणजनों की भीड़ बनी रही। जुलूस का पूरा मार्ग चमकीली झंडियों से सजा हुआ था तथा आकर्षक स्वागत द्वार बने हुए थे। आचार्य श्री भूपेन्द्रसूरि द्वार से जुलूस प्रारंभ हुआ और ठीक इसी समय हेलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा की गई। हेलिकॉप्टर से हवा में गच्छाधिपतिश्री के जय-जयकार के नारों के बीच पुष्पवर्षा होती रही और जुलूस आगे बढ़ता रहा। जुलूस में एक ओर जहाँ रथों पर त्रिस्तुतिक परम्परा के आचार्यगणों, उपाध्यायगणों, मुख्य मुनिगणों के चित्र विराजमान थे वहीं पूरे मार्ग पर भी इनकी स्मृति में सजे हुए द्वारों का निर्माण किया गया था। बड़े उल्लास के साथ जुलूस ने गच्छाधिपति श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि पेपराल में प्रवेश किया एवं उनके जन्मस्थल मूल गृह निवास को स्पर्श करता हुआ आगे बढ़ा। यहाँ से जुलूस प्रवचन स्थल पहुँचा। प्रवचन के लिए बनाए गए बड़े पाण्डाल को सुरूचिपूर्ण तरीके से सजाया गया था। विशाल मंच पर गच्छाधिपति श्रीजी कमल पुष्प के आकार में बने आसन पर विराजमान हुए। कमल पुष्प की पंखुड़ियां विद्युत संचालित थीं। आपके आगमन पर पंखुड़ियों ने

खिलकर हजारों श्रद्धालुओं को आपके दर्शन करवाए। आपके पास वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. थे। साथ ही मंच पर मुनिमंडल तथा साध्वी समुदाय विराजमान था। श्रद्धालुओं की इतनी उपस्थिति थी कि पांडाल छोटा पड़ गया। सैकड़ों लोगों को प्रवचन स्थल से बाहर खड़ा रहना पड़ा। आसमान साफ था तथा हल्की धूप सभी का उल्लास बढ़ा रही थी। चातुर्मास प्रवेश की पूर्व संध्या पर लगभग पौन घंटे जोरदार बारिश हुई। बारिश के संबंध में वहां के निवासियों का कथन था कि यह हमारे गुरुदेव का चमत्कारिक प्रभाव है, ऐसी वर्षा हमने कई वर्षों से नहीं देखी है।

धर्मसभा में श्री धनचन्द्रसूरि पाठशाला थराद की बालिकाओं ने गीत तथा नृत्य प्रस्तुत किए। सभा के विशिष्ट अतिथि श्रीसंघ के परामर्शदाता विधायक श्री चैतन्य काश्यप, विशिष्ट अतिथि विधायक श्री प्रभुभाई पटेल, परिषद् के राष्ट्रीय संरक्षक श्री शांतिलाल रामानी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, पेपराल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरपतभाई, संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल शामिल थे। पूरे देश से विभिन्न ट्रस्टों के ट्रस्टी, संघ परिषद् के पदाधिकारी एवं अग्रणीय समाजसेवी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम संगीतमय था। संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता ने संगीत दिया। मंच संचालन श्री विनोद आचार्य तथा श्री शांतिलाल गोखरू (बड़नगर) ने किया। धरू परिवार के भानजे उत्सव देसाई ने गीत गाकर सभी को झुमाया।

धर्मसभा में वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा., डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा., श्री विद्वरत्न विजयजी म., श्री चारित्ररत्न विजयजी म., श्री निपुणरत्न विजयजी म., श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म., श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म. के प्रवचन हुए। मंच पर मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म., श्री अपूर्वरत्न विजयजी म., श्री विनयरत्न विजयजी म., श्री प्रशमसेन विजयजी म., श्री विनीतरत्न विजयजी म., श्री तारकरत्न विजयजी म., श्री जिनागमरत्न विजयजी म., श्री पवित्ररत्न विजयजी म. आदि विराजमान थे। समाज के कर्णधार श्री चैतन्य काश्यप, श्री वाघजीभाई वोरा, श्री रमेशजी धरू आदि के भाषण हुए। परमपूज्य आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि चातुर्मास धार्मिक अनुष्ठान जाग्रत करने का पर्व है। चातुर्मास के दौरान जप, तप, स्वाध्याय के द्वारा आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। पेपराल चातुर्मास के विविध धार्मिक क्रियाओं के आयोजन आत्म उत्थान में सहायक होंगे। आपने फरमाया कि प.पू. गुरुदेव के आशीर्वाद से त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की शासन प्रभावना सम्पूर्ण देश में फैल चुकी है। गच्छ के साधु भगवंत, साध्वी भगवंत आत्म कल्याण के साथ विचरण करते हुए गच्छ परम्परा के सिद्धान्तों के संदेश

की पताका भी फहरा रहे हैं। राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि चातुर्मास काल के दौरान पर्युषण पर्व में युवाओं को धर्म की ओर प्रवृत्त करने के लिए चौसठ प्रहरी पौषध की आराधना करवाई जाएगी। समारोह में घोषणा की गई कि गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. को अभिधान राजेन्द्र कोष के पुनर्प्रकाशन तथा साहित्य की विपुल सेवा के लिए नैरोबी (कीनिया) के विश्व विद्यालय ने डॉक्टर ऑफ फिलोसफी की मानद उपाधि प्रदान की है। इसका प्रमाणपत्र जिला शिक्षा अधिकारी बनासकांठा ने भेंट किया। इस अवसर पर गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनन्दीबेन पटेल द्वारा भेजे गए संदेश तथा डॉक्टरेट प्रमाण पत्र का वाचन विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप ने किया। समारोह में शाश्वत धर्म के सम्पादक तथा श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने शाश्वत धर्म के बीजापुर प्रतिष्ठा विशेषांक का विमोचन करवाकर उसकी प्रति गच्छाधिपतिश्री को अर्पित की। विमोचन बीजापुर श्रीसंघ के प्रतिनिधिगणों अ.भा.श्रीसंघ व परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने किया।

कांबली ओढ़ाने का लाभ श्री हाकमचंद चंदाजी संघवी परिवार थराद ने लिया। गुरुपूजन श्री किशोरमलजी खिमावत (खिमेल) के परिवार ने की।

गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म. के सांसारिक भतीजे श्री रमेशचन्द्रभाई छोटालाल भाई धरू ने बताया कि गुरुदेव को पेपराल क्षेत्र के सभी ग्रामों में साक्षात् भगवान माना जाता है। आज के प्रवेश जुलूस में कम से कम पांच हजार ग्रामवासी पेपराल पहुँचे थे। ये गेला, सेदला, सासण, जेतड़ा, मोसिला तथा आसपास के ग्रामों के निवासी हैं। इन सभी की भोजन से भक्ति की गई। भोजन करवाने की व्यवस्था धरू परिवार के सदस्यों एवं परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने संभाली। सरपंच श्री जगधाभाई का भी अच्छा सहयोग रहा। ये सभी ग्रामीणजन जुलूस में शरीक थे। सभी में गुरुदेव के चातुर्मास से हर्ष है।

अपने भाषण में परिषद् के राष्ट्रीय परामर्शदाता विधायक श्री चैतन्य काश्यप ने कहा कि गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरिजी महाराज ने एक पाषाण का चयन किया तथा उसे परिमार्जित कर रत्न का रूप दिया। इस रत्न श्री जयन्तसेनसूरिजी ने समाज को नई ऊँचाई दी। आज आपकी गणना सम्पूर्ण समाज के प्रबुद्ध आचार्यों में अगुवाई के साथ होती है। इस चातुर्मास से आपश्री के सान्निध्य में नई ऊर्जा का उदय होगा। पेपराल में कल्याणकारी कार्यक्रमों का संचालन किया जाना चाहिए। इस हेतु आपने 51 लाख रु. प्रदान कर एक ट्रस्ट बनाने की घोषणा की।

अ.भा.त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने स्वागत भाषण में कहा कि यह ऐतिहासिक प्रसंग है। त्रिस्तुतिक समाज के किसी भी आचार्य का चातुर्मास आज तक उनकी जन्मभूमि में नहीं हुआ है।

आज विशाल समुदाय में इतने साधु-साध्वीगणों का आपके सान्निध्य में चातुर्मास होगा। मैं छोटा था तब पेपराल आया था। इस ग्राम पेपराल को पवित्र तीर्थभूमि के रूप में विकसित करने का श्रेय वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म. को है। उन्होंने ही गुरुदेव का यह चातुर्मास भी करवाया। अतएव वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म. का जितना वंदन करें वह कम है। श्री वाघजीभाई वोरा ने आह्वान किया कि हमें अनुशासन शब्द को जीवन में उतारना है। पूरा चातुर्मास संयम तथा आध्यात्मिक आराधना का प्रतीक होना चाहिए। आज का आयोजन अभूतपूर्व है।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने एक स्तवन का सस्वर पाठ किया। उन्होंने कहा कि हम सभी को उत्कृष्ट आराधना कर चातुर्मास को सफल बनाना है। पर्व पर्युषण पर युवा वर्ग के लिए चौंसठ प्रहरी पौषध का आयोजन होगा, इसमें अधिकाधिक आराधक भाग लें। दादा गुरुदेव की जन्मभूमि से यहाँ अखण्ड ज्योति लाई गई है, प्रत्येक गुरु भक्त को अपने हृदय में ज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित करना है।

प्रारंभ में स्व. श्री किशोरभाई खिमावत के सुपुत्र ने प्रथम गुरु वंदना की। इस अवसर पर दादा गुरुदेव के जन्मस्थल भरतपुर से प्रज्वलित अखंड ज्योति से प्रज्वलित अखण्ड ज्योति को एक विशेष रथ में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी जैन दंगवाड़ा (बड़नगर) लेकर आए। इसे वर्तमानाचार्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. को अर्पित किया। आपने वासक्षेप कर उसे पेपराल के गुरु मंदिर में संस्थापित किया।

ये हमारे साक्षात भगवान हैं- ग्रामीणजन

पत्रकार प्रतिनिधि ने भव्य शोभायात्रा में सम्मिलित ग्रामीणजनों से चर्चा की। उन्हें बहुत खुशी थी। ग्राम जेतड़ा के 36 वर्षीय प्रभुभाई राजपूत ने कहा कि आज का दृश्य देख दिल बाग-बाग हो गया। श्री जयंतबाबजी सा. की जन्मभूमि पेपराल है। कई वर्षों बाद वे यहाँ आये हैं। वे यहाँ के भगवान हैं। हम इनके दर्शन करना चाहते हैं तथा आज का दृश्य देखना चाहते हैं। इनके पधारने से पेपराल हमारे लिए स्वर्ग जैसा हो गया है। पेपराल निवासी 38 वर्षीय श्री गोरधनभाई, श्री चंदु सगनभाई व श्री ईशाभाई ने बताया कि भव्य आगवानी और जुलूस के दृश्य अच्छे लग रहे हैं। जुलूस में रथ, हाथी, घोड़े, विभिन्न प्रदेशों से आए बैंड देखकर मन प्रसन्न है। हमारे लिए यह खुशी का क्षण है जो पहली बार आया है। जेतड़ा निवासी 30 वर्षीय श्री भावतीभाई ने कहा कि मैं स्थानीय निवासी हूँ। आज बाबजी का आगमन हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हमें खुशी तथा आनन्द प्राप्त हो रहा है। हमने पहले भी कार्यक्रम देखे लेकिन इस बार और भी अच्छा लग रहा है। इस जुलूस का आनंद उठाने के लिए बीबी बच्चों के साथ आया हूँ।

पूज्य मुनिगणों तथा साध्वी मंडल को पूज्य गुरुदेवश्री ने दिया भरपूर आशीर्वाद

University of Swahili

This is to certify that

RASTRASANT ACHARYA SHRIMADVIJAY JAYANTSEN SURISHWARJI MAHARAJ SAHEB

having satisfied the requirements

for the award of the honorary degree of the

DOCTOR OF PHILOSOPHY

(THEOLOGY)

with all the honors, rights, and privileges thereto pertaining,
in recognition of distinguished contributions to

the field of Theology

Given at Nairobi, Kenya

on the 15th day of July 2015

Vice-Chancellor

Folio No. 003211

Director

नैरोबी (कीनिया) के विश्वविद्यालय द्वारा
पूज्य गुरुदेव को अर्पित डॉक्टर ऑफ फिलासफी उपाधि
का प्रमाण-पत्र

शोभायात्रा के साथ पेपराल में चातुर्मासिक प्रवेश

पहली गंहुली

दो मुनि पौत्र रत्न पू. गुरुदेव के साथ पेपराल प्रवेश पर

पू. गुरुदेव का अपने प्रथम शिष्य को निर्देशन

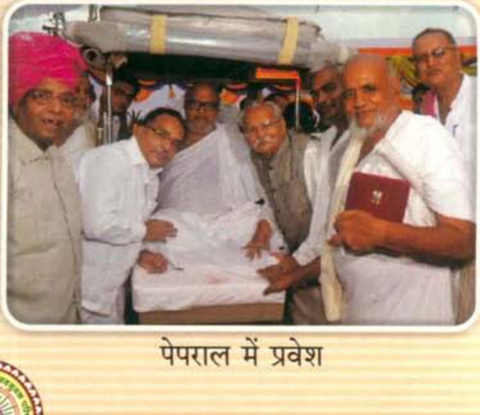

पेपराल में प्रवेश

पूज्य गुरुदेव की विभिन्न भावभंगिमाएं

गुरुदेव राष्ट्रसंत सा. को डॉक्टर ऑफ फिलोसफी की वि.वि. द्वारा उपाधि

डॉक्टर ऑफ फिलोसफी के प्रमाण-पत्र का
वाचन विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप ने किया

बनासकांठा की जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यमंत्री
के संदेश को प्रस्तुत करती हुईं

श्रद्धाभाव से ओढ़ाई काम्बली गुरुदेव को सबसे पहिले

काम्बली ओढ़ाते हुए लाभार्थी परिवार

स्व. श्री किशोरजी खिमावत के सुपुत्र श्री राहुलजी पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

पूज्य मुनिराजगणों ने दिये प्रवचन

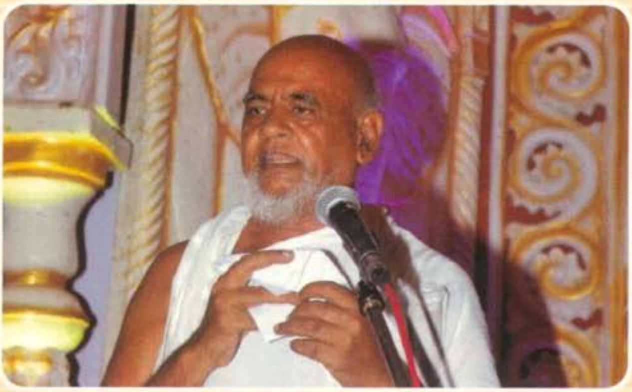

वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म. सा.

मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.

मुनिराज श्री अजितसेन विजयजी म.सा.

मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा.

शोभायात्रा की शोभा अवलोकन कर भक्त, दर्शक, ग्रामीणजन हुए मुग्ध

शोभायात्रा में धूम मचा दी ढोलक बैंड वादकों तथा

पूज्य मुनिराजों ने दिये प्रवचन तथा समाज प्रमुखों की सक्रियता

मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा.

श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा तथा
परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू
पू. गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा को मार्गदर्शन
प्रदान करते हुए पू. गुरुदेव

भरतपुर से लाई गई अखण्ड ज्योति का शोभायात्रा में भावभीना स्वागत

भरतपुर से लाई गई अखण्ड ज्योति पेपराल में संस्थापित की गई ।

भरतपुर से लाई गई अखण्ड ज्योति पर पू.गुरुदेव वासक्षेप करते हुए। निकट हैं लाभार्थी श्री राजेन्द्र दंगवाड़।

अखण्ड ज्योति के साथ वरिष्ठ मुनिराजश्री नित्यानंदजी म.सा.तथा संघ व परिषद के अग्रणी

भरतपुर से लाई गई अखण्ड ज्योति के साथ श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री राजेन्द्र जी देगवाड़ा आदि।

शोभायात्रा में कर रहे थे सभी जय जयकार

पू. मुनिगण तथा विधायक श्री चैतन्यजी काश्यप

धर्मसभा का आयोजन, भारी जनमेदिनी उमड़ी

मंच पर पू. गुरुदेवश्री तथा वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

धर्मसभा में उपस्थित विराट जनमेदिनी

धर्मसभा ने जमाया खूब सम्मान-भाव

दीप प्रज्ज्वलन

रथ में पू. गुरुदेव का चित्र। लाभार्थी को वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी का आशीर्वाद।

कमल के फूल की कृति से गुरुदेव श्री के दर्शन

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा का सम्मान

श्रीसंघ प्रमुखों ने दिये समाज को संदेश

विधायक श्री प्रभुभाई पटेल का उद्‌बोधन

श्री काश्यपजी का उद्‌बोधन

श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू

धर्मसभा में समाज के अग्रणी

शाश्वत धर्म के बीजापुर प्रतिष्ठा विशेषांक का भव्य विमोचन

बीजापुर प्रतिष्ठा विशेषांक का अवलोकन करते हुए
पू. गुरुदेव के साथ संपादक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा।

श्री नरपतभाई नागरदास द्वारा अनावरण

जन सैलाब उमड़ा, पेपराल स्वर्ग बन गया

शानदार समारोह की झलकियाँ

बहुमान

समारोह परिसर में शोभायात्रा

कार्यालय स्थल

ढोलों की थाप की गूंज

अभूतपूर्व चातुर्मास-प्रवेश की झलकियाँ

ढोल की गूंज

गजराज की झूमती चाल

राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के पेपराल चातुर्मास प्रवेश प्रसंग पर रचित गुरु भक्ति गीत

पेपराल चातुर्मास गीत

तर्ज– बाजे बाजे रे शहनाई.....

(मुनिराजश्री प्रशमसेन विजयजी म.)

सब मिल चालो गुरुभक्तों, पेपराल तीर्थ माय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे,
हर घर दीवड़ा प्रकटे, मंगलगीत गवाय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे.....

दीपाली के पर्व जैसा, भव्य है नजारा,
सकल संघ में छाया, आनंद अपारा,
गुरुवर के संग में हैं, श्रमण श्रमणी सुहाय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे.....

घड़ियां शुभ है पुण्य से, आयी मंगलकारी,
गुरु जन्मभूमि, तीर्थ भूमि है हमारी,
ऐसा लगता है मानो, स्वर्ग उतरकर आय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे.....

पिता स्वरूपचंद, माँ पार्वती को नमन,
ऐसे रत्न को दिया, जिसने है जनम,
धन्य ये धरती की खुशबु, चंदन सी महकाय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे.....

राजेन्द्र गुरु को है, दिल में बसाया,
जयन्तसेन गुरु गच्छ महाराया,
प्रशम की चाहत यही, पल पल गुरु पसाय रे,
चातुर्मास पधारे है, जयन्तसेन गुरुराय रे.....

चलो पेपराल

गुरुजन्म भूमि नो प्यार

जहाँ हैं जन्मे, मेरे गुरुवर
जयन्तसेन सूरि राज।
आओ मिलकर हम सब करें,
स्वागत गुरु जयन्त राज।
तेरे चरणें आया आज,
सम्पूर्ण श्रीसंघ तेरे द्वार।
जन्मभूमि में बरसेगा,
सारे जगत का प्यार।
पहला मौका है जीवन का,
जन्मभूमि पर चातुर्मास।
हमको भी देना गुरुवर,
तुम थोड़ा सा प्यार।
मेरे गुरुवर भोले भाले,
रखते हैं ये सबका मान।
करते विनय विनती बारंबार,
गुरुदेव आशीष देना हर बार।
चलो पेपराल, गुरुजन्म भूमि नो प्यार..
चलो पेपराल।

– निलेश लोढ़ा, रतलाम

पूज्य गुरुदेव श्री जयंतबाबजी सा.

के प्रताप से भीषण वर्षा-बाढ के बावजूद कोई जनहानि नहीं, पेपराल में व्यवस्था

पुनः जमी : नवकार मंत्र की आराधना प्रारंभ

पेपराल / सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं साध्वीजी मंडल पेपराल तीर्थ चातुर्मासार्थ बिराजित हैं। चातुर्मास के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के संशयों का निवारण करते हुए वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. ने कहा कि चातुर्मास के अन्तर्गत होने वाली विभिन्न आराधना, तपस्याएँ, धार्मिक अनुष्ठान नियमित रूप से होगी।

सिद्धि तप आराधना पेपराल में आरम्भ होगी यह तप अपने-अपने स्थान पर रहकर करें और अन्त में आखरी पारी की तपस्या पूर्णाहूति पर पारणा पेपराल में आकर कर सकते हैं। तपस्या का दौर आरम्भ हो चुका है, पेपराल में मुनि मंडल, साध्वीजी मंडल को तपस्याएँ चल रही है और सभी बड़ी तपस्याओं की ओर बढ़ रहे हैं।

विशेष नवकार महामंत्र आराधना प्रति वर्षानुसार उल्लास पूर्वक दिनांक 21 अगस्त से आरम्भ हुई। परम पूज्य गुरूदेव के दर्शनार्थ विभिन्न क्षेत्रों से गुरू भक्तगण निर्विघ्नता से आ रहे हैं। यह क्रम लगातार चल रहा है। पूर्व में आई बाढ़ एवं तूफान के कारण भारी पानी का आगमन पेपराल तीर्थ में हुआ लेकिन गुरुदेव के पुण्य प्रताप एवं आशीर्वाद से किसी भी प्रकार की जनहानि पेपराल क्षेत्र में नहीं हुई और यह क्षेत्र सभी प्रकार की महामारी एवं बीमारियों की संभावना से मुक्त है।

उपरोक्त जानकारी देते हुए मिडिया प्रभारी कौस्तुभ डाँगी ने बताया कि पूर्व में हुई भारी बरसात से निर्मित अवव्यस्था को सुधार पर लाने, विपरित परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में स्थानीय श्रीसंघ, श्री जयन्तसेन जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट, पेपराल एवं चातुर्मास समिति पेपराल के सभी पदाधिकारी गण तथा आसपास के श्रीसंघ, सूरत, अहमदाबाद, डीसा, थराद, लाखणी, जेतड़ा, वासणा, मुम्बई, आनंद, राजकोट, थरादरी के आसपास के गांव आदि से भी संघ के पदाधिकारी एवं नवयुवक परिषद, तरूण परिषद के सभी सदस्य अपनी अविस्मरणीय सेवाएँ दे रहे हैं।

वर्ग पहेली - 45

साध्वीश्री- श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.

1	2			3	4	
5			6			
		7			8	9
	10			11		
12				13		
			14			
15					16	

दाएं से बाएँ

1. अहंकाररूपी दोष को नाश करने के लिए कौनसा गुण होना चाहिए ? (3)

3. लोभ का विपरीत गुण कौनसा है ? (3½)

5. लिन होना, तल्लिन डुबना का पर्यायवाची ? (2)

6. पढ़ाई में नम्बर वन आने वाले को कहते है ? (2)

7. एक पंचेन्द्रिय प्राणी का नाम जो उरपरिसर्प है ? (2)

8. रक्त वाहिनी नली को कहते है ? (2)

10. भीत का आधार, जड़, मूल ? (2)

12. इंन्द्रियों का क्या करना चाहिए ? (3)

13. परमात्मा की अष्टप्रकारी पूजा में छठी पूजा कौनसी है ? (3)

14. एक निरोगी सब्जी का नाम ? (2)

15. अष्ट मंगल में से एक का नाम ? (2)

16. आदिनाथ भगवान के कितने पुत्र थे ? (1)

ऊपर से नीचे

1. देवता क्या ग्रहण नहीं कर सकते है ? (3)

2. झुका हुवा, नमा हुवा को क्या कहते है ? (2)

3. एकता

4. घर के बाहरी फाटक पर बांधेजाने वाला बन्दनवार ? (3)

6. घोड़े के पेर का निचला भाग, वह शब्द जो चलते समय घोड़े के पैर से उत्पन्न होता है ? (2)

7. नेमिनाथ भग. का जन्म और दिक्षा कल्याणक कौनसे माह में आता है ? (3)

9. माया रूपी कषाय का नाश करने के लिए कौनसा गुण होना चाहिए ? (4)

10. एक वृक्ष का नाम जिसकी कड़वाहट से बुखार भी चला जाता है ? (2)

11. बोलने में चतुर ? (3)

14. कर्म कितने होते हैं ? (2)

वर्ग पहेली - 44

1 रा	2 ज	गृ	3 ह		4 रा	5 म
6 जा	ल		7 व	र		हा
त्र		8 दा	न		9 र	वी
10 दे	11 श			12 म	ग	र
13 शी	व		14 स	ति		स्वा
		15 पा	प		16 अ	मी
17 जं	बू		18 ना	रा	ज	

णमोकार-जीवन के विकास का साधन

-डॉ.शेखरचन्द्र जैन

प्रत्येक धर्म में किसी न किसी मंत्र विशेष की महिमा और महत्ता होती है। हिन्दू धर्म में जो स्थान गायत्री मंत्र का है वैसा ही महत्त्वपूर्ण स्थान जैनधर्म में 'णमोकार मंत्र' का है। कई जगह यह 'नमोकार मंत्र' कहा गया है तो कहीं नमस्कार मंत्र भी। पर इसके विविध नामों के बावजूद इसके पदों के लेखन, उच्चारण व क्रम में कोई भिन्नता या पृथकत्व नहीं है, यही विशेषता है।

महामंत्र की शक्ति :

'णमोकार मंत्र' जैन धर्म के भगवान महावीर के पश्चात् सम्प्रदायों में भी कहीं विभाजित नहीं है। यह मंत्र की ही शक्ति व प्रभाव है कि सभी सम्प्रदायों की भावात्मक एकता में इसका योगदान है। हमें इस भ्रम भाव को हटाना चाहिए कि यह मात्र जैनों का मंत्र है। एक बात अवश्य है कि इसका स्वीकार्य, निर्वाह, आराधना, वंदन, स्तवन आदि के रूप में जैनों तक ही सीमित रह गया है। 'णमोकार मंत्र' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह गुणों को नमस्कार करने का मंत्र है। कहीं पर भी, किसी भी पद में व्यक्ति विशेष को महत्व नहीं देता। पूरे मंत्र में कहीं किसी तीर्थंकर का नाम, किसी धर्म, सम्प्रदाय, देवी, देवता का नामोल्लेख नहीं है फिर भी प्रत्येक पद गुणवाचक होने से जिस किसी में ये गुण हैं वे सभी स्वतः पूज्य हैं, वंदनीय हैं।

नमन का प्राधान्य :

प्रश्न है कि यह नमस्कार क्यों? गुण क्यों? तो एक उत्तर यह हो सकता है कि नमस्कार की भूमिका में 'नमन' की प्रधानता है। 'नमन' हमारी विनीत भावना का प्रतीक है। जब तक मनुष्य में अहंभाव रहेंगे, अभिमान भाव रहेगा तब तक उसमें नम्रता नहीं आ सकती। जब तक मान-कषाय रहेगा वह क्रोध, माया, लोभ से पीड़ित रहेगा। जब तक ये दुर्गुण रहेंगे तब तक 'नमन' की सरलता, नम्रता के गुण आ ही नहीं सकते। इस दृष्टि से इस मंत्र के आरंभ में नम्रता का गुण प्राप्त करना अत्यावश्यक है। मान कषाय से ऊपर उठना आवश्यक है। आध्यात्म की उच्च भूमिका पर 'नमन' तो वही करता है जो 'न-मन' हो गया है। अर्थात् समस्त व्यावहारिक कार्यकलापों से मुक्त हो आत्मा के नैकट्य को प्राप्त कर सका है। समस्त विषय वासनाओं के प्रति मन से मुक्ति पा चुका हो। उसी

का नमन होना संभव है। दूसरे अर्थ में 'नमन' में यदि अंतिम 'न' 'नमने' से 'न' कहता है तो स्पष्ट है कि अभी अहम् का तिरोहण नहीं हुआ है। 'नमन' का गुण कषाय मुक्त होने या मंद कषाय होने पर 'विवेक' के कारण ही प्रकट होता है। विवेक से जिस तरह सत्य, असत्य, अच्छा, बुरा, रागी, विरागी का निर्णय करते हैं, सत्य को समझ पाते हैं उसी तरह विवेकशील होने पर ही हम 'नमन' के योग्य पात्र को पहचान पाते हैं। तात्पर्य यह कि 'नमन' का संबंध विवेक बुद्धि से होता है।

ऊर्जा प्रदान दाता : 'नमन' या 'नमस्कार' में भौतिक सुखों की आकांक्षा से ज्ञान, बुद्धि, चारित्र्य की भावना दृढ़ करने के भाव होते हैं। नमस्कार मात्र बोलकर नहीं बल्कि शारीरिक क्रिया मनोभाव के सामंजस्य से हो तभी वह सार्थक होता है। फलवान बनता है। 'नमस्कार' में हम मन से कोमल, सरल होते हैं। दोनों हाथ जोड़ मस्तक झुकाते हैं। जब हम अपना मस्तक आराध्य के चरणों में झुकाते हैं तब उनकी चरणांगुलि से निसृत ऊर्जा की किरणें हमारे मस्तिष्क में प्रवेश करती हैं और हमें नई ऊर्जा प्रदान करती हैं। इसी प्रकार आराध्य का हाथ यदि हमारे सिर पर हो तो उनके हाथों की उंगलियों के अग्र भाग से निसृत ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को ऊर्जावान बनाती हैं। इस प्रकार इस नमस्कार से हम महान, पवित्र, पूज्य आराध्य की शक्ति को अपने में ग्रहण कर पाते हैं। 'नमस्कार' करते समय यह मनोभाव अवश्य होना चाहिए कि मैं जिसे नमस्कार कर रहा हूँ उसके गुणों का अवतरण मुझमें हो और मैं उन जैसा बन सकूँ। यदि यह भावना है तभी नमस्कार का महत्व है अन्यथा बेकार है। नमस्कार मंत्र जब फलित होता है तो वह व्यक्ति के अहम् का तिरोहण करता है, विवेक का उदय होता है। यह ऊर्जा प्राप्ति का माध्यम एवं गुणग्राहकता का प्रतीक है।

मंत्र की पवित्रता : 'मंत्र' शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। सिंधु को बिंदु में समाहित करने की शक्ति इन मंत्रों व बीजाक्षरों में होती है। पर, ध्यान रहे कि मंत्र, ज्ञानाराधना, चरित्र साधना और विश्व कल्याण के निमित्त ही हैं। व्यक्तिगत भोग, स्वार्थ, वैमनस्य के संदर्भ में इनका उपयोग न हो। 'णमोकार मंत्र' की विशेषता यह है कि उसमें कहीं पर अहित के भाव नहीं हैं। उसकी साधना मैली विद्या के लिए संभव नहीं। पवित्र मंत्र पवित्रता ही प्रदान करेगा। हम इसी विवेचन के परिप्रेक्ष्य में 'णमोकार मंत्र' को समझें तो स्पष्ट है कि सर्वप्रथम 'णमो अरिहंताणं' में अरिहंतों को नमस्कार किया गया है। अरिहंत कोई व्यक्ति विशेष नहीं हैं। पर, जिस किसी भी साधक ने अपने अंतरंग

आत्मघातक कषायरूपी शत्रुओं पर अपने तप, संयम, साधना से विजय प्राप्त की है, वे अरिहंत हैं। जिन्होंने अपने तप से शुद्ध केवलज्ञान प्राप्त कर लिया है। जिन्होंने स्वयं प्रकाश प्राप्त कर विश्व के अंधकार में भटकते जनों को राह दिखाई है। जिनकी दिव्य ध्वनि चराचर के लिए कल्याणकारी बनी है। जिन्होंने आत्मा के प्रकाश हेतु शरीर को संयम की लगाम से संयत किया है। जिनके चार घातिया कर्म नष्ट हो गए हैं। अर्थात् जिनके ज्ञान-सत्यदर्शन पर अब संशय का आवरण नहीं रहा।

ध्वनि चराचर कल्याणी

जिसने कर्मों के राजा मोहनीय कर्म का क्षय कर लिया है। जिसके मार्ग के समस्त अन्तराय, विघ्न समाप्त हो गए हैं। जो वीतराग हैं, समदृष्टि हैं, ऐसे सभी अरिहंत हैं। उन्हें नमस्कार किया गया है। अरिहंतों को नमस्कार अर्थात् चार कषायों पर विजय की आकांक्षा को दृढ़ करना, आत्मकल्याण में स्थिर होना, स्व पर प्रकाशक ज्ञान का विकास करना, संसार के भटके मनुष्य को सत्पथ का दर्शन कराना, करूणा, दया, मैत्री,समानता, क्षमा के भावों में दृढ़ होने का संकल्प करना है। ऐसे अरिहंत के गुणधारी जितने भी हैं- उन सबको मेरा नमस्कार है।

'णमोसिद्धाणं' में सिद्ध अर्थात् अरिहंत जिन्होंने अपने ज्ञान के आलोक द्वारा प्राणीमात्र को सत्पथ दिखाया और अपनी आत्मसाधना में दृढ़ीभूत होते गए। शेष चार अघातिया कर्मों का क्षय करके अर्थात् अब जिन्हें न शरीर रचना की आवश्यकता है, न आयु का मोह है, न कुल की वांछा है और अब जिन्हें कोई आन्तरिक या बाह्य पीड़ा नहीं है। जो सदैव के लिए जन्म-मरण के आवागमन से मुक्त हैं। जिन्होंने आत्मा के सही गुण को सिद्ध कर लिया है। सिद्धों को नमस्कार अर्थात् आत्मा की उत्कृष्टतम अवस्था को नमस्कार। जन्म-मरण के कष्टों से मुक्ति को नमस्कार। जीवन की सार्थकता को नमस्कार।

'णमो आयरियाणं', 'णमो उवज्झायणं' एवं 'णमो लोए सव्व साहूणं' इन तीन पदों में आचार्य, उपाध्याय एवं साधु मात्र को नमस्कार। इन तीन पदों में मूलतः साधु को ही प्रणाम या नमस्कार किया है। इस विवेचन से स्पष्ट है कि इन पंच परमेष्ठि के नमस्कार में कहीं व्यक्ति पूजा नहीं है, पर गुण पूजा है। निरंतर ऊपर उठने की प्रेरणा की पूजा है। इन पंच नमस्कार के साथ उसकी महिमा चार पदों में व्यक्त हुई है। -

'ऐसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वे सिं, पढमं हवई मंगलं'

सर्व कल्याणकारी :

कैसा है यह मंगलमंत्र? यह

पंच नमस्कार मंत्र सर्व पापों को दूर करने वाला है। सबका कल्याण करने वाला है। जो भी इसका पठन करेगा उसका मंगल होगा। इस अभिधार्य अर्थ के लक्षणा व व्यंजना भावार्थ को समझें तो यह मंत्र सभी पापों को दूर करने वाला है।

पाप क्या है? सरल शब्दों में कहें तो हमारे मन के विकार जो हमें असंयत बनाते हैं, हमें मानवता के गुणों से च्युत करते हैं, विषय वासनाओं में उलझा कर चार गतियों में भ्रमण कराते हैं। जो संसार के जन्म-मरण के कारण हैं। जिन कुभावों के कारण आत्मा के उत्तम गुण क्षमा आदि हमसे विमुख होने लगते है। ये सारे दुष्परिणाम ही पाप हैं। यह मंत्र हमें इन पापों से मुक्ति दिलाता है। अंधकार अज्ञान को दूर कर सत्य के प्रकाश से भर देता है। इस मंत्र की दूसरी विशेषता है इसकी कल्याण की भावना। शिवत्व इसका प्रधान गुण है। यह व्यक्ति विशेष के कल्याण के लिए नहीं है वरन् चराचर के समस्त प्राणियों के कल्याण की भावना का परिचायक है। मंत्र 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के विचारों का द्योतक है। जब तक सभी प्राणी सुखी सम्पन्न नहीं होंगे तब तक विश्व में वास्तविक सुख शांति संभव ही कहाँ? आज के संतप्त हिंसा में फंसे, युद्धोन्मादी विश्व के कल्याण हेतु, पथभ्रष्ट मनुष्य की बुद्धि के परिष्कार हेतु यह मंत्र रामबाण उपाय है। जब सर्वकल्याण की बात आती है तो वातावरण शांत, सुखमय, मैत्रीपूर्ण, समभावमय बनता है। यही उत्तम वातावरण सबके कल्याण का द्योतक है। हम इसी हेतु इसकी आराधना करते हैं कि हमारा कल्याण हो। अर्थात् हममें मानवता के गुणों का विकास हो। हम देह से देहातीत होकर आत्मसाधना में तत्पर हों। इस पूरे विमोचन से स्पष्ट है कि यह मंत्र गुणों की आराधना, नाम स्मरण का मंत्र है, जो मानव को मानव बनाने की प्रेरणा देता है, जो कल्याणकारी है।

मंत्र की आराधना का महत्वपूर्ण अंग होता है-मंत्र पर पूर्ण श्रद्धा। यह श्रद्धा उत्तरोत्तर ध्यान की भूमिका तक ले जाती है। साधक इसी ध्यान की वृद्धि से समाधि की ऊंचाइयों को प्राप्त कर मुक्ति भी पा लेता है। यह मुक्ति अर्थात् विषय-वासनाओं से ऊपर उठकर, निहित स्वार्थों से मुक्त होकर आत्मकल्याण व विश्वकल्याण करना है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिसमें इस मंत्र की आराधना एवं स्मरण से बड़े बड़े कष्ट दूर हुए। 'अंजन' निरंजन बना। 'सुदर्शन' सूली से सिंहासन पर आरूढ़ हुए।

वर्तमान जीवन में यदि हम और आप पूरी श्रद्धा और आस्था से इसकी आराधना करें तो अवश्य मन की शांति, स्वार्थों से एवं कषायों से मुक्त हो सकते हैं। निर्भयता एवं सत्य कथन के गुण पा सकते हैं। यही तो मुक्ति है।

मति सुधरी-गति सुधरी

श्री विमलकुमार चौरड़िया, पूर्व सांसद

समाज में यह लोकोक्ति प्रचलित है– 'अन्त मति सो गति।' मृत्यु के समय व्यक्ति की जैसी मति होगी उस व्यक्ति की गति उसी अनुरूप होगी। किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि – जीवन में भी व्यक्ति की जैसी मति होगी, वैसी ही उसकी गति होगी।

'मति' का शाब्दिक अर्थ है–'बुद्धि', 'समझ', 'राय', 'इच्छा', 'अभिप्राय'.. आदि। 'गति' का शाब्दिक अर्थ – 'जाना', 'गमन', 'चाल', 'हरकत', 'रफ्तार', 'लीला', 'पहुँच', 'प्रवेश', 'जाने–पहुँचने के सामर्थ्य की सीमा', 'हालात', 'स्थिति', 'रूप रंग', 'मृत्यु के बाद जीवात्मा की भली अथवा बुरी दशाएं', 'सद्गति मार्ग', 'ग्रहों की चाल' और इसी तरह ज्ञान, उपाय, अवलंब, सहारा, साधन, प्रवाह, नृत्य, पैंतरा आदि..

वस्तुतः गति के जितने अर्थ यहाँ दिये गये हैं, उन सब में 'मति' का प्रभाव रहता है। जैसे वाहन चलाक की मति पर वाहन की गति होगी, व्यक्ति की मति के अनुसार ही उसकी हरकत, पहुँच, स्थिति, पैंतरा आदि होंगे। इसका विवेचन बहुत व्यापक होगा। अतः यहाँ विवेचन 'अन्त मति सो गति' तक ही सीमित रखेंगे। यदि हमारी अन्त मति सुधरी रहेगी तो हमारी भावी मति भी सुधरती जाएगी। यदि अन्त गति बिगड़ी रहेगी, तो हमारी भावी गति भी बिगड़ती जाएगी।

अन्त मति के अनुसार गति के शास्त्रों में कई उदाहरण हैं। अपनी गति सुधारने के लिए मति सुधारना परम आवश्यक है। मति सुधारने के लिए क्या करना चाहिए इसके कुछ बिन्दु निम्नलिखित हैं–

* निषिद्ध कर्मों का सर्वथा त्याग– हिंसा, चोरी, मैथुन, संग्रह वृत्ति, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग–द्वेष, कलह, झूठा दोषारोपण, चुगली, सुख में प्रसन्न और दुख में बहुत दुखी होना, निंदा, कपट वृत्ति से असत्य बोलना, अधर्म को धर्म और धर्म को अधर्म मानना=अविद्या= मिथ्यात्व का त्याग करना चाहिए।

* सकाम कर्मों का त्याग – स्त्री, पुत्र, धन, यश आदि प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति, रोग–संकटादि की निवृत्ति के उद्देश्य से अनुष्ठान, दान, तप, उपासना आदि सकाम कर्मों का त्याग करना चाहिए।

* तृष्णा का सर्वथा त्याग – मान, बढ़ाई, प्रतिष्ठा, स्त्री, पुत्र, धनादि जो कुछ अनित्य पदार्थ प्रारब्ध से प्राप्त हुए उन्हें बढ़ाने की इच्छा का त्याग करना। कारण वे परमात्म दशा प्राप्त करने में बाधक हैं।

* स्वार्थ के लिए दूसरों से सेवा कराने का त्याग।

* सम्पूर्ण कर्त्तव्य कर्मों में आलस्य और फल की इच्छा का त्याग।

* संसार के सम्पूर्ण पदार्थों में और कर्मों में आसक्ति का सर्वथा त्याग– धन, मकान, वस्त्रादि, स्त्री, पुत्र,

बांधवजन, मान, बढ़ाई, प्रतिष्ठा आदि इस लोक सहित परलोक के जितने विषय भोग रूप पदार्थ हैं, वे अनित्य है, इस बात पर विश्वास रखते हुए केवल एक परमात्मा में ही अनन्य भाव से रमणता कर, शरीर की व आत्मा की भिन्नता समझना, शरीर के प्रति भी ममता व आसक्ति का अभाव करना।

इस मति को प्राप्त करने के लिए जीवात्मा को परमात्मा के गुण प्रभाव और रहस्य से भरी हुई कथाओं को सुनना, सुनाना और मनन करना, एकान्त में रहकर निरन्तर परमात्मा का भजन, ध्यान और शास्त्रों के मर्म पर विचार करना प्रिय लगना चाहिए। उन्हें विषयासक्त मनुष्यों में रहकर हास्य, विलास, प्रमाद, निन्दा, विषय भोग और व्यर्थ बातों में अपना अमूल्य समय बिताना अप्रिय लगना चाहिए।

* सूक्ष्म वासना और अहं भाव का सर्वथा त्याग करना

इसी प्रकार अपनी मति सुधारने के लिए वैराग्य भाव को पुष्ट करने के लिए आत्मा को 12 भावना से भावित करना चाहिए। इस संसार में दिखने वाला प्रत्येक 1. अनित्य है, 2. अशरण है, 3. संसार दुःख से भरा है, 4. मैं अकेला हूँ (एकत्व), 5. आत्मा के अतिरिक्त सब अन्य हैं (अन्यत्व), 6. शरीर अशुचि का घर है (अशुचित्व), 7. इन्द्रियादि जीव को उन्मार्ग और दुर्गति की ओर ले जाकर कर्म बंध का आश्रव करने वाली हैं (आश्रव), 8. संवर=समिति गुप्ति ही कर्म रोकने वाले हैं, 9. बाह्य और अभ्यंतर तप से ही निर्जरा होगी, 10. लोक स्वभाव उत्पाद, ध्रोव्य और व्यय वाला है, 11. अनादिकाल से भव भ्रमण हो रहा है- बोध =ज्ञान होना दुर्लभ है, 12. वीतराग द्वारा प्ररूपित धर्म ही श्रेष्ठ है, ऐसी धर्म भावना हो। इस प्रकार की भावना सतत रहने से मति सुधरेगी।

मति सुधारने वाला आध्यात्मवादी ऐहिक और स्वर्गीय दोनों सुखों को हेय समझता है और केवल आत्मा को अमर, शाश्वत है, ऐसा मानता हैं।

जिनकी मति बाह्य विषयों की कामनाओं के पीछे जाती है, वे अनजान-बेसमझ बालकों के सदृश्य हैं। वे सब ओर से मृत्यु के बिछाये जाल में फंसते हैं। और जो बुद्धिमान है, उनकी मति अमर पद को जानकर, मानकर चिदात्मा का अवलोकन कर अर्थात् आत्मचिंतन के द्वारा, पुरुषार्थ करके विषयों की वासना में, पर में लगी मति को सुधारती है, संसार रूपी प्रपंच का त्याग कर मोक्ष प्राप्त करती है।

मति सुधरी तो गति सुधरी। तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है-

'सुमति कुमति सब के उर रहही, नाथ पुरान निगम अस कहही।' या

'जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना। जहाँ कुमति तह विपत्ति निदाना।' अर्थात् जहाँ सुमति है वहाँ नाना प्रकार की सम्पदाएँ (सुख की स्थिति, शाश्वत सुख की स्थिति भी) रहती है और जहाँ कुमति है वहाँ परिणाम में सदा विपत्ति (दुःख) ही प्राप्त होती है।

अतः अपनी गति व मति दोनों में प्रमादमुक्त रहें।

अन्यत्व भावना (2)

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)

आत्मा में से झरता जो सात्विक रस है वह अनुभव रस है। इस सुख को प्राप्त करने के लिए भौतिक सुख छोड़कर अंतर्मुखी बनना होगा। अभी तक जीव मातृमुख, पितृमुख, पत्नीमुख बना है किन्तु अब अन्तर्मुख बनना है।

शरीर एवं पौद्‌गलिक पदार्थ आत्मा से भिन्न हैं :- शरीर का अतिराग, आसक्ति, आत्मा का विचार नहीं करने देता। जीव को अनादिकाल से शरीर लगा हुआ है । इसलिए ऐसा विचार करता है कि शरीर ही आत्मा है। इस कारण शारीरिक सुखों के लिए ही सतत प्रयत्न करता रहता है। वह नहीं जानता कि शरीर का राग तो अनर्थ का कारण है। जब तक शरीर के ऊपर राग होगा तब तक द्वेष-झगड़ा-क्लेश का वातावरण रहेगा। शरीर और आत्मा को एक ही मानना अज्ञान है।

अनर्थ और दुखों से यदि बचना है तो शरीर और आत्मा का भेदज्ञान अति आवश्यक है। आत्मा का लक्षण है चेतना, जानना, देखना और उपयोग। इसके विपरीत देह पुद्‌गल है, जड़ है, उसका लक्षण है-सड़न, पड़न, विध्वंसन व नाशपाना। आत्मा कभी पुद्‌गल रूप नहीं होती और पुद्‌गल आत्मा रूप नहीं होता, क्योंकि जीव अपना चेतनास्वरूप नहीं छोड़ता और पुद्‌गल अपना जड़पना नहीं छोड़ता। दोनों द्रव्य पूर्णरूप से स्वतंत्र हैं। आत्मा के सामने जितने पदार्थ आते हैं, उन सबका ज्ञान उसे होता है, जबकि जड़ के साथ हजारों वर्षों तक भी यदि पदार्थ रहें तो भी जड़ को ज्ञान नहीं होता। कारण यह जड़ का स्वभाव नहीं है।

यह शरीर परमाणु के समूह से बना है। अनंतानंत परमाणुओं का स्कंधरूप यह शरीर जीर्ण होता है, नाशवान होता है। चाहे जितना पहलवान शरीर हो उसे भी आयु के साथ निर्बल होते हम देखते हैं। कारण यह शरीर का स्वभाव है। इसके विपरीत देह गलने पर, जीर्ण होने पर भी उसमें निवासरत आत्मा नष्ट नहीं होती। वह जैसी है, वैसी ही रहती है। उसमें कुछ भी बदलाव नहीं आता।

देह जड़रूपी है, आत्मा अरूपी है। जड़ पदार्थ इन्द्रियगोचर है किन्तु आत्मा को इन्द्रियों से नहीं जाना

जा सकता। हम अपनी देह को ही देखते हैं, आत्मा को किसी ने नहीं देखा। इसलिए देह को ही हमने 'मैं हूँ' ऐसा मान लिया है। जबकि देह और आत्मा दोनों भिन्न हैं, जिनके लक्षण भी भिन्न होते हैं। उसको एक किस प्रकार माना जा सकता है। इस बात को इस प्रकार समझा जा सकता है–

जिस घड़े में घी हो उसे व्यवहार से घी का घड़ा कहा जाता है। वास्तव में तो वह घड़ा मिट्टी का अथवा अन्य धातु का होता है। किन्तु उसमें घी रहने से उसे घी का घड़ा कहा जाता है। उसी प्रकार जीव भी जिस शरीर में रहता है, उन नाम, वर्ण, जाति से वह पहचाना जाता है। घी, घड़ा रूप नहीं होता और न ही घड़ा, घी रूप बनता है। दोनों एक साथ जुड़े रहते हुए भी जुदा ही हैं। यही स्थिति आत्मा और शरीर की है। दोनों एक क्षेत्रावगाही होते हुए भी सर्वथा अलग–अलग हैं। कर्म सहित आत्मा देह बिना नहीं रह सकती इसलिए दोनों में आधार अधिय भाव है।

यह शरीर भूत के समान इस आत्मा को लगा हुआ है। सांसारिक मान्यताओं के अनुसार भी जिसे भूत–प्रेत लगता है ऐसा मानते हैं कि वह व्यक्ति एक साथ पचास रोटी खा लेता है, या मटके का सारा पानी पी लेता है या ऐसे ही सब काम करने में समर्थ हो जाता है, जो मूलतः उसका स्वभाव नहीं है। भूत के प्रभाव से ही वह विचित्र हरकतें कर रहा होता है। हाथ–पैर पटकता है। ऐसे व्यक्ति का भूत निकालने का प्रयास करते हैं? या उसे रहने देते हैं प्रेम से? भूत तो जरा भी किसी को नहीं सुहाता है।

कुछ इसी तरह के काम जैसे खाना–पीना शरीर का स्वभाव है, आत्मा का नहीं। अतः शरीररूपी भूत से निकलने या मुक्त होने का प्रयास करना है।

एक अपेक्षा से देखा जाए तो जीता–जागता आत्मा, शरीर रूपी मुर्दे को ढोता ही है। आयु पूर्ण होने पर एक मुर्दे को त्याग कर दूसरे मुर्दे को धारण कर लेता है। यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक जीव, देह और आत्मा के भेदज्ञान को नहीं समझता। आत्मा और शरीर की भिन्नता को अनुभव नहीं करता। जब उसे भेदज्ञान हो जाता है, जब अनुभूति होती है तब उसे सभी पदार्थ, स्वयं का शरीर स्वयं से अन्य दिखने लग जाता है। इसका अभ्यास और साधना करते हुए एक समय ऐसा आता है कि आत्मा हमेशा के लिए सिद्ध–बुद्ध–निरंजन–निराकार बन जाती है। अपने स्वभाव में स्थित हो जाती है।

–क्रमशः

दोहरेपन का त्याग करें

–साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.

सुत्यजं रसलाम्पट्यं सुत्यजं देहभूषणम्।
सुत्यजाः कामभोगाश्च दुस्त्यजं दंभसेवनम्।।59।।6।।

अनुवाद– रस के प्रति आसक्ति का त्याग करना सरल है, देह के आभूषण का भी सरलता से त्याग कर सकते हैं। काम भोगों का भी त्याग करना सरल है, किन्तु दंभसेवन अर्थात् जीवन में दोहरेपन का त्याग करना बहुत मुश्किल है।

यहाँ ग्रंथकार ने छल–कपट को त्याग करने की प्रवृत्ति को अत्यन्त कठिन बताया है। अन्य बाह्य चीजों का त्याग करना सरल है। स्वादिष्ट पदार्थों को छोड़ना कठिन नहीं है। वस्त्र आभूषण आदि के प्रति आकर्षण का त्याग करना भी सरल है। रूप, रस, स्पर्श, गन्ध, शब्द आदि विषयों के प्रति राग, काम भोग के प्रति आसक्ति को भी दृढ़ मनोबली आसानी से छोड़ देते हैं, किन्तु अपने दोषों को प्रकट करने, अपनी मलिन मनोवृत्तियों को उजागर करने का साहस करना बहुत मुश्किल है। अपनी स्वार्थी वृत्तियों को कोई जान न पाए, कोई अपनी गुप्त प्रवृत्तियों को देख न पाए, कोई अपने अन्दर की मलिन भावनाओं को पहचान न पाये इस प्रकार के छल–कपट का त्याग करना बहुत ही कठिन है। प्रायः व्यक्ति दोहरा जीवन जीता है। वह जैसा नहीं है, वैसा दिखाने की कोशिश करता है और जैसा है उसे छुपाने का प्रयत्न करता है। वह दोषों को नष्ट करने के लिए प्रयत्न नहीं करता है बल्कि अपकीर्ति के भय से उन दोषों को ढकने का प्रयत्न करता है।

एक बार एक प्रसिद्ध नाटक कंपनी के द्वारा एक सुन्दर नाटिका 'राम रावण का युद्ध' प्रस्तुत करने की घोषणा हुई। 100 रु. की टिकट खरीदकर भी अनेक दर्शक नाटक देखने गए। भीड़ पूर्ण रूप से जमा हो चुकी थी। सारे पात्र तैयार थे परन्तु रावण का अभिनय करने वाला बीमार हो गया। वह नहीं आ पाया। दर्शकों में हलचल मच गई। तब सारे दर्शकों को शांत करते हुए राम का अभिनय करने वाले पात्र ने दर्शकों से कहा–देखो किसी कारण से रावण का अभिनय करने वाला पात्र नहीं आ सका है इसलिए राम और रावण दोनों का अभिनय मैं ही करूंगा। जब मैं दाहिनी ओर खड़ा होकर

डॉयलाग बोलूँ तो तुम मुझे राम समझना और जब बाँयी ओर खड़ा होकर डॉयलाग बोलूँ तो तुम मुझे रावण समझना।

इसी तरह आज व्यक्ति बाहर से राम के रूप में सज्जनता के रूप में पेश आता है किन्तु अन्दर से उसकी वृत्तियाँ रावण की तरह होती हैं। मन्दिर में, उपाश्रय में राम दिखने का प्रयास करता है, धार्मिक होने का नाटक करता है। बाजार में या अपना स्वार्थ सिद्ध करने के अवसर पर वह रावण की तरह प्रस्तुत हो जाता है। बाहर से वह लाखों का दान कर रहा है, सम्मान पा रहा है किन्तु अन्दर से अधिक से अधिक संग्रह करने की प्रवृत्ति भी जागृत है। नाम, यश, कीर्ति का लोभ उसे चारों ओर से घेरे रहता है। बाहर से वह तप कर रहा है। मासक्षमण उपधान जैसी तपाराधना कर लेता है, लेकिन अंदर से खाने की रसासक्ति को समाप्त नहीं कर पाता है। इसलिए वही व्यक्ति बाहर होटल में अभक्ष्य का सेवन करने की तीव्र लालसा के साथ करता है, रात्रि भोजन आनन्द के साथ करता है। ऊपर से सामायिक की आराधना चल रही है, अन्दर में प्रभावना का लालच पड़ा रहता है। रोज मन्दिर में पूजा एवं प्रार्थना वीतराग की कर रहा है, लेकिन अन्दर में जड़ के राग को मजबूत कर रहा है। पूजा ईश्वर की, प्रेम नश्वर का। हाथ में माला और हृदय में माया। काया से उपासना और मन में वासना। जो क्षेत्र आत्मविशुद्धि करने का है उसी क्षेत्र में प्रवेश करके दंभ का आचरण किया जाए तो वह बहुत ही अनर्थकारी होता है।

इस संबंध में हंस का उदाहरण समझना आसान है। वह बाहर से भी उजला है और अन्दर से भी। कौए को समझना आसान है, क्योंकि वह बाहर से काला और अन्दर से भी काला है। परन्तु बाहर से उजले और अन्दर से काले बगुले जैसे चरित्र को समझना बहुत ही मुश्किल है।

अपनी अन्दर की बुरी वृत्तियों को पहचानना, उन्हें स्वीकारना और उनका परिष्कार करना बहुत मुश्किल है, फिर भी असंभव तो नहीं है। यदि साधना मार्ग में आगे बढ़ना है और जीवन को आनंदमय व सफल बनाना है तो बाह्य सम्यक् प्रवृत्तियों के साथ-साथ अपना स्वयं का आन्तरिक निरीक्षण भी करते रहना आवश्यक है। प्रवृत्तियों के साथ वृत्तियों को सुधारना जरूरी है। जीवन में से दोहरेपन का त्याग करके मिलावट, दिखावट, बनावट, सजावट से दूर रहकर अपना जीवन सरल, सहज, सफल बने यही संदेश उपाध्याय यशोविजयजी म.सा. हमको दे रहे हैं।

जैनाकाश के तेजस्वी नक्षत्र (4) गतांक से आगे...

प्रभावक आचार्य पूज्य
श्री विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.)

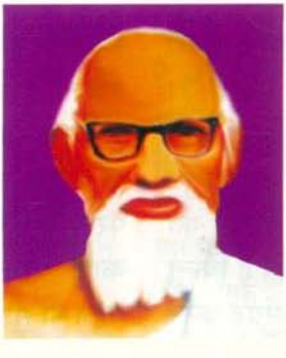

आपने परमात्म भक्ति एवं श्रद्धारूपी जल में गहरी डुबकी लगाई है। उसी के परिणामस्वरूप ऐसी अमूल्य कृतियां अस्तित्व में आईं। आपके ग्रन्थों में समृद्ध ज्ञान एवं अप्रतिम प्रतिभा झलकती है।

पूज्य आचार्य की निश्रा में सफलतम प्रतिष्ठा निष्पादन में –

1. सर्वप्रथम बिहानगढ़ में गुरु की आज्ञा से अद्भुत प्रतिष्ठा की। 2. गुरु के आदेश से खवासा, लेडगांव, दशाई में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। 3. आकोली में सुन्दर प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न। 4. भीनमाल में प्रतिष्ठा की। 5. पादरू में सूरि प्रतिष्ठा की। 6. रिंगनोद में धूमधाम से प्रतिष्ठोत्सव करवाया। 7. डूडसी की भावभरी विनंती स्वीकार कर प्रतिष्ठा संपन्न की। 8. बोरटा में उत्साह एवं उमंग के साथ प्रभु प्रतिष्ठा सम्पन्न की। 9. दशपुर में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया। 10. आलोट में बड़े आयोजन के साथ प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न की। 11. नैनावा में जोरदार प्रतिष्ठोत्सव किया गया। 12. जावरा दादावाड़ी में भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न की एवं लोगों को गुरु की महिमा से परिचय करवाया। 13. गढ़शिवाना चौमुख जिन की महोत्सव के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न की। 14. पारलु में प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न किया। 15. शिरपुर में श्रीमाल निवास में पार्श्व प्रभु की प्रतिष्ठा की। 16. मोहनखेड़ा में मुख्य जिनालय के जीर्णोद्धार की प्रेरणा देकर भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न कराया। 17. सुराणा में भव्य प्रतिष्ठोत्सव आपकी निश्रा में सम्पादित हुआ।

इसी क्रम में गूडा चातुर्मास के समय उपधान आराधना करवाई। सियाणा में उपधान तप करवाया। भीनमाल भव्य उपधान तप आराधना के साथ सम्पन्न की। मोहनखेड़ा तीर्थ पर उपधान आराधना तप करवाया। थराद में

108 छोड़ का अद्भूत उद्यापन समारोह आपकी निश्रा में सम्पन्न हुआ।

मुमुक्षु आत्माओं को आपके यशस्वी हाथों से दी गई पावन दीक्षाएं

1. आचार्यपद प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम राजगढ़ में पुष्पाकुमारी एवं बागरा की गजीब बहन को दीक्षा देकर क्रमशः साध्वी प्रियदर्शना एवं तिलकप्रभा नाम दिया। 2. आहोर में पुखराजभाई को दीक्षा देकर मु. रामचन्द्रजी नाम से संबोधित किया। 3. भूति में चुन्नीलालजी को दीक्षा देकर खिमाविजयजी नाम घोषित किया। 4. डूडसि में प्रतिष्ठा अवसर पर सोनजी को दीक्षा देकर चेतनविजयजी नाम प्रदान किया। 5. थराद में उग्र विहार कर पांच दीक्षाएं सम्पन्न की और दीक्षार्थियों को क्रमशः कनकप्रभा, किरणप्रभाजी, कल्प लताजी, हेमलताजी एवं कुशल प्रभाजी नाम प्रदत्त किए। 6. गुड़ा में राजमलजी श्रावक को दीक्षा दे विनयविजय नाम से पुकारा। 7. कुक्षी में सज्जनबाई को दीक्षा देकर चंदनश्री नाम रखा। 8.ज्योति बहन एवं मयाचंदजी को दीक्षा देकर क्रमशः कोमलताश्री एवं केवलविजयजी नाम घोषित किया। 9. भीनमाल में तीन दीक्षा सम्पन्न कर क्रमशः सद्‌गुणाश्री, सुनंदाश्री एवं सुमंगलाश्री नाम दिए। 10. आहोर में बस्तीमलजी को दीक्षा देकर कीर्ति विजयजी नाम घोषित किया। 11. सियाणा में नथमलजी को दीक्षा दे रवीन्द्रविजयजी नाम दिया। 12. पादरु में छगनजी सेठ को दीक्षा देकर हेमविजयजी नाम रखा। 13. आलोट में प्रतिष्ठोत्सव अवसर पर कैलाशश्रीजी को प्रव्रज्या प्रदान की। 14. भूति में गुर्रा बहन को संयम प्रदान कर चन्द्रकलाश्री नाम दिया। 15. विमला बहन को दीक्षा प्रदान कर विमलयशा नाम रखा। 16. थिरपुर में दो मुमुक्षु बहनों शान्ता बहन एवं शारदा बहन को संयम प्रदान कर क्रमशः शशिकलाश्री एवं शशिप्रभाश्री नाम दिए।

इस प्रकार अनेक प्रतिष्ठाएं, दीक्षाएं, उपधान, ऊजमना आदि अनुष्ठान करवाते हुए शासन की अनवरत अभूतपूर्व सेवा आपने की। आप गच्छहित के लिए भी सदैव जागरूक रहते थे। इन्दौर चातुर्मास के अन्तर्गत आपने गच्छहित की अनेक योजनाएं बनाईं एवं संचालित कीं। मोहनखेड़ा तीर्थ पर आयोजित अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के अधिवेशन में आपने शिक्षा प्रसारण एवं धार्मिक आचारों के प्रतिपालन हेतु प्रभावशाली ढंग से प्रेरित किया। जीवन के ढलान में अस्वस्थता के कारण मोहनखेड़ा तीर्थ पर स्थिरता की। सं.2036 आषाढ़ सुदी 6 को ऊँ अर्हं के जाप में लीन होकर आपने पार्थिव शरीर का त्याग किया। प.पू. विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के समाधि स्थल पर मोहनखेड़ा में आज भव्य समाधि मंदिर निर्मित है। आपके द्वारा किए गए शासन सेवा के कार्य आपकी स्मृति को सदैव जीवंत रखेंगे।

गतांक से आगे

ईर्ष्या का कटु फल

(आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.)

सम्राट चन्द्रगुप्त और महारानी दुर्धरा दोनों के दिल में जैन धर्म के प्रति गाढ़ अनुराग था। चन्द्रगुप्त की कीर्ति दिग्-दिगंत में फैली हुई थी। महामंत्री चाणक्य के दिल में चन्द्रगुप्त के प्रति खूब सम्मान था। वह उसके भावी हित की सतत् चिन्ता करता रहता था।

कोई स्वार्थी लोलुप व्यक्ति जहर देकर चन्द्रगुप्त को खत्म न कर दे इस हेतु चाणक्य ने एक योजना बनाई। चन्द्रगुप्त के लिए भोजन की अलग व्यवस्था होने लगी और उसमें थोड़ा-थोड़ा जहर मिलाया गया। चन्द्रगुप्त की विषरोधी क्षमता बढ़े इस ढंग से जहर की मात्रा में धीरे-धीरे वृद्धि की जाने लगी और योजनानुसार यदि चन्द्रगुप्त के साथ दूसरा कोई भोजन करे तो वह तत्काल ही मर जाये।

चन्द्रगुप्त के भोजन के समय चाणक्य की हमेशा उपस्थिति रहती। चाणक्य की रसोइयों को कड़क सूचना थी कि महाराजा के साथ अन्य कोई भोजन न करे। धीरे-धीरे समय बीतने लगा और महारानी दुर्धरा गर्भवती बनी। उनके गर्भ में मौर्यवंश का भावी सम्राट विकसित होने लगा। महाराजा के आनन्द का पार न रहा।

महाराजा के साथ भोजन किए महारानी को वर्षों बीत चुके थे। एक दिन महारानी के मन में महाराजा के साथ भोजन करने की प्रबल इच्छा हुई। महारानी ने अपनी भावना महाराजा के सामने व्यक्त की। महाराजा ने कहा, 'ओह! इसमें क्या बड़ी बात है?' महारानी ने कहा- मेरी इच्छा तो कई दिनों से आपके साथ भोजन करने की है परन्तु महामंत्री की कड़क सूचना होने से आज तक मैं अपनी भावना आपके आगे व्यक्त नहीं कर सकी। परन्तु अब तो उस भावना को दबाना मेरे लिए मुश्किल हो गया है।

महाराजा ने कहा, 'तुम्हारी इच्छा को पूरा करने का एक उपाय है।'

'वह कौन सा?' महारानी ने तत्काल प्रश्न किया। महाराजा ने कहा, 'किसी प्रयोजन के लिए चाणक्य कहीं बाहर जा रहे हैं। यद्यपि भोजन के समय वापस आने को भी कहा है किन्तु तुम्हारे लिए एक अवसर है।'

महाराजा की अनुमति मिलते ही महारानी की खुशी का पार न रहा। दूसरे दिन भोजन का समय हुआ। रसोइये ने सुन्दर रसोई तैयार कर दी थी। भोजन का समय होते ही सम्राट चन्द्रगुप्त भोजन खंड में पधारे। रत्नजड़ित सोने के बाजोट पर सोने की थाली में विविध पकवान आदि सामग्रियां परोस दी गई थीं। इसी बीच महारानी दुर्धरा ने भी महाराजा के भोजन खंड में प्रवेश किया।

महाराजा ने महारानी को बैठने के लिए आसन प्रदान किया। उसी समय महाराजा की धावमाता भी वहां आ गईं। चन्द्रगुप्त के लिए अलग भोजन

व्यवस्था के रहस्य का पता सिर्फ धावमाता को था। अतः ज्यों ही धावमाता ने महारानी को महाराजा के भोजन खंड में देखा त्यों ही वह एकदम घबरा गई। राजा के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होने पर भी थोड़ी हिम्मत कर उसने कह दिया- 'सम्राट! महामंत्री चाणक्य की आज्ञा है कि आपके साथ कोई भोजन न करें।'

परन्तु आज महारानी तो जिद लेकर बैठी है। उस 'स्त्रीहठ' के आगे महाराजा को भी झुकना पड़ा। अतः महाराजा तो मौन ही रहे और महारानी भी महाराजा की थाली में कौर लेकर मुँह में डालने लगीं। अभी मात्र दो कौर ही लिए थे कि महारानी तत्क्षण मूर्च्छित हो गई। थोड़ी ही देर में उसके प्राण पखेरू उड़ गए। उसी समय चाणक्य का वहाँ आगमन हुआ। सारी परिस्थिति को वह भाँप गया। उसी समय उसने अपनी कमर में से कटार निकाली और तत्क्षण महारानी का पेट चीर डाला और गर्भ में रहे बालक को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

चाणक्य ने द्रुत गति से बालक को सुरक्षित बचाने का काम किया किन्तु महारानी की एक छोटी सी भूल के कारण उन्हें मौत का शिकार होना पड़ा।

-क्रमशः...

गुरु भक्ति गीत

(सा.रूचिदर्शनाश्रीजी म.)

तर्ज-ऐ मेरे प्यारे वतन...

भोले भाले हैं निराले, आचार्य हमारे हैं मतवाले
संत हैं निर्ग्रन्थ, ओ गुरु जयंत......
भक्त ने जब की पुकार, आपने सहज ली स्वीकार
सर्दी गर्म का न विचार, किया है नित उग्र विहार
सेहत की परवा न की, साँस हर एक लुटा दी
दुख का जहाँ अंत, ओ गुरु जयंत।।1।।
संघ की कठिन समस्याएं, समाधान को पा जाएं
वैर-विरोध-विपदाएं, पड़े चरण सब मिट जाए
आपके प्रभाव में, शांत शीतल छांव में
समता का है मंत्र, ओ गुरु जयंत ।।2।।
चतुर्विध संघ रथ के सारथी, दृढ़ बना है संघ आज
उन्नत बनाया संघ को, आपपे सब करते नाज
संघ का आबाल नर, सबकी रखते हैं खबर
प्रेम का दिया पंथ, ओ गुरु जयंत।।3।।
गच्छ को दिपाया जग में, जय कीर्ति चहुँ फैलाई है
कु छ न मांगा बदले में, निष्कामी गुरु बलिहारी है
त्रिस्तुतिक संघ की है शान, भक्तों के जो भगवान
रुचि रखे अरिहंत , ओ गुरु जयंत ।।4।।

क्या हम अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हैं?

-डॉ.चंचलमल चौरड़िया

आज चारों तरफ तनाव, असंतोष एवं अशान्ति का वातावरण है। चाहे गृहस्थ हो अथवा साधक, नौकर हो अथवा मालिक, कर्मचारी हो या पदाधिकारी, जनता हो या नेता, परिवार हो या समाज, सामाजिक संस्थाएँ हों अथवा संगठन। हमारी दूसरों से अपेक्षाएं बढ़ती जा रही हैं, परन्तु हम स्वयं अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। अधिकारी सभी चाहते हैं परन्तु इसके लिए सेवा, त्याग, तपस्या, समर्पण, निष्ठा व विश्वसनीयतापूर्ण आचरण करना आवश्यक नहीं समझते। हम बिना परिश्रम किए अथवा बहुत कम मेहनत कर सब कुछ अथवा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। भले ही इसके लिए हमें प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से अकरणीय अथवा नियम विरुद्ध गलत आचरण ही क्यों न करना पड़े।

प्राय: सभी परिवारों में अभिभावक, सम्प्रदायों में आचार्य, राष्ट्र में नेता, कार्यालय में पदाधिकारी अनुशासन चाहते हैं परन्तु उनमें से अधिकांशत: स्वयं निष्ठापूर्वक बिना पक्षपात सबके साथ सद्भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं करते। आदेशों का पालन सभी चाहते हैं, परन्तु अपने आश्रितों का हृदय कैसे जीता जावे, उनकी कठिनाइयों, दु:खों अथवा अशांति का निवारण कैसे किया जाए, इसके प्रति सजगता नहीं दिखाते। सास अपनी बहू से अपेक्षाएं करती है किन्तु उसे अपनी बेटी के समान स्नेह देना आवश्यक नहीं समझती। मालिक नौकर से अधिकाधिक कार्य तो लेना चाहता है परन्तु उसकी निम्नतम आवश्यकताओं का भी ख्याल नहीं करते। गुरु, शिष्य से सेवा व आज्ञा पालन की आशा करते हैं परन्तु शिष्य को अपने लक्ष्य में बढ़ाने हेतु वांछित सहयोग नहीं करते। शिष्य की मन:स्थिति एवं क्रियाकलापों का सजगतापूर्वक ध्यान नहीं रखते, जिससे शिष्य साधना के पावन पथ से भटक जाता है। नेता अपने सुख और स्वार्थ का ही ध्यान रख, प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं किन्तु प्रजा की समस्याओं के प्रति उपेक्षा रखें तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि वे भी अपने कर्तव्यों का ईमानदारी पूर्वक पालन नहीं कर रहे हैं। इसी कारण आज अधिकांश पिता पुत्र से, गुरु शिष्य

से, सास बहू से, अध्यापक विद्यार्थी से, मालिक नौकर से, पदाधिकारी कर्मचारी से, बहू सास से, शिष्य गुरु से, नौकर मालिक से प्रसन्न नहीं हैं। वे एक दूसरे पर आरोप लगा उसकी अभिव्यक्ति करते हैं। आपसी भेदभाव एवं विश्वास कम होता जा रहा है। बड़ों के प्रति श्रद्धा और आदर की भावना लुप्त होती जा रही है।

अपने से बड़ों (पूज्यों) की आज्ञा का पालन करना, सेवा सुश्रुषा करना, उनके अनुभवों का लाभ उठाने हेतु मार्गदर्शन लेना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान में बाधक समझा जा रहा है। भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में माता-पिता एवं गुरु को देवता माना गया है किन्तु इसके गूढ़ रहस्य को हम नहीं समझ पा रहे हैं। जो हम अपने प्रति चाहते हैं, वैसा ही आचरण दूसरों के प्रति करना चाहिए। यह हमारी सामान्य किन्तु गूढ़ रहस्य की परंपरागत शिक्षा है किन्तु पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव हमारे मन:मस्तिष्क पर हावी होता जा रहा है। हमारी मान्यताएँ बदल रही हैं, चिंतन में आध्यात्मिकता गौण होती जा रही है एवं उसका स्थान स्वच्छन्द मनोवृत्ति ने लेना आरंभ कर दिया है। पारिवारिक एवं सामाजिक बन्धन समयानुकूल भी नहीं लग रहे हैं। अपनी क्षणिक उपलब्धियों के फलस्वरूप लोक मर्यादाओं के विरुद्ध कार्य करते हुए तनिक भी संकोच नहीं हो रहा है। करणीय एवं अकरणीय के भेद का बोध समाप्त होता जा रहा है। व्यक्ति को जो अनुकूल एवं प्रिय लगता है वह उसी को करना चाहता है। यदि उसे ऐसा करने से रोका जाता है तो परिवार में, समाज एवं संप्रदायों में शांति भंग होते देर नहीं लगती। विभिन्न परिस्थितियों में हमारे कर्तव्यों की प्राथमिकताएँ क्या हैं- उसका सही चिन्तन नहीं हो पा रहा है, ऐसे में सारी जिम्मेदारियों को निभाने का तो प्रश्न ही कहाँ है?

राष्ट्र के एक नागरिक अथवा नेता के रूप में, सामाजिक सदस्य अथवा संचालक के रूप में, परिवार में अभिभावक अथवा सदस्य के रूप में, पाठशाला में अध्यापक अथवा विद्यार्थी के रूप में, साधना के क्षेत्र में साधक अथवा श्रावक के रूप में, कार्यालय में पदाधिकारी अथवा कर्मचारी के रूप में हमारे क्या कर्तव्य हैं और उनका हम कितनी निष्ठापूर्वक प्राथमिकताओं के आधार पर पालन करते हैं, यह चिन्तन का विषय है? किसको कब और कितना महत्व देना यह स्व विवेक पर निर्भर करता है। हमारा दृष्टिकोण व्यापक हो, हम समाज के लिए हितकारी बनें एवं सभी को अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें और प्राप्त करें यही सफलता का मूलमंत्र है। अभिभावक का कर्तव्य है कि परिवार का सुव्यवस्थित रूप से लालन-पालन करने के साथ सभी सदस्यों में आपसी सद्भाव एवं प्रेम बनाये रखना, बच्चों को स्वावलंबी

एवं सुसंस्कारित बनाना, उन्हें व्यसनों से मुक्त रखना। इसके लिए आवश्यक है कि अभिभावक बच्चों को सद्पुरुषों के सम्पर्क में लाते रहें, सत् साहित्य पढ़ने, स्वाध्याय करने, व्रत-नियम लेने की निरन्तर प्रेरणा देते रहें। बच्चों की गतिविधियों एवं संगति पर ध्यान रखें। जो अभिभावक बच्चों को अत्यधिक लाड़ प्यार देते हैं एवं उनकी त्रुटियों की उपेक्षा करते हैं या उन पर ध्यान नहीं देते हैं तो ऐसे बच्चों में संभावित अच्छाइयाँ अथवा गुण पूर्ण विकसित नहीं हो पाते हैं। ऐसे अभिभावक भविष्य में यदि बच्चों के आचरण एवं व्यवहार के कारण थोड़े या अधिक तनावग्रस्त रहें तो आश्चर्य नहीं। परिवारों में स्थायी एवं मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए अभिभावकों का विवेक, अनुशासन व पक्षपात रहित तरीके से निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन सबसे महत्वपूर्ण होता है।

आज कर्तव्यों की उपेक्षा के कारण कहीं-कहीं पर दाम्पत्य जीवन में दरारें पड़ जाती हैं। जहां पति, पत्नी को अपनी सेविका मात्र समझे, वांछित स्नेह न देवे, उत्पीड़ित करें, दैनिक वार्तालाप में व्यंगात्मक भाषा का प्रयोग करे, अस्वस्थ होने पर उपचार का ध्यान ही न देवे अथवा समय पर उपचार ना करावे, मर्यादाओं के विपरीत आचरण करने पर प्रेमपूर्वक समझाने के स्थान पर डाँटे फटकारे या उसके स्वाभिमान पर चोट पहुँचावे, उसके सुख-दुख का भागीदार न बने, उसकी स्थिति व भावना का ख्याल रखे बिना उपेक्षा करे, पत्नी को सद्प्रवृत्तियों में प्रोत्साहित न करे तो ऐसे पति अपने अन्य कर्तव्यों के प्रति भी उदासीन ही कहे जावेंगे। पत्नी का भी कर्तव्य है कि वह ससुराल पक्ष के सभी सदस्यों को यथोचित सम्मान दे। बड़ों की सेवा सुश्रुषा करे। उनके प्रति विनय का व्यवहार कर उनके मार्गदर्शन एवं अनुभवों का लाभ उठावें। छोटी-छोटी बातों को महत्व नहीं देवें। क्रोध एवं जिद्दी प्रवृत्ति हो तो उसको धीरे-धीरे सहनशीलता एवं सहिष्णुता पूर्वक त्यागने का प्रयास करे। पति सन्मार्ग से न भटक जावे एतदर्थ पति के कार्यकलापों के प्रति सजगता रखना भी पत्नी का दायित्व होता है। धर्मपत्नी नाम को सार्थक करने के लिए पति को धर्म के मार्ग में बढ़ाने का नियमित प्रयास तथा सहयोग करना चाहिए। उसको अपने कर्तव्यों का प्राथमिकताओं तथा लोक मर्यादाओं को निभाते हुए विवेकपूर्वक पालन करना चाहिए। उसको चिन्तन करना चाहिए कि अधिकार मांगने से नहीं मिलते, वे निष्ठा, विश्वसनीयता एवं समर्पण से स्वतः मिल जाते हैं। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए दोनों के द्वारा अपने कर्तव्यों का विवेकपूर्ण पालन आवश्यक होता है।

नवग्रह शान्ति दिलवाते हैं 'पंचपरमेष्ठि'

– शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर

पांच परमेष्ठि पदों की आराधना से नौ ग्रहों की विपरीत दशा से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। पाँच परमेष्ठि याने नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं और नमो लोए सव्व साहुणं।

पहले परमेष्ठि अरिहंताणं याने अरिहंत पद की आराधना करने से चन्द्र की पीड़ा से मुक्ति मिल जाती है। चन्द्रमा सफेद वर्ण है और अरिहन्त पद का वर्ण भी सफेद है। चन्द्र की पीड़ा में अरिहंत पद के जाप से और चन्द्रप्रभु भगवान की पूजा सफेद रंग के फूलों से करना फलदायी होता है। उसके लिए सोमवार का दिन सबसे उत्तम है। शुक्रवार को शुक्र ग्रह की पीड़ा भी सुविधिनाथ की पूजा और अरिहंत की उपासना से मिट जाती है। क्योंकि यह भी सफेद ग्रह है।

दूसरे परमेष्ठि सिद्धाणं याने सिद्ध पद की आराधना से सूर्य और मंगल ग्रह से उत्पन्न परेशानी से मुक्ति मिलती है। सूर्य और मंगल दोनों ग्रह लाल हैं और सिद्ध पद भी लाल वर्ण का है। सूर्य ग्रह की तकलीफ लाल रंग के फूलों से पद्मप्रभु भगवान की रविवार को पूजा करने से और मंगल ग्रह की शांति मंगलवार को वासुपूज्य भगवान की पूजा लालरंग के फूलों से करने से होती है। कहा भी है – 'पद्मप्रभु ने वासुपूज्य दोय राता कहिये।'

बुद्ध ग्रह की अनुकूलता के लिए 'नमो आयरियाणं' पद की आराधना, शांतिनाथ भगवान और आदिनाथ भगवान की पूजा पीले रंग के फूलों से करने से होती है। बुधवार को भगवान महावीर स्वामी की पूजा –आराधना भी श्रेयस्कर है।

राहू और केतु ग्रह की प्रतिकूलता में हरे रंग के फूलों से नेमिनाथजी भगवान की पूजा और 'नमो उवज्झायाणं' पद की आराधना श्रेयस्कर है और यह गुरुवार को विशेष लाभदायक है। 'साधु भगवंत' का वर्ण श्याम है और शनि ग्रह भी श्यामवर्णी हैं। शनि ग्रह की अनुकूलता के लिए शनिवार को मुनिसुव्रत स्वामी की पूजा आराधना 'नमो लोए सव्वसाहूणं.' पद की आराधना के साथ करें। इस तरह ये पांच परमेष्ठी पद हमें नौ ग्रहों से उत्पन्न पीड़ा से मुक्त करते हैं।

कठिन शब्दों के अर्थ अनादिकालीन–जिसका कोई आदि या आरम्भ नहीं। यह धर्म है।, निरुक्तार्थ–शब्द के अक्षरों से बैठाया हुआ अर्थ, उत्पन्न किया हुआ अर्थ, घाती कर्म–आत्मा के गुणों का नाश करने वाले कर्म–ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तराय।, अशरीरी–जिनके शरीर न हो, बिना शरीर के शुद्ध आत्मा सिद्ध, निरंजन–राग द्वेष से रहित, वीतराग, साकार–शरीरवाले जिनके शरीर (आकार) हैं। सशरीरी, देह सहित।, निराकार–जिनके शरीर (आकार) नहीं हैं देहरहित, देहातीत, अपरिपूर्ण–अधूरे, अपूर्ण, गुरु–गृणाति हितम्– जो शिष्यों को हित समझाते हैं, वे गुरु कहलाते हैं।, पौद्गलिक–पुद्गलों से बनी हुई जो जड़ वस्तुएँ हैं।, शाश्वत सुख–जो सुख सदा काल रहे ।, सहज सिद्ध–अपने आप, स्वयं ही बने हुए, किसी के बनाए हुए नहीं।, अव्याबाध–(व्याबाध अर्थात् पीड़ा), पीड़ा रहित।, गणधर–ग च छ के नायक, भगवान् के प्रथम शिष्य।

साहित्य समीक्षा

क्षमापना अपना बनाती

शुभाशीर्वाद	–	युग प्रभावक, गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. मधुकर
लेखक	–	मुनिश्री संयमरत्न विजयजी 'प्रवासी'
प्रकाशक	–	श्री राजेन्द्र सूरि शोध संस्थान, उज्जैन
पृष्ठ	–	160, चउरंगी मुद्रण, आकर्षक, प्रभावक फोर कलर में।
मूल्य	–	150, अमूल्य –क्षमापना को अपनाना।
प्राप्ति स्थान	–	नितेशजी नाहटा, नाहटा प्रकाशन, देवास गेट, उज्जैन (म.प्र.) मो. 098267–86223
मुद्रक	–	मल्टी ग्राफिक्स, मुंबई

संवत्सरी, क्षमापना दिवस आने पर हम सभी परस्पर एक दूसरे से 'मिच्छामि दुक्कड़' करते तो हैं किन्तु इसका वास्तविक शास्त्रोक्त अर्थ क्या है? इसके बारे में हममें से कई को जानकारी नहीं है। इस बारे में हमें वास्तविक जानकारी प्राप्त हो सकती है–'क्षमापना अपना बनाती ' शीर्षक पुस्तक से। पुस्तक को आलेखित एवं संपादित किया है मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा. ने। अपने गुरुवर युग प्रभावक, सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अनन्य समर्पित भावना रखते हुए, पूज्य गुरुदेव श्री के 32 वें पाटोत्सव की स्मृति में उन्हीं के श्री चरणों में सादर समर्पित की है, जो अनुमोदनीय है। मुनिश्री द्वारा सृजित यह द्वितीय पुस्तक वास्तव में अद्वितीय है। क्षमा के तत्व–महत्व एवं अपनत्व के रहस्य को उद्घाटित करने वाली यह पुस्तक घर–घर में पठन–पाठन, चिंतन–मनन हेतु संग्रहणीय योग्य है। विशेष प्रसंगों पर स्वजन–स्नेही–संबंधी को भेंट देने योग्य भी है।

–समीक्षक जूली गोलेचा

नवकार एवं पच्चक्खाण करने से लाभ

(संकलन- श्री विनयकुमार छिपानी)

1. नवकारसी का पच्चक्खाण करने से 100 वर्ष का नारकी आयुष्य क्षय होता है।

2. पोरिसी का पच्चक्खाण करने से 1000 वर्ष का नारकी आयुष्य क्षय होता है।

3. साठ पोरिसी का पच्चक्खाण करने से 10,000 वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षयहोताहै।

4. परिमुड्ड का पच्चक्खाण करने से 10,00,000 वर्षों का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

5. नीवी का पच्चक्खाण करने से 1,00,00,000 वर्षों का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

6. आयम्बिल का पच्चक्खाण करने से 1 हजार करोड़ वर्षों का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

7. उपवास का पच्चक्खाण करने से 10 हजार करोड़ वर्ष का नारकी आयुष्य क्षय होता है।

8. छट्ठ का पच्चक्खाण करने से एक लाख करोड़ वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

9. अट्ठम का पच्चक्खाण करने से दस लाख करोड़ वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

इस प्रकार एक-एक उपवास बढ़ाने पर दस गुणा फल प्राप्त होता है यानी इतने वर्षों तक के नरक के पाप साफ होते हैं।

10. 1 सामायिक का फल :- शुद्ध मुहूर्त में सामायिक का फल 92,59,25,925 (बाणवे करोड़ उनसठ लाख पच्चीस हजार नौ सौ पच्चीस पल्योपम का लाभ होकर इतने वर्षों का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

11. अष्ट प्रहरी पौषध का फल 2700 अरब 70 करोड़ 77 लाख 77 हजार 777 पल्योपम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

12. पौषध सहित पोरिसी का फल 346 करोड़ 22 लाख 22 हजार 222 पल्योपम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

13. संवर का फल 46 करोड़ 29 लाख 61 हजार 900 पल्योपम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

14. सामान्य सामायिक का फल 62 करोड़ 59 लाख 25 हजार 925 पल्योपम से अधिक नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

15. नवकार महामंत्र की स्थिर चित्त से विधिपूर्वक माला (108 मणके)गिनने का फल 21 लाख तिरसठ हजार दो सौ सड़सठ पल्योपम के नारकी जीवन का आयुष्य क्षय होता है।

16. नवकार मंत्र की घर में सामान्य माला गिनने से 15 लाख वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

17. नवकार मंत्र की पौषध भवन में सामान्य माला (108 मनके) गिनने से 1.50 करोड़ वर्ष का नारकी आयुष्य क्षय होता है।

18. नवकार महामंत्र की पौषध भवन में मुहर्तानुसार स्थिर चित्त से विधिपूर्वक माला (108 मनके) गिनने से 15 करोड़ वर्ष से अधिक का नारकी आयुष्य का क्षय होता है।

आत्मिक शुद्धि का पर्व पर्युषण

श्री अचलचन्द जैन, सायला

पर्वों और त्यौहारों की भारतीय संस्कृति में जैन धर्म में मनाया जाने वाला पर्युषण पर्व जैन परम्परा का एक महान आध्यात्मिक पर्व है। पर्युषण का शाब्दिक अर्थ है- चारों ओर से सिमट कर एक स्थान पर निवास करना अर्थात् स्वयं में वास करना। इस अवधि में व्यक्ति सांसारिक प्रपंचों यथा माया, मोह, क्रोध, अहंकार, घृणा, हिंसा आदि से दूर रहकर चित्त को निर्मल करता है। इस मायने में यह सभी पर्वों का राजा है, इसलिए इसे पर्वाधिराज पर्युषण कहते हैं। इसे आत्मशोधन का पर्व भी कहा जाता है जिसमें तपस्या से कर्मों की निरि कर अपनी आत्मा को निर्मल बनाया जाता है। इतना ही नहीं यह पर्व दान, शील, तप और शुद्ध भावना के साथ चतुर्विध साधना-आराधना की पुनीत प्रेरणा भी देता है।

पर्युषण पर्व को आध्यात्मिक दिवाली की संज्ञा भी दी गई है। जिस तरह दीपावली पर व्यापारी अपने सम्पूर्ण वर्ष का आय-व्यय का लेखा-जोखा करते हैं, ठीक उसी तरह पर्युषण पर्व पर भी वर्ष भर के पुण्य-पाप का पूरा हिसाब किया जाता है और आत्मा पर लगे कर्मरूपी मल की साफ-सफाई कर उसे निर्मल बनाया जाता है। पर्युषण पर्व सोयी हुई आत्मा को जगाता है एवं आत्मा द्वारा आत्मा को पहचानने की शक्ति देता है। दुनिया में केवल पर्युषण पर्व ही ऐसा पर्व है जो हाथ मिलाने और गले लगाने का ही नहीं, बल्कि पैरों में झुककर क्षमा मांगने की प्रेरणा भी देता है।

इन दिनों साधु वर्ग के लिए पाँच विशेष कर्त्तव्य बताये गए हैं- संवत्सरी, प्रतिक्रमण, केश लोचन, यथाशक्ति तपश्चर्या, आलोचना और क्षमा याचना। इसी तरह गृहस्थों (श्रावकों) के लिए भी कुछ विशेष कर्त्तव्य बताए गए हैं, जिनमें मुख्य हैं- शास्त्रों का श्रवण, यथाशक्ति तप, अभयदान, सुपात्रदान, ब्रह्मचर्य का पालन, आरम्भ-समारम्भ का त्याग, संघ की सेवा और भूलों के लिए क्षमायाचना। पर्युषण पर्व आलस्य एवं प्रमाद त्यागकर धर्म-आराधना एवं तपस्या करने का सन्देश देती है जिससे आत्मिक शुद्धि हो सके।

पर्युषण पर्व के अंतिम दिन संवत्सरी के रूप में मनाया जाता है। उस दिन पूरे वर्ष के दौरान मन, वचन और काया से हुई भूलों के लिए

क्षमा प्रदान करने से मन का मैल एवं वैर की भावना का अन्त होता है। क्षमा मांगना और क्षमा करना दोनों ही नैतिक साहस से भरे काम हैं। पर्युषण का यह पक्ष हमारे सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्धों को नया जीवन देता है। कहते भी हैं कि - क्षमा वीरस्य भूषणम्।

यदि हम प्रतिदिन अपनी आत्मा का शोधन नहीं कर सके तो कम से कम पर्युषण के इन आठ दिनों में तो हमारे चारों ओर फैले विषय-विकारों से मन हटाकर आध्यात्मिक भावों में लीन हो जाना चाहिए। इन दिनों हमारा जीवन धर्ममय होना चाहिए।

धर्म प्रधान व्यक्ति सभी को समान दृष्टि से देखता है। अमीर-गरीब, ऊँच-नीच सभी उसकी दृष्टि में समान होते हैं। इसी समानता से समाज और राष्ट्र में समरसता आती है और उनकी उन्नति होती है।

धर्म प्रधान व्यक्ति न किसी से डरता है और न ही किसी को डराता है। धर्म तो

जीवन की औषधि है। जब मनुष्य इस धर्मरूपी औषधि को ग्रहण कर लेता है तो किसी भी प्रकार के विकार या रोग स्वतः दूर हो जाते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण आध्यात्मिक जीवन जीने का संदेश देती है, जिससे मनुष्य का जीवन मूल्यवान बनता है। इतना ही नहीं यह पर्व क्षमा, सत्य, अहिंसा, जप-तप, पौषध, स्वाध्याय, दान आदि विभिन्न प्रकार के उत्तम सन्देशों को लेकर आता है। आज के इस भौतिकतावादी युग में आत्मशुद्धि के लिए पर्युषण एक श्रेष्ठ पर्व है। पर्युषण के इन संदेशों को आत्मसात करते हुए हम अपने जीवन को आत्मिक शुद्धि के क्षेत्र में गतिमान कर सकते हैं।

पेपराल में चातुर्मासार्थ हेतु विराजित प.पू. आचार्य देवेश की पावन निश्रा में पर्यूषण पर्वाराधना के पश्चात उपधान तप का मुहूर्त प्रदान किया गया है। प.पू. गुरुदेव ने अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद के वार्षिक सम्मेलन हेतु दीवाली त्यौहार के बाद दिनांक 22 नवम्बर 2015 को किए जाने की स्वीकृति प्रदान की है। अतएव परिषद सम्मेलन दिनांक 22 नवम्बर 2015 को आयोजित किया जाएगा। सभी परिषद जन सूचित हों।

सम्यक्त्व गुण को अलंकृत करने वाले पाँच आभूषण

जिनेश्वर देव भगवन्त की कल्याणकारी वाणी से प्रस्फुटित, प्रवाहित और प्ररूपित नवतत्वों और षड्द्रव्यों में जो श्रद्धा रखता है वह सम्यक्त्वी होता है। 'तत्वार्थश्रद्धानां सम्यग् दर्शनः' दशाध्यावी तत्वार्थसूत्र में सम्यग् दर्शन की यही व्याख्या की गई है। सम्यक्त्व गुण को अलंकृत करने वाले पाँच आभूषण हैं। सम्यक्त्व गुण प्राप्त की हुई प्रत्येक आत्मा में ये पाँच लक्षण रूप भूषण समान रूप से बीज रूप में पूर्व से ही मिलते हैं। ये पाँच भूषण इस प्रकार बताए गए हैं–

(1) **शम :** सम्यग्दर्शन प्राप्त पुण्यात्मा अपराध करने वाले पर क्रोध नहीं करती । उसके साथ अशुभ भाव भी नहीं रखती है । कारण यह है कि उसने अपने क्रोध को वश में कर लिया है। वह क्रोश के वश से मुक्त है।

(2) **संवेग :** सम्यग् दृष्टि पुण्यात्मा का संवेग उत्तम श्रेणी का होता है। मोक्ष और मोक्ष के साधनों के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु उसे प्रार्थना योग्य दिखाई नहीं देती। क्योंकि राग–द्वेषादि ममतापूर्ण हैं। मोक्ष ही वास्तविक सुख है।

(3) **निर्वेद :** वेदना को सहन करते प्राणी वेदना से छुटकारा प्राप्त करने का प्रयास करता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त आत्मा को चारों गतियों में घूमना अच्छा नहीं लगता। वह तो सांसारिक दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष का सुख ही चाहता है।

(4) **अनुकंपा :** दीन–हीन, असहाय व्यक्तियों को देखकर जिनका मन द्रवित हो उठे और जो असहाय का दुःख दर्द मिटाने का प्रयास करते हैं। इसअनुकंपा गुण में किसी के भी प्रति भेदभाव की भावना नहीं होती। दयारूप भावाभिव्यक्ति ही अनुकंपा है।

(5) **आस्तिक्य :** देव, गुरु और धर्म में श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति आस्तिक होता है। पश्चानुपूर्वी के अनुसार आस्तिक्य से अनुकंपा, अनुकंपा से निर्वेद, निर्वेद से संवेग और संवेग से उपराम विशेष प्रधानता रखने वाले हैं।

समकित गुणों को दूषित करने के भी पाँच दूषण भाव हैं। इनमें से एक ही दूषण भाव उत्पन्न हो जाए तो वह सम्यक्त्व को नष्ट कर देता

है। ये पाँच दूषण भाव इस प्रकार हैं:-

1. शंका : कहा है 'शंका से समकित जाय।' बार-बार की शंका से श्रद्धा शिथिल होती है, जो सम्यक्त्व को दूषित कर देती है।
2. आकांक्षा : अन्य मत के प्रति हमारा बढ़ता आकर्षण आकांक्षा कहलाती है। जिन मत स्वीकारा और बाद में अन्य धर्म में श्रद्धा पैदा करना आकांक्षा है। यह भी सम्यक्त्व को दूषित करने का कारक है।
3. विचिकित्सा : कार्य की फल प्राप्ति में संदेह करना विचिकित्सा है। तीर्थंकर जी कुछ फरमाते हैं, वही पूर्णतः सत्य है। इसमें शंका करके सम्यक्त्व को दूषित नहीं करना है।
4. मिथ्यादृष्टि प्रशंसा : मिथ्यात्वियों की प्रशंसा कर श्रद्धा को विचलित करने सेअपने को बचाना चाहिए। अन्यथा हम सम्यक्त्व से पीछे छूट जाएंगे। मिथ्यात्वियों की प्रशंसा करके श्रद्धा को दूषित करना ठीक नहीं।
5. मिथ्यादृष्टि राग : मिथ्या धर्मानुयायियों के साथ रहना, परिचय, चर्चा और व्यवहार करना सम्यक्त्व से पथभ्रष्ट होने का मार्ग है।

– शान्तिलाल सगरावत

मनुष्य स्वयं ही मित्र और शत्रु

मनुष्य स्वयं का मित्र होता है यह जानो,
और शत्रु भी कहलाता, खुद पहचानो।
होती चाह उसकी आध्यात्मिक न लौकिक उन्नति,
ताकि बन सके उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा महत्ति।
काम, क्रोध व मोह नरक के हैं तीन द्वार,
इन्हें त्यागने पर ही हो जाता है जीवन उद्धार।
जिन्हें अपनाने से अवश्य होता है मानव सर्वनाश,
जीवन में उसे कभी नहीं होना चाहिए हताश।
मानव कल्याण के भी बताए गए तप चार,
बुजुर्गों, ब्राह्मणों, गुरुजनों व माता-पिता हेतु विचार।
इनकी आज्ञा का पालन व सेवा करना है धर्म,
हे मानव! अपने स्वार्थ के साथ समझ यह कर्म।
परमपिता परमेश्वर की प्राप्ति का करें दृढ़ संकल्प,
स्वर्ग प्राप्ति तजने का हम निर्मित करें आकल्प।
गीता का अध्ययन कर बनाएं कर्म प्रधान,
तभी होगा जीवन सफल पाएं फल महान।
फल पाकर बनें सामाजिक जीवन, अस्तित्व की पहचान,
फिर भी धर्म-कर्म में लगा रहे तू इन्सान।
आज मानव ही मानव का है यहाँ दुश्मन,
रखें हम ऐसे सद्व्यवहार ताकि विश्व बने परिजन।

–ओंकारसिंह त्यागी
(पूर्व प्राचार्य)

ગુર્જર જૈન જયોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૪૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

શ્રી મધુકર મહાવીરની જય હો...
દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી ગુરૂભ્યો નમઃ

ગ્રહ, નક્ષત્રો અને તારા સતત ફરતા રહે છે પણ ધ્રુવ તારો સદા સ્થિર અને ઝગમગતો રહે છે. તેમ દુનિયાના લોકો ભલે આઘા પાછા થઈ જાય પરંતુ યુગ પ્રભાવક જયંતસેનસૂરિ સદાસ્થિર અને ઝગમગતા રહ્યા છે અને રહેશે.

પેપરાલની પવિત્ર માટીના પનોતા પુત્ર યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનું ચાતુર્માસ ઐતિહાસિક, યશસ્વી, જયવંતુ અને પુણ્યવંતુ બની રહે એવી અંતકરણપૂર્વકની હાર્દિક શુભેચ્છા.

પોતાના ગુરૂનું ચાતુર્માસ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં સંપન્ન થવા જતાં પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. એ મોટી સિધ્ધિ હાંસલ કરી હોય તેવો અંતરમાં આનંદોત્સવ...

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર પોતાના ગુરૂના પ્રથમ ચાતુર્માસથી હોનહાર સમસ્ત તેજસ્વી શિષ્યરત્નો સહિત સાધ્વીજી ભગવંતોમાં હર્ષની હેલી..

તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., તેજસ્વીરત્ન પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી સિધ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા., તેજસ્વીરત્ન પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી વિદ્વવદ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા., આદિ શિષ્યરત્નોના સીધા માર્ગદર્શન હેઠળ ગુરૂ જન્મભૂમિ બની ઈન્દ્રપુરી નગરી...

નિ ત્ય રોજ સક્રિય રહ્યા તમે...

ત્યા ગ કર્યો ઘઉં અને દુધનો તમે...

નં દનવન જેવું નિર્માણ કરાવ્યું પેપરાલ તીર્થને તમે...

દ ર્શન કરાવ્યાં સકળ સંઘને તમે...

વિ ખ્યાતિ પેપરાલતીર્થની જગમાં ફેલાવી તમે...

જ યંત શિષ્ય રંગ રાખ્યો તમે...

ય શોગાન ગાઈએ તમારા અમે...

દાદા ગુરૂની જન્મ ભૂમિથી વર્તમાન ગુરૂની જન્મભૂમિમાં અખંડ જ્યોત પ્રજ્વલિત

પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીની પ્રેરણાનુસાર સંવત ૨૦૬૩ ના પોષ સુદ-૭ ને બુધવાર તા. ૨૭-૧૨-૨૦૦૬ ના રોજ સમાધિ મંદિર શ્રી મોહન ખેડા તીર્થ ખાતે સ્થાપિત અખંડ જ્યોતથી જ્યોતને પ્રજ્વલિત કરી કાશ્મીરથી કન્યાકુમારી સુધીનું જ્યોતને રથમાં બિરાજમાન કરી પરિભ્રમણ કરાયું હતું અને તે જ્યોત દ્વારા દાદા ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી ભરતપુર તીર્થ ખાતે તા. ૨૩-૪-૨૦૦૭ ના રોજ સ્થાપિત કરાઈ હતી જે જ્યોતથી જ્યોત પ્રજ્વલિત કરી વર્તમાનગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલતીર્થ ખાતે પૂજ્યશ્રીના પ્રથમ ચાતુર્માસના પુનિત પગલે સ્થાપિત કરાયેલ છે.

ડીસા નગરે.....
ગુજરાત પ્રદેશ પરિષદનું દ્વિતિય સંમેલન યોજાયું

સંવત ૧૯૭૨ ના વર્ષમાં ચર્ચા ચક્રવતી પરમ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજયધનચંદ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ તરીકે અલંકૃત થયેલ પિતામ્બર વિજેતા પરમ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., દ્વારા સ્થાપિત શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ તથા શાશ્વતધર્મ હિન્દિ માસિકની પ્રાણથી પ્યારા પાર્વતી સ્વરૂપના દુલારા અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયની આંખોના તારા સમા હોનહાર શિષ્યરત્ન શ્રી જયંતવિજયજી મ.સા. ને પૂજ્ય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજીએ સંપૂર્ણ જવાબદારી સોંપી હતી. ગુરૂના આશીર્વાદ અને પોતાની કુનેહથી પોતાના ગુરૂએ સોંપેલી જવાબદારીને શિરોધાર્ય કરી ભગીરથ પુરૂષાર્થ થી યુવક પરિષદ સાથે સાથે મહિલા તરૂણ અને બાલિકા પરિષદને વિશ્વવ્યાપી સફળતા અપાવી અત્યારે અદકેરૂં ગૌરવ બક્ષી રહ્યા છે. જ્યારે સમાજમાં અતિલોકપ્રિય બનેલ શાશ્વતધર્મ માસિક પણ નિયમિત પ્રકાશિત થઈ રહેલ છે.

પૂજ્ય ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. એ તેમની દીર્ઘદ્રષ્ટિ વડે અનમોલ રત્નને પારખી એક નાના છોડરૂપી પરિષદની તથા શાશ્વતધર્મની ધુરા સંભાળવાની જવાબદારી જે શિષ્યરત્નને સોંપેલી જે નાના છોડમાંથી વટવૃક્ષ બનાવવા કેટલી જહેમત ઉઠાવી છે તે સમસ્ત સમાજજનો જોઈ રહ્યા છીએ.!! લાખો કિ.મી. નો વિહાર. એંસી વર્ષની પાકટ ઉંમરે કોઈપણ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમમાં પાંચ પાંચ કલાક સુધી પલાંઠીવાળીને બેસી રહેવું. જેમની ભુરી ભુરી અનુમોદના કરી આજની નવી પેઢી પણ કોટી કોટી વંદના કરી ધન્યતા અનુભવે છે તેવા યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની અસીમ કૃપાથી યુવક, મહિલા, તરૂણ અને બાલિકા પરિષદની ૩૦૦ થી વધુ શાખાઓની કર્તવ્યનિષ્ઠ સેવા કાર્યરત છે. વર્તમાનકાળમાં પરિષદની તમામ શાખાઓ માનવતા, જીવદયા, સાધર્મિક ભક્તિ અને શાસન પ્રભાવક કાર્યો કરી જે પ્રગતિ કરી રહી છે તે સુર્વણ અક્ષરે લેખવા યોગ્ય છે.

ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી સંઘ એકતાના શિલ્પી, ભારતભરની ધન્યધરા પર ૬૧ વર્ષ સુધી વિહરી જિન શાસનનો ડંકો વગાડનાર, લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, જિન શાસનના રાજા, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ મુનિ મંડળ અને પૂજ્ય સાધ્વીજી મંડળની પાવન નિશ્રામાં ડીસાનગરના આંગણે ગુજરાત પ્રદેશ

પરિષદના દ્વિતીય સંમેલનનું આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૧ ના પ્રથમ અષાઢ સુદ-૧૧ ને રવિવાર તા. ૧૨-૭-૨૦૧૫ ના રોજ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અને ડીસા તથા શાખા ડીસા પરિષદ દ્વારા આયોજીત આ સંમેલનમાં ભાગ લેવા ગુજરાત પ્રદેશ પરિષદના અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ છોટાલાલ દેસાઈના માર્ગદર્શન હેઠળ ગુજરાતની તમામ પરિષદના પદાધિકારીઓ સહિત કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરો મોટી સંખ્યામાં ઉમટી પડેલ હતા. કેન્દ્રીય પરિષદના પદાધિકારીઓ સાથે કેન્દ્રીય સંઘ અધ્યક્ષ પણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આમંત્રિત પરિષદના પદાધિકારીઓ અને કાર્યકરો માટે આવાસ-નિવાસ અને નાસ્તા-જમવાની સુંદર વ્યવસ્થા ડીસા પરિષદ દ્વારા કરવામાં આવી હતી.

પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ નેમિનાથનગર ડીસા ખાતે રચાયેલ સંમેલનના મંડપમાં વાજતે-ગાજતે પધરામણી કરી હતી. સવારે ૧૦-૦૦ કલાકે પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં સંમેલનના કાર્યક્રમની શરૂઆત કરાઈ હતી. કાર્યક્રમના પ્રારંભે ધ્વજવંદન કરાયું હતું. ત્યારબાદ બાલિકા પરિષદની બાળાઓ દ્વારા સ્વાગત નૃત્ય કરાયું હતું. ડીસા સંઘ પ્રમુખ શ્રી નવિનભાઈ ભોગીલાલ વીરવાડીયા તેમજ ડીસા પરિષદ પ્રમુખ શ્રી જગદીશભાઈ મફતલાલ દોશીએ સ્વાગત પ્રવચન કર્યુ હતું. પ્રથમ સત્રમાં બહુમાનનો કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. સૌધર્મબૃહતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ બબલદાસ વોરા, રાષ્ટ્રીય પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ બચુભાઈ ધરૂ, રાષ્ટ્રીય પરિષદ મહામંત્રી શ્રી અશોકભાઈ શ્રી શ્રીમાલ ગુજરાત પ્રદેશ પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ છોટાલાલ દેસાઈ, શ્રી ગોખરૂજી, આમંત્રિત મહેમાન ડીસા તુલાકાના ધારાસભ્ય શ્રી ગોવાભાઈ દેસાઈ, ખેતીવાડી ઉત્પન્ન બજારના ચેરમેન શ્રી માવજીભાઈ દેસાઈ વિગેરેનું જાજરમાન સંગીત સાથે ડીસા સંઘ અને પરિષદ દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું જ્યારે ગુજરાત પ્રદેશના મહિલા અધ્યક્ષ શ્રીમતી રમીલાબેન સેવંતીલાલ ભણસાળીનું બહુમાન ડીસા પરિષદના અધ્યક્ષ શ્રીમતી મંજુલાબેન દીનેશભાઈ ધરૂએ કર્યું હતું. બહુમાન કાર્યક્રમ બાદ રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓ અને ગુજરાતની વિવિધ શાખાઓના પ્રતિનિધિઓએ તેમની સંસ્થા દ્વારા સેવાના કાર્યો થયેલ તેની વિગતો રજુ કરેલ હતી.

કાર્યક્રમને આગળ વધારતાં શ્રોતાજનોને સંબોધી શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, શ્રી અશોકભાઈ શ્રી શ્રીમાલ, શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ, શ્રી નવિનભાઈ વીરવાડીયા, શ્રી જ્યંતિલાલ સંઘવી (વકીલ), શ્રી જગદીશભાઈ દોશી, શ્રી માવજીભાઈ દેસાઈ, શ્રી રમેશભાઈ દોશી (અનોખી) શ્રી ચિરાગભાઈ ભણસાલી

વિગેરેએ તેમની આગવી શૈલીમાં ચોટદાર પ્રવચન કરી સહુને તાળીઓના ગડગડાટ કરવા મજબુર કર્યા હતા.

પ્રથમ સત્રના અંતે પૂજ્યશ્રીએ તેમની મખમલી વાણીમાં પ્રવચન ફરમાવ્યું અને પરિષદના સભ્યોની કામગીરીને બિરદાવી વધુમાં વધુ ઉન્નતિ અને પ્રગતિ કરવા હાકલ કરી હતી ત્યાં જય જયકારના નારાઓથી સંમેલન મંડપ ગુંજી ઉઠ્યો હતો. શ્રી પેપરાલ તીર્થના ટ્રસ્ટીશ્રીઓ દ્વારા પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશમાં પધારવા અ.ભા. સમસ્ત સંઘને આમંત્રણ અપાયું હતું. પ્રથમ સત્ર પૂર્ણ થતાં સહુ કોઈને ભોજનને ન્યાય આપ્યો હતો.

બીજા સત્રનો પ્રારંભ બપોરે ૨-૩૦ કલાકે થયો હતો. પૂજ્યશ્રીના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા. એ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. અને પરિષદની ગતિવિધિઓની સમજણ આપી હતી. પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્ર્યરત્ન વિજયજી મ.સા. તથા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપૂર્ણરત્નવિજયજી મ.સા. ની પાવન નિશ્રામાં રાષ્ટ્રીય પદાધિકારીઓ અને ગુજરાત પ્રદેશ પરિષદ અધ્યક્ષની ઉપસ્થિતિમાં ગુજરાતની યુવક, મહિલા, તરૂણ અને બાલિકા પરિષદના પ્રતિનિધિઓએ વર્ષ દરમ્યાન તેમની સંસ્થા દ્વારા થયેલ સેવાના કાર્યોની છણાવટ કરી હતી.

તરૂણ પરિષદમાં ભાગ લેવા સાથે મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન તથા જૈન પાઠશાળાઓમાં અભ્યાસ કરી નાની વયના ભુલકાઓ પણ કેવા ઉચ્ચ કોટીના સંસ્કારો પ્રાપ્ત કરી શકે તે શીલ કોરડીયા, ધ્વજ વોહેરા અને પંડિતવર્ય શ્રી કૃનાલભાઈ શાહે આપેલ કેળવણીના ફળરૂપે પાઠશાળામાં પ્રવેશ કરતા સુરવાળ-ઝભ્ભો, ખેસ અને પાઘડીમાં બાળકો વિગેરે આજની નવી પેઢી માટે ધર્મ સંસ્કારોનું સિંચન કરતુ જીવંત ઉદાહરણ છે. આ કાર્યક્રમમાં સુંદર સંગીત શ્રી કૃનાલભાઈ શાહે પીરસ્યુ હતું અને સ્ટેજ સંચાલન શ્રી વિનોદભાઈ કોરડીયાએ કર્યું હતું. અમારા તમારા સહુના લાડીલા ધર્મશ્રેષ્ઠી શ્રી હસમુખભાઈ વેદલીયાએ એમની વાણીના ચાર શબ્દોએ મંડપમાં શાંતિ પ્રસરાવી દીધી હતી.

ત્યારબાદ ચારેય પરિષદની સેવાને બિરદાવી નિયમ મુજબ ક્રમવાર સુરત, અમદાવાદ અને નડીઆદની વિજેતા પરિષદને પુરસ્કાર આપી પ્રોત્સાહિત કરાઈ હતી. દરેકને પ્રભાવના રૂપે પેન અને ડાયરીનું વિતરણ કરાયું હતું.

અંતમાં આયોજક સંઘ અને પરિષદે સહુનો આભાર માન્યો હતો અને ટ્રાવેલીંગ બેગ આપી બહુમાન કર્યું હતું.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે...
યુગ પ્રભાવક પૂજ્યશ્રી સપરિવારનો
ધામધૂમપૂર્વક ઐતિહાસિક ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ...
ભક્ત સમુદાયનું ઉમટ્યું ઘોડાપુર

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશમાં ઉપસ્થિત રહેવા ધર્મશાળાઓ બુક કરાવતા શ્રધ્ધાવંત ભક્તો...!! પાલનપુર, ડીસા, પેપરાલ, ભોરલ, થરાદ વિગેરે સ્થળોની ધર્મશળાઓ એક માસથી પેક...!! થરાદના જૈનોના લગભગ તમામ ઘરો ખુલ્લાં મુકાયા. ઘર માલિકો સાથે આવતા મહેમાનોની ભાડુઆત પરિવારો દ્વારા અનેરી સરભરા...!! શ્રી પેપરાલ તીર્થે પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશને દીપાવવા પધારેલા શ્રધ્ધાવંત ભક્તોથી ૨૧ જુલાઈની રાત્રી એ થરાદનગરમાં ઉભરાયો માનવમહેરામણ... શેરીઓ ગુંજી ઉઠી.

પરમપૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના છઠ્ઠા આધ્યાત્મિક વારસ જે વાત્સલ્ય મૂર્તિના સાનિધ્યમાં શંકાઓ શમે છે. દ્વિધાઓ દુર થાય છે, આઘાત અદશ્ય થાય છે. મન શાંતિનો અનુભવ કરે છે. અને નિર્વ્યાજ વાત્સલ્યની અપાર વર્ષામાં બાળકો, યુવાનો, વૃધ્ધો, ભણેલા કે અભણ, દેશના કે વિદેશના સૌ કોઈ ધન્ય બની જાય છે. જેઓના ૬૧ વર્ષ દીક્ષા પર્યાય સમય દરમ્યાન કઠીન પુરૂષાર્થથી એક વિરાટ તંદુરસ્ત ચારિત્ર્યવાન સમાજ ખડો થયો છે. શાસન-સમાજ-ગચ્છ અને માનવતાના કાર્યોથી લઈને અબોલ પશુઓ સુધી જેમની કરૂણા વહી રહી તેવા વિશ્વની વિરલ સંત વિભૂતિઓમાં અગ્રસ્થાને નામ અંકિત કરનાર "બીજાના ભલામાં આપણું જ ભલું" ના સુત્રધાર-સમાધાન વૃતિ ધરાવનાર અને લાખો લોકોને ધર્મની હુંફ આપનાર યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., શ્રી પેપરાલ તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. તથા હોનહાર તેજસ્વી શિષ્યરત્નો અને વિશાળ સંખ્યામાં પૂ. સાધ્વીજી ભગવંતોનું ચૈત્ર માસમાં ચાતુર્માસ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં નક્કી થતાં જ સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના લાખો ભક્તોના મનના મોરલીયા નાચવા લાગ્યા હતા.

શ્રી જયંતસેનસૂરી જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાના પ્રથમ ચાતુર્માસ ને સુવર્ણ અક્ષરે લેખવા યોગ્ય તડામાર તૈયારીઓ આદરી દીધી હતી. જૈનોના ચારેય ફીરકાઓમાં આ ચાતુર્માસ ધર્મભાવનાથી ગુંજી ઉઠે તે માટેનું તમામ માર્ગદર્શન પૂજ્ય વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. એ પુરૂં પાડ્યું હતું અને તેમના ગુરૂભાઈઓના સાથ સહકારથી શ્રી પેપરાલ તીર્થને ઈન્દ્રપુરીનગરી જેવું નિર્માણ કરાવી ગુરૂનું ઋણ અદા કરતું સ્વપ્ન સાકાર કર્યું હતું.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ચાતુર્માસ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થે પ્રથમવાર થતાં ચાતુર્માસ પ્રવેશમાં ઉપસ્થિત રહેવા હજ્જારો ભક્તોની ઈચ્છા પ્રબળ બની હતી. દુરથી આવનાર ભક્તોએ બે બે માસ અગાઉ ટ્રેઈનની ટીકીટો બુક કરાવી લીધી હતી. પાલનપુર, ડીસા, ભીલડીયાજી, ભોરલ, પેપરાલ, થરાદ વિગેરે સ્થળોએ જે જૈન ધર્મશાળાઓ શ્રી પેપરાલ તીર્થની નજીક છે તે એક માસ અગાઉ બુક કરાવી લીધી હતી. કેટલીક બસના ભક્તોતો ભીનમાલ રાત્રી રોકાણ કરી સવારે સ્નાન વિગેરે પતાવી પૂજ્યશ્રીના પ્રવેશોત્સવમાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. તે પણ જાણવા મળ્યું હતું. જ્યારે થરાદનગરમાં જૈન પરિવારોએ જે મકાન ભાડે આપેલ છે તે ભાડુઆત પરિવારોને અગાઉથી સુચના આપી દીધી હતી કે તા. ૨૧મી જુલાઈની સાંજથી મહેમાનો સાથે અમે આવી પહોંચીશું સ્નાન માટે પાણીની વ્યવસ્થા કરી રાખજો તે મુજબ જ બન્યુ હતું અને થરાદનગરના જૈનોના તમામ ઘર લગભગ ખુલ્લા મુકી દેવાયા હતા. ભાડુઆત પરિવારોએ પણ અનેરી સરભરા કરી પ્રવેશોત્સવમાં ઉપસ્થિત રહેવા ઈચ્છા દર્શાવી હતી. થરાદ પંથકના જૈન-જૈનેતર સહુ કોઈ જાણે છે કે પૂજ્યશ્રીનો પ્રવેશ જોવો અને તેમના દર્શન કરવા તે પણ એક મોટો લ્હાવો છે.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ તથા વિશાળ સંખ્યામાં સાધ્વીજી ભગવંતોનો સંવત ૨૦૭૧ ના દિ. અષાઢ સુદ-૬ ને બુધવાર તા. ૨૨-૭-૨૦૧૫ ના રોજ શ્રી જયંતસેનસૂરી જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ શ્રી પેપરાલ તીર્થ દ્વારા શ્રી પેપરાલ તીર્થે ધામધૂમપૂર્વક ઐતિહાસિક ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો. જેતડાથી શ્રી પેપરાલ તીર્થ સુધી ભક્ત સમુદાયનું ઘોડાપુર ઉમટ્યું હતું. જય ગુરૂદેવના નામ સાથે શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં શ્રધ્ધાવાન ગુરૂભક્તોનો માનવ મહેરામણ ઉભરાયો હતો અને આ વિસ્તારના માર્ગો ગુંજી ઉઠ્યા હતા.

પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવ શ્રી સપરિવારના પ્રથમ ચાતુર્માસ અર્થે આ શુભાગમનથી હરખઘેલા બની ગયેલા સમસ્ત શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘો અને ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી જયંતસેનસૂરી જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગ નિમિત્તે શ્રી પેપરાલ તીર્થના બે કિ.મી. ના ઘેરાવામાં આવતા માર્ગોને અદ્ભુત રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા.

ધજા-પતાકા અને ફુલોના તોરણો તેમજ કમાનો અને વિવિધ સ્થળે તસ્વીર સહિત વિશાળ દરવાજા ઉભા કરાયા હતા. શ્રી પેપરાલ તીર્થને ઈન્દ્રપુરીનગરી જેવો ઓપ અપાયો હતો. અને વિરાટ શમિયાણાની રચના કરાઈ હતી.

અંદાજીત બેય કિ.મી. દુર અંતરથી પ્રારંભાયેલ ચાતુર્માસ પ્રવેશની શોભાયાત્રામાં નવગજરાજ (હાથી) નવ બેન્ડ, નવ બગી, સુશોભિત બગીમાં ગુરૂવર્યોના ફોટા, એક બગીમાં મા પાર્વતી અને પિતા સ્વરૂપચંદજીના ફોટા, મહિલાઓની અલગ-અલગ દાંડીયા રાસ લેતી ટુકડીઓ, નાચગાન સાથે ભક્તોનો ગુલાલી અને ઉમંગી ઉત્સાહ, બેન્ડ મંડળીઓની ધુન, દેશી ઢોલ, શહનાઈ વાદકની મંડળીઓ, ભિન્ન ભિન્ન કલાકારોની નૃત્યકલા વિગેરે આ ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશની શોભાયાત્રામાં આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગને દીપાવવા પધારેલા શ્રધ્ધાવાન ગુરૂભક્તો સાથે આ વિરાટ શોભાયાત્રાએ નાચ-ગાન અને ગુલાલી ઉમંગથી છોળો ઉડાડી વાજતે ગાજતે શ્રી પેપરાલતીર્થના મુખ્ય પ્રવેશ દ્વારેથી પ્રસ્થાન કર્યું હતું. દરમ્યાન બેન્ડવાજાની સુરાવલી અને ઢોલોના ધબકારા સાથે ભવ્યાતિભવ્ય સ્વાગત કરાયું હતું. સામૈયામાં શ્રી પેપરાલતીર્થ અને અજુબાજુના ગામોના જૈન પરિવારો સાથે દરબાર, રજપુત, પટેલ, દરજી, સોની વિગેરે કોમના પરિવારો સહિત સમસ્ત જૈનેતર પ્રજા હજ્જારોની સંખ્યામાં જોડાઈ હતી.

આ અવસરે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના લગભગ તમામ અગ્રણીઓ સહિત ગુજરાત, રાજસ્થાન મધ્યપ્રદેશ, આંધ્રપ્રદેશ, તામીલનાડુ, મહારાષ્ટ્ર, કર્ણાટક વિગેરે સ્થળોએથી ગુરૂભક્તો વિશાળ સંખ્યામાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ રંગબેરંગી રંગોળીઓ અને અવનવી ગહુલીઓથી સજાવેલ શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે રચાયેલ વિરાટ શમીયાણામાં પ્રવેશ કર્યો હતો. અને ત્યારબાદ માંગલિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. પ્રવચન વખતે હેકડેઠઠ જન્મમેદનીની ભીડ જામી હતી. ઉપસ્થિત શ્રાવકોએ પૂજ્યશ્રીની મખમલી વાણીનું શ્રવણ કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશ બાદ સમસ્ત જૈન સંઘ અને જૈનેતર પરિવારોમાં ઉત્સાહ અને આનંદનો માહોલ સર્જાઈ ગયો છે. પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાની ચાતુર્માસ સ્થિરતા દરમ્યાન પુરતો સાથ સહકાર આપવાની સમસ્ત કોમના આગેવાનોએ ભાવના વ્યક્ત કરી છે.

ચાર માસના નાના ગામના વિરાટ કાર્યક્રમોને અનુભવીને સમાજના વક્તાશ્રીઓએ શ્રોતાજનોને સંબોધી અનુમોદનીય વિચારો વ્યક્ત કર્યા હતા. આ પ્રસંગને દીપાવવા પધારેલા મહેમાનો માટે આવાસ-નિવાસ અને ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી.

પૂજ્યશ્રીના આદિઠાણાનું આ ચાતુર્માસ ઐતિહાસિક યાદગાર અને યશસ્વી બની રહે તેવું સુંદર આયોજન શ્રી જયંતસેનસૂરી શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલ દ્વારા ઘડાયું છે.

ટૂંકુ ને ટચ

- પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશને હાર્દિક શુભેચ્છા પાઠવતો ગુજરાતના મુખ્યમંત્રી શ્રીમતી આનંદીબેન પટેલનો સંદેશ
- થરાદ જૈન સમાજના લોક લાડીલા શ્રી પરબતભાઈ પટેલની ઉપસ્થિતિ.
- સાહિત્ય જગતની ખ્યાતનામ સંસ્થા દ્વારા પૂજ્યશ્રીને ડૉ. તરીકેની પદવી.
- વિશ્વના ગગનમાં ગાજી ઉઠેલ પૂજ્યશ્રીનો ચાતુર્માસ પ્રવેશ અને શ્રી પેપરાલ તીર્થની ખ્યાતિ કોઈની કાળી નજરની ઝપટમાં.
- મેઘરાજા એ મુશળધા વરસાદ વરસાવી કાળી નજરને ધોઈ નાંખી. પુનઃ શ્રી પેપરાલ તીર્થ બન્યું ઈન્દ્રપુરી નગરી
- શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રની આરાધના સાથે શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને ધર્મ આરાધનાથી ગુંજી ઉઠશે શ્રી પેપરાલ તીર્થ.

ચાતુર્માસ પ્રવેશ તસ્વીરી ઝલક

पेपराल मे जन्मे धरुकुल के तीन रत्न

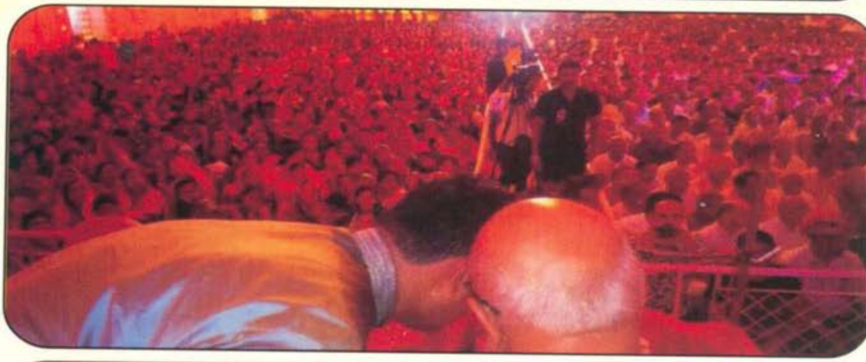

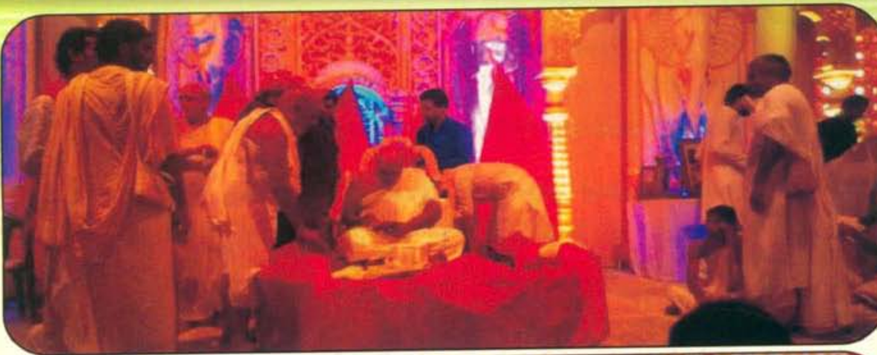

બનાસકાંઠા જીલ્લાના કેટલાય ગામોને અતિવૃષ્ટિએ ભાંગી નાંખ્યા : ગ્રામજનો બેઘર બની ગયા... એક લાખથી પણ વધુ પશુઓએ મોતની ચાદર ઓઢી.

ગત જુલાઈ માસમાં કચ્છ સાથે સમસ્ત બનાસકાંઠા જીલ્લાને ધમરોળી નાખનાર કોપાયમાન મેઘરાજાએ ઠેર ઠેર બરબાદીનો વરસાદ વરસાવ્યો હતો. બનાસકાંઠા જીલ્લામાં પશુધનની જાનહાનીના મોટા આંકડા સાથે માલ મિલકતને પણ મોટા પાયે નુકશાન થયું છે. ખાસ કરીને સુઈગામ વિસ્તારના ગામોની તો સકલ જ બદલાઈ ગઈ છે. કેટલાય ગામોને અતિવૃષ્ટિ એ ભાંગી નાખ્યા હતા અને ગ્રામજનો બે ઘર બની ગયા હતા. મેઘરાજાના આ કોપે નાના નાના ગામોમાં કાચા મકાનોને લગભગ જમીનદોસ્ત કરી દીધા હતા. અતિવૃષ્ટિની દુ:ખાન્તિકાએ બનાસકાંઠા જીલ્લામાં વેરેલી તબાહીના અહેવાલોથી બનાસવાસીઓ હચમચી ઉઠ્યા અને સમગ્ર જીલ્લામાં અસરગ્રસ્ત લોકો માટે અનુકંપાનું મોજું ફરી વળ્યું હતું.

અસરગ્રસ્ત લોકોના આંસુ લુછવા રાહત સામગ્રી લઈ બનાસવાસીઓ પહોંચી ગયા હતા. અને અસરગ્રસ્ત પરિવારોને આશ્વાસન આપ્યું હતું.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ સંખ્યામાં સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો થરાદ તાલુકાના શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજમાન હતા તે શ્રી પેપરાલ તીર્થનો પણ સંપર્ક થઈ શકતો નથી તેવી ઉડતી વાત મળવાથી સમગ્ર થરાદ જૈન સમાજમાં ઉંડી ચિંતાની ઘેરી લાગણી પ્રસરી ગઈ હતી. દરેક સંઘોમાં મીટીંગ યોજાઈ હતી અને દરેક સંઘોના અગ્રણીઓ જ્યાંથી જે રસ્તો મળ્યો તે રસ્તેથી પૂજ્યશ્રી પાસે પહોંચી ગયા હતા અને પૂજ્યશ્રી સપરિવારને સુખરૂપ જોઈ રાહતનો દમ ખેંચ્યો હતો. શ્રી પેપરાલ તીર્થના ટ્રસ્ટીઓ, ડીસા-લાખણી સંઘ અને પરિષદના કાર્યકરોએ કેડ સમા પાણીમાં જઈ ઉકાળેલા પાણી અને ગોચરીની વ્યવસ્થા કરી હતી તેનું વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી ! પૂજ્યશ્રી પાસે આવનાર સહુ કોઈને પ્રેરણા આપતા રહ્યા હતા કે અમે તો સુખશતામાં છીએ પણ જે જે ગામોમાં અતિવૃષ્ટિના કારણે લોકો મુશ્કેલીમાં મુકાઈ ગયા છે તેમની મદદે પહોંચી જાઓ. પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાથી મુંબઈ-સુરત-અમદાવાદ-આણંદ-નડીઆદ-ડીસા- લાખણી વિગેરે સંઘોના અગ્રણીઓ અને પરિષદના કાર્યકરો રાહત સામગ્રી લઈ અસરગ્રસ્ત વિસ્તારોમાં પહોંચી ગયા હતા જરૂરિયાતમંદોને જોઈતી મદદ કરી હતી.

પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીની દર્દભરી પ્રેરણાથી... અસરગ્રસ્તોના આસું લુંછવાનો શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદનો સ્તુત્ય પ્રયાસ : રાહત અભિયાન હાથ ધરાયું.

બનાસકાંઠામાં અતિવૃષ્ટિ એ ગત જુલાઈ માસમાં વેરેલી તબાહીએ મોટું નુકશાન પહોંચાડ્યું છે. સમગ્ર દેશમાંથી અસરગ્રસ્ત લોકો માટે અનુકંપાની સરવણી વહી રહી હતી. ત્યારે યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની દર્દભરી પ્રેરણાથી શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘો તેમજ પરિષદોએ અસરગ્રસ્ત લોકોની સેવા માટે છુટા હાથે દાનની સરવાણી વહાવી હતી. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ ગુજરાત અધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈના નેતૃત્વ હેઠળ થરાદ, ડીસા, લાખણી, પીલુડા, નારોલી, પાલનપુર, અમદાવાદ, નડીઆદ, રાજકોટ, આણંદ, સુરત અને મુંબઈમાં વસતા થરાદવાસીઓએ મોટા પાયે રાહત અભિયાન હાથ ધરી અસરગ્રસ્ત લોકોના આંસુ લુછવાનો સ્તુત્ય પ્રયાસ કર્યો હતો.

સમસ્ત શહેરોની પરિષદના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરો ટ્રકો અને અલગ-અલગ વાહનોમાં જીવન જરૂરિયાત સામગ્રી લઈ થરાદ ખાતે પહોંચી ગયા હતા. થરાદનગરના મુખ્ય દ્વારે સ્થિત વરખડી ધામથી પૂજ્ય જયંતસેન સૂરિના બેનર લગાવી થરાદ પંથકના આંતરિયાળ ગામોમાં પહોંચી ગયા હતા અને અસરગ્રસ્ત લોકોને આશ્વાસન આપી જોઈતી ચીજ વસ્તુ આપી હતી. કેટલાય વિસ્તારોમાં તો મુશ્કેલીમાં હોવા છતાં રાહત સામગ્રી નહીં લેવાનો આગ્રહ રાખતા હતા કેવી ખુમારી.. !! પરિષદના કાર્યકરો એ આંખમાં આંસુઓ સાથે અસરગ્રસ્ત લોકોને વિનંતી કરી જોઈતી સામગ્રી આપી ધન્યતા અનુભવી હતી. અસરગ્રસ્ત લોકોના આંસુ લુછવા સાથે પશુઓ તરફ પણ કરૂણા વરસાવી કેનાલમાંથી જીવંત પશુઓને બહાર લાવી દવા કરવાની નેત્રદિપક કામગીરી કરી હતી જ્યારે નડિયાદના જીવદયા પ્રેમી શ્રી મનીષભાઈ ભટ્ટે તો પશુઓની સારવાર માટેના ઈન્જેકશનો અને દવાનો મોટો પુરવઠો લઈ નડિયાદ પરિષદ સાથે જોડાઈ અનુમોદનીય અને અભિનંદન જેવી ઉત્કૃષ્ટ સેવા આપી કેટલાય પશુઓને જીવતદાન અપાવ્યું હતું. થરાદ પંથકના ગામો ગામ ખુંદી વળી પરિષદોના કાર્યકરોએ જે નિષ્ઠાપૂર્વકની કામગીરી બજાવી હતી તે અનુમોદનીય અને અભિનંદનીય બની રહી હતી.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે જલપ્રલય

શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નડિયાદના નેજા હેઠળ પરિષદના કાર્યકરોની પ્રશસ્ય જહેતમ...

બનાસકાંઠા જીલ્લાના દરેક તાલુકાના ગામો અતિવૃષ્ટિની આપત્તિનો ભોગ બની ગંભીર રીતે અસરગ્રસ્ત થયા હોવાનું જાણવા મળતાંની સાથે જ શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નડિયાદના નેજા હેઠળ પરિષદની એક તાત્કાલિક મીટીંગ યોજાઈ હતી અને પરિષદ પ્રમુખ શ્રી દિપકભાઈ શાંતિલાલ વોહેરાની રાહબરી હેઠળ અતિવૃષ્ટિ નો ભોગ બનનાર અસરગ્રસ્ત લોકોની મદદે જવા વિચારણા કરાઈ હતી. જ્યારે આવા માનવતાના કાર્યો માટે પ્રથમ ઠેકડું મારવાની હોંશ ધરાવતા હર્ષઘેલા માનવતાવાદી શ્રી પિયુષભાઈ રસીકલાલ વોહેરા એ આ કામમાં વિલંબ ન કરવા અને તાત્કાલિક રાહત સામગ્રી એકઠી કરવા આહ્‌વાન કર્યું હતું. એકતા શિરોમણીથી પ્રચલિત નડિયાદ સંઘના સભ્યો અને પરિષદ કાર્યકરો ઉત્સાહિત બની ગયા હતા અને રાતો રાત રાહત સામગ્રી એકઠી કરી ૩૦ સભ્યોની યુવા ટુકડી થરાદ ખાતે પહોંચી ગઈ હતી. ઉતરાયણ સમયે ઘાયલ પંખીઓને બચાવી અનંતપુણ્યની કમાણી કરનાર શ્રેષ્ઠ જીવદયા પ્રેમી શ્રી મનીષભાઈ ભટ્ટ પણ પશુઓની સારવાર માટે આધુનિક દવાઓ લઈ સાથે જોડાયા હતા.

થરાદ જઈ પરિષદના કાર્યકરોએ રાહત કામગીરી યુધ્ધના ધોરણે આરંભી દીધી હતી. સંકટની ઘડીએ નડિયાદના યુવાનો દ્વારા તાત્કાલિક મદદ મળી જતાં થરાદ પંથકના આંતરિયાળ ગામોના અસરગ્રસ્ત લોકોએ રાહતની લાગણી અનુભવી હતી. અલગ-અલગ ટુકડીઓએ કેનાલમાં ફસાયેલા જીવંત પશુઓને બચાવવા ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

થરાદ પંથકના અસરગ્રસ્ત બંધુઓ માટે જીવન જરૂરીયાત ચીજ વસ્તુની કીટ તૈયાર કરી આંતરિયાળ ગામોમાં પહોંચતું કરી સેવાનું ઉમદા ઉદાહરણ પુરૂ પાડ્યું હતું આ પરિષદના યુવાનોની જહેમત પ્રશસ્ય બની હતી.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે જલપ્રલય

પૂજ્યશ્રીની સિધ્ધિનો પ્રભાવશાળી પરચો...!!

કુદરતની ગેબી સત્તાએ તેની ભૂંડી ભૂમિકા માત્ર પાંચ દિવસ પછી ભજવી હોત તો... !!

કુદરતની ગેબી સત્તાને પણ ઝુકવું પડે છે ધર્મસતા સામે શુળીનો ઘા સોય થી !!

પ્રકૃતિની લીલા અદ્ભુત છે જ્યારે તે સ્મિત વેરે છે ત્યારે સર્વત્ર સૌંદર્ય અને આનંદ વર્તાય છે પણ જ્યારે તે ક્રોધે ભરાય છે ત્યારે હું પદમાં રહેતા માનવીની અવદશાનો પાર રહેતો નથી. પ્રકૃતિનો કોપ ભૂકંપ, જ્વાળામુખી, દુષ્કાળ, અતિવૃષ્ટિ, નદીઓના ઘોડાપુર વિગેરે વિવિધ રૂપે વ્યક્ત થાય છે. આ પ્રકૃતિની વિરાટ શક્તિ અને ગેબી સતા સમક્ષ વામણા માનવીઓની મર્યાદાઓ ઉઘાડી પડી જાય છે આવા સમયે માનવીને ધર્મની ઓળખાણ કરવા આગળ આવવું પડે છે. ઉદય અને અસ્ત નિશ્ચિત છે. સહુ કોઈ જાણીએ છીએ અને આપણા જેવા ચાલાક માનવપ્રાણીઓને એટલીય ખબર છે કે જ્યારે જન્મ ધારણ કરીએ છીએ ત્યારથી જ મૃત્યુની મહોર સાથે લાગેલી હોય છે. છતાંય ભયની ધ્રુજારી વિના કુદરતની ઉપરવટ થઈને નવા નવા નુસખા અજમાવી પ્રકૃતિ સાથે ચેડાં કરી રહ્યા છીએ જેથી કુદરતે પણ તેનો મીજાજ બદલી નાંખ્યો છે અને જે રીતે થાય તે રીતે સૃષ્ટિનો સંહાર કેમ કરવો તે બાજુ ડગ ભરી રહી છે. પણ આર્ય સંસ્કૃતિને વરેલા આ દેશમાં તપથી તપેલા સંત મહાત્માઓના ધર્મ પ્રભાવે પ્રકૃતિ પણ તેનો રોફ બતાવી પરત ફરે છે.

આ સંસારમાં પ્રત્યેક પ્રાણી સુખ પ્રાપ્ત કરવા માટે અનેક પ્રયત્નો કરે છે એમાં એવા ઘણા પ્રયત્નો એવા હોય છે કે તે કરવા જતાં આપણે પોતે કેવા પ્રકારના પાપો બાંધીએ છીએ તે પાપો વ્રજાલેપની જેમ આત્માને કેવી રીતે ચોંટી જાય છે તેનું આપણા જેવા અજ્ઞાન આત્માઓને ધ્યાન રહેતું નથી. અને જ્યારે એ પાપનો વિપાક ભોગવવાનો સમય આવે છે ત્યારે પોક મુકીને રડવા માંડીએ છીએ.

નાસ્તિકતા તરફ હરણફાળ ભરી રહેલા ઘણા આત્માઓને કુદરત-પાપ કે પુણ્ય પ્રત્યે શ્રધ્ધા જ હોતી નથી પરંતુ ગેબી સતા તેનો પંજો ઉપાડે છે ત્યારે સહુને ભાન થઈ જાય છે અને કુદરત-પાપ કે પુણ્યને પ્રત્યત અનુભવી શકે છે.

કુદરતે કરેલી રચનાને ફેરવવાનો માણસે પ્રયાસ કરવો તે પણ એક પાપ છે. એક માનવ પોતાની આલિશાન હવેલીમાં સુખ સાહેબી ભોગવી રહ્યો છે, અનેક પ્રકારની ખાદ્ય સામગ્રીથી પોતાના દેહને પોષી રહ્યો છે. મખમલી ગાદી પર પોઢે છે અને વિવિધ પ્રકારના સુખોનો ઉપયોગ કરે છે ત્યારે બીજી તરફ બિચારા ગરીબ માણસોને ખાવા માટે લુખ્ખા રોટલાનો ટુકડો મળવો દુર્લભ છે. રહેવા માટે સ્થાન નથી. સુવા માટે પથારી તો શું ઓટલો પણ મળી શકતો નથી અને અનેક દુઃખોને સહન કરવા પડે

છે. ધનવાન, નિર્ધન, રોગી, નિરોગી આ બધાને જોઈને આપણે સારી રીતે વિચાર કરીશું તો પાપ-પુણ્ય નજરો-નજર જોઈ શકીએ છીએ અને એથી પાપ પુણ્યનું હોવા પણું સ્વયં સિધ્ધ થઈ જાય છે. સંગીન ગુનો કરેલ વ્યક્તિને વકીલોની દલીલો સાંભળ્યા બાદ મેજીસ્ટેટ સાહેબ જ્યારે ફાંસીનો ફેંસલો આપી દે છે ત્યારે તે વ્યક્તિ એકદમ ભાંગી પડે છે પણ છતાં બચવાની એક આશા બચેલી હોય છે અને તેની એ અરજને માફી આપવાની સતા છે. રાષ્ટ્રપતિની તેજ રીતે ગેબી સતાને કાબુમાં લેવાની સતા છે **ધર્મ સતાની....**

તાજેતરમાં કોપાયમાન થયેલા મેઘરાજાએ જે કચ્છ અને બનાસકાંઠા જીલ્લાને જે રૂદ્ર સ્વરૂપ બતાવ્યું અને થોડા જ કલાકોમાં કેટલાય પરિવારોને હોતા ન હોતા કરી દીધા. હજુ ચાર પાંચ કલાક સુધી વધુ કોપાયમાન રહ્યા હોત તો શું હાલત થઈ હોત...? જવાબ નકારાત્મક જ રહેવાનો એનું કારણ પણ વૈજ્ઞાનિક કરતાં આધ્યાત્મિક રૂપે જાણવું રહ્યું.

શ્રી પેપરાલ તીર્થની ધન્યધરા પર યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજી રહ્યા છે. તાપમાન વિભાગને તો આવો વાદળફાટ વરસાદ વરસસે તેની અગમચેતી કદાચ નહીં હોય પણ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીને તો આવા એંધાણની સુઝ પડી ગઈ હોવી જોઈએ કારણ કે પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં ચોમાસી કરવા આવનાર આરાધકો માટે અગાઉથી ફોર્મ ભરવા મોકલી દેવાતાં હોય છે પણ આ વખતે ૪૦૦ આરાધકોનો ચોમાસી કરવાનો સમાવેશ કરવા માટે ચાતુર્માસ પ્રવેશના દિવસે જ જાહેરાત કરાઈ હતી. ચાતુર્માસની શરૂઆતને માંડ ચાર પાંચ દિવસ બાકી હતા અને કોપાયમાન મેઘરાજાએ જે રૂદ્ર સ્વરૂપ બતાવી જે ખરાબ હાલત કરી તે જોતાં શ્રી પેપરાલ તીર્થે આરાધકો આવી પહોંચ્યા હોત અને આ અતિવૃષ્ટિની હોનારત સર્જાઈ હોત તો આરાધકોને કેટલી મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડ્યો હોત ? વ્યવસ્થાપકોને કેટલીય ગંભીર પરિસ્થિતિનો સામનો કરવો પડ્યો હોત ? જેમ દરિયો નદીના પાણીને સમાવી લે છે તેમ પડેલી થોડી મુશ્કેલી નો સામનો પોતે અને પોતાના પરિવારે કર્યો પણ ભક્તોને ઉની આંચ આવવા ન દીધી ત્યારે નિશ્ચિત પણે કહી શકાય કે યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની સિધ્ધિનો પ્રભાવશાળી પરચો જ છે. આ પુણ્યાત્મા અને તેમના પરિવારના સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોના ત્યાગ-વૈરાગ્યના પ્રભાવે સુળીનો ઘા સોય થી મટ્યો છે તેમ ચોક્કસ પણે કહી શકાય તેમાં સંકાને સ્થાન નથી... કુદરત સામે ક્યારેય બાથ ભીડાતી નથી પણ

ક્યારેક એમ જણાય કે પરિસ્થિતિ કાબુમાં રહે તેમ નથી ત્યારે જાનહાનિ ન થાય અને પશુહાની વધુ ન થાય તે માટે સંતોએ તેમના ત્યાગ જીવનની સિધ્ધિનો પ્રભાવ બતાવવા આગળ આવવું પડતું હોય છે.

વરસાદ વરસી રહ્યો છે વીજળીના કડાકા અને વાદળોના ગડગડાટ વચ્ચે મેઘરાજા તાંડવ મચાવી રહ્યા છે. ત્યારે ૬૨ વર્ષના દીક્ષા પર્યાયના તેજ થી તપેલા પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીએ જાણે પરોક્ષ રીતે વિનંતી કરતાં કહ્યું હોય કે હે મેઘરાજા આ આર્ય સંસ્કૃતિને વરેલા દેશના ગણ્યા ગાંઠ્યા દોષીતો એ અભડાવ્યો છે જ્યારે અત્યારે તો નિર્દોષ લોકોના હાલ-બેહાલ થઈ રહ્યા છે. નિર્દોષ પશુઓનો ખુરદો બોલી રહ્યો છે. અત્યાર સુધીમાં પશુધનનો ઘણું ખુવાર થઈ ગયું છે પણ જાનહાની ન થાય તે માટે મેઘરાજા ખમૈયા કરો અને આ દેશની આર્ય સંસ્કૃતિને વરેલા લોકોને ઉગારીલો અને બચેલા પશુ ધનને સાચવી લો. મંત્રોચ્ચાર સાથે વાસક્ષેપ દ્વારા પૂજ્યશ્રીએ મેઘરાજાને ખમૈયા કરવા કરેલી વિનંતીનો જાણે સ્વીકાર કર્યો હોય તેમ મેઘરાજાએ તેમનો કોપ શાંત કર્યો અને સંકટના વાદળો વિખેરાઈ ગયાં. પૂજ્યશ્રીએ મંત્રોચ્ચાર કરી વાસક્ષેપ કરતાંની સાથે જ પેટાળનું પડ ખુલી ગયું અને ગોળ ગોળ ભમતી ભમરી દ્વારા પાણી પેટાળમાં ઓસરવા લાગ્યાં. !!!!

પૂજ્યશ્રીના પૂર્વના ચાતુર્માસ દરમ્યાન કેટલાય સ્થળોએ વરઘોડા અને ધર્મ અનુષ્ઠાનનું આયોજન કરાયું હોય ત્યારે મુશળધાર વરસાદ વરસતો હોય અને કાર્યક્રમ સંપન્ન થવા સમયે આકાશ ચોખ્ખું થઈ ગયું હોય તેવી સિધ્ધિના દાખલા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં નોંધાયેલા છે. પૂજ્યશ્રીને જે સિધ્ધિઓ પ્રાપ્ત થયેલ તેનો ઉપયોગ જ્યારે કોઈ સંઘ શાસન કે સમાજમાં જટિલ સમસ્યા સર્જાઈ હોય ત્યારે જ કરતા હોય છે. તમની સિધ્ધિના પ્રભાવે શ્રી પેપરાલ તીર્થ ફરી ઈન્દ્રપુરી નગરી બની ગઈ છે. સિધ્ધિતપ, માસક્ષમણ અને શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રના જાપનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન સંપન્ન થવા જઈ રહ્યું છે.

...... જ્યાં દાદા ગુરૂદેવના મંદિરની અખંડજ્યોત પ્રગટી રહી છે. શ્રી મધુકર મહાવીરની ધજા લહેરાઈ રહી છે. શુક્ષમમાં શુક્ષમ અનંતા જીવોને અભયદાન આપી રહ્યા છે એવા ત્યાગી-વૈરાગી સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો બિરાજમાને છે તે દેશની ધરતીને ધરતીકંપો, વાવાઝોડા કે વરસાદી તોફાનો ક્યારેય અભડાવી શકે તેમ નથી. આ પ્રકૃતિતો એટલી વીફરીને બેઠી છે કે દુષ્ટ માનવીઓનો કચ્ચરઘાણ વાળી નાખું પણ ત્યાગી-વૈરાગી સંતો, પ્રમાણિક, માનવતાવાદી, નિખાલસ ભલાભોળા ધર્મિષ્ઠ માનવોના પુણ્ય આગળ તેની ફાવટ આવી શકતી નથી એટલે જ કે ધર્મનો જય હો... સત્યનો વિજય હો.

શ્રી પેપરાલ તીર્થે જલપ્રલય

ઢંઢાર પટ્ટીની ધન્યધરા ધાણસા નગરે....
પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જયરત્ન વિજયજી મ.સા.
આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોનો ચાતુર્માસ પ્રવેશ

પરમ પૂજ્ય યોગિરાજ સંયમવય: સ્થવિર શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા. ના શિષ્યરત્ન અને પરમ પૂજ્ય સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના આજ્ઞાનુવર્તી પ્રવચનકાર ભાંડવપુર તીર્થ પ્રેરક પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા તેમજ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાનો સંવત ૨૦૭૧ ના દ્વિ. અષાઢ સુદ-૯ ને શનિવાર તા. ૨૫-૭-૨૦૧૫ ના રોજ સવારે ૭ કલાકે ઢંઢાર પટ્ટીની ધન્યધરા ધાણસા નગરે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો.

પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિયજી મ.સા. આદિઠાણાએ ચાતુર્માસ પૂર્વે શ્રી ભાંડવપુરતીર્થમાં તા. ૧૫ જુલાઈ સુધી સ્થિરતા કરી શ્રી જીરાવલા તીર્થે બે દિવસની સ્થિરતા કરી હતી ત્યારબાદ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીની નિશ્રામાં શ્રી રાજેન્દ્ર શાંતિવિહાર ધામ ડોરડામાં શ્રી નેમિનાથ ભગવાનના જિનાલયનો શિલાન્યાસ કાર્યક્રમ તા. ૨૩ જુલાઈના રોજ સંપન્ન થયો હતો.

અંબાજી મંદિરથી ગામના મુખ્યદ્વાર પર પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વી ભગવંત વાજતે-ગાજતે આવી પહોંચતા કળશધારી મહિલાઓ દ્વારા ભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું. સામૈયાનો લાભ શા. છગનરાજજી મિશ્રી મલજી સાલેચા પરિવારે લીધો હતો. ગહુંલી કરી વધાવવાનો લાભ શા. સુખરાજ ચમનાજી કબદી પરિવારે લીધો હતો.

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી આદિઠાણાના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગે શોભાયાત્રાનું આયોજન કરાયું હતું. આ શોભાયાત્રા નાચ-ગાન સાથે શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ જિનાલયે પહોંચી હતી જ્યાં સામૂહિક રૂપે દર્શન-વંદન કર્યા હતા. પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી આદિઠાણા અને સાધ્વીજી ભગવંતોના પાવન પગલે સંઘમાં પ્રસન્નતાનો મહાસાગર લહેરાઈ ગયો હતો.

આ શોભાયાત્રા મુખ્ય માર્ગો પર ફરી નૂતન નિર્મિત "વિદ્યાભવન" ખાતે આવી પહોંચી હતી જ્યાં ધર્મસભામાં પરિવર્તિત થઈ હતી. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીએ ચાતુર્માસની મહતા પર પ્રકાશ પાથરી સુંદર શૈલીમાં પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. થરાદથી પધારેલ શ્રી જ્યંતિલાલ વકીલે તેમનું વક્તવ્ય રજુ કર્યું હતું. તેમજ શ્રી ભીનમાલ જૈન સંઘના પ્રતિનિધિ સાથે આવેલ કે. કે. શેઠે પણ તેમનું વક્તવ્ય રજુ કર્યુ હતું. ભક્તિ ગીત રજૂ કરી સહુને ડોલાવી દીધા હતા.

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીને કાંબળી વહેરાવવાનો લાભ ધાણસા નિવાસી શ્રેષ્ઠીવર્ય શ્રી દીપચંદજી સોહતરાજજી કટારીયા સંઘવી પરિવારે લીધો હતો. પ્રવચન બાદ સમસ્ત પરિવારે ગુરૂપૂજન કરી કાંબળી વહોરાવી હતી. સ્ટેજ સંચાલન પ્રવિણ શેઠે કર્યું હતું.

પ્રવેશ પ્રસંગે નિમિત્તે સવારની નવકારશી અને સવા-સાંજના સ્વામીવાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું.

આંધ્રના ગુન્ટુર નગરે...
પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩નો
ચાતુર્માસ પ્રવેશ

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની અને પૂજ્ય સાધ્વીજી મહાપ્રભા શ્રીજી મ.સા. ની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી આત્મદર્શના શ્રીજી મ.સા. (એમ.એ.), પૂજ્ય સાધ્વીજી સમગ્યદર્શના શ્રીજી મ.સા. અને પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી ચારૂદર્શના શ્રીજી મ.સા. આદિઠાણ-૩ એ શ્રી પાર્શ્વનાથ રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન ટ્રસ્ટ ગુન્ટુર દ્વારા સંવત ૨૦૭૧ ના દ્વિ. અષાઢ સુદ-૯ ને શનિવાર તા. ૨૫-૭-૨૦૧૫ ના રોજ ચંદના બ્રધર્સ પાસેથી સામૈયા સાથે વાજતે-ગાજતે શ્રી રાજ-રાજેન્દ્ર જૈન આરાધના ભવન, આર, અગ્રાહારમ ગુન્ટુર ખાતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગ નિમિતે સ્વામિભક્તિનું આયોજન કરાયું હતું.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ દરમ્યાન શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમમાં પ્રતિરોજ સવારે ભક્તાંબર પાઠ અને ગુરૂગુણ ઈક્કીસાપાઠ, અચિન્ત્ય મહિમાશાળી નવકારની નવ દિવસીય આરાધના, સુત્રાધિકારમાં પ્રતિરોજ રંગશાલા ગ્રંથનું વાંચન, ચરિત્રમાં સાગરદૃત ચરિત્રનું વાંચન, શ્રી સિમંધર સ્વામી ભગવાનની ભાવયાત્રા, મહામંત્રી પેથડશાહ દ્વારા કરાયેલ તેજ રીતે અષ્ટપ્રકારી પૂજા પૂણિયા શ્રાવકના સામાયિક, છપ્પન દિગકુમારીઓ દ્વારા ભગવાનનો સ્નાત્ર મહોત્સવ, શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથના અઠમ, ચંદનબાલાના અઠમ, દર શનિવારે ૧૫ થી ૫૦ વર્ષની બાલિકા અને મહિલા માટે ધર્મ શિબિર વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થનાર છે.

શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નડિયાદની આજ્ઞાથી...
અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા-નડીઆદ દ્વારા
વૃક્ષારોપણનો કાર્યક્રમ સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભ આશીર્વાદથી અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવ યુવક પરિષદના તત્વાધાનમાં પરિષદ પરિવાર અને સમસ્ત સંઘોની પ્રેરણાથી શ્રી અનિલજી દસેડા (રાષ્ટ્રીય પર્યાવરણ મંત્રી-અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવ યુવક પરિષદ) (અધ્યક્ષ-નગર પાલિકા પરિષદ જાવરા) ના નેતૃત્વ હેઠળ તા. ૧૫-૮-૨૦૧૫ ના રોજથી બૃહદ વૃક્ષારોપણ કાર્યક્રમ યોજવા અભિયાન હાથ ધરાયું હતું.

વધી જતી જનવસ્તી, શહેરીકરણના કારણે હરિયાળી ઓછી જોવા મળી રહી છે. અંધાધૂધ વૃક્ષો કાપવાથી પર્યાવરણ પ્રદુષણનો ખતરો વધી રહ્યો છે. જળ સંકટ પણ એનું દુષ્ય પરિણામ છે. માટે વૃક્ષોને વાવી પર્યાવરણને બચાવવાનો સમય આવી ગયો છે. સ્વ. કિશોરચંદ્ર ખિમાવતે તેમના જીવનકાળ દરમ્યાન સાત લાખ લીમડાના છોડ વાવી એનું પાલન પોષણ કરી મોટા ઝાડ કરી પર્યાવરણને બચાવવામાં બહુ મુલ્ય યોગદાન આપ્યું હતું.

પરિષદ પરિવારના આ અભિયાનને શિરોધાર્ય કરી શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નડીઆદની આજ્ઞાથી અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા-નડિયાદ દ્વારા પ્રમુખશ્રી દિપકકુમાર શાંતિલાલ શાહના નેતૃત્વ હેઠળ તા. ૧૫-૮-૨૦૧૫ ના રોજ ૧૦૦ છોડ વાવી વૃક્ષારોપણનો કાર્યક્રમ સંપન્ન કરાયો હતો. આ પરિષદના યુવા અને હોંશિલા સભ્યોએ ખેતા તળાવ, ડેરી રોડ, પીપલગ, વસંતવિહાર, વિગેરે સ્થળોએ થઈ ૫૦ લીમડા અને ૫૦ ગુલમહોર મળી કુલ ૧૦૦ છોડ વાવી વૃક્ષારોપણની શરૂઆત કરી હતી.

ભુલચુક લેવી દેવી....

ગત તા. ૭-૮ જુન ૨૦૧૫ ના રોજ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિઠાણાની નડિયાદ નગરે પધરામણી થઈ હતી તે દરમ્યાન રાજ - રાજેન્દ્રજયંતસેન વિહારધામ વરસોલા ખાતે નૂતન સંકુલનો શિલાન્યાસ અને સંઘના અગ્રણીઓના બહુમાનનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો તે સમયે પૂજ્યશ્રીને કાંબળી ઓઢાડવાનો ચઢાવો બોલાયો હતો અને તેનો લાભ વોહેરા શાંતિલાલ મણીલાલ પરિવારે લીધો હતો જે શરતચૂકથી જુલાઈ માસના અંકમાં પ્રસિધ્ધ કરવાનું રહી ગયેલ હતું તે બદલ ક્ષમા..... ભુલચુક લેવી દેવી

कुमकुम सने पगलिये

राष्ट्रसंत की निश्रा में तीन दिवसीय जीवंत महोत्सव सम्पन्न

डीसा। श्री महाविदेह तीर्थधाम थराद हाइवे, डीसा की पावन भूमि पर बुधवार 8 जुलाई 2015 को पू. राष्ट्रसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. विहार करते हुए वारिया परिवार द्वारा आयोजित जीवंत महोत्सव में निश्रा प्रदान करने पधारे। आचार्यश्री का भव्य प्रवेश हुआ। राष्ट्रसंत साहब की निश्रा एवं मंगल प्रवचन से सभी में हर्ष छा गया। गुरुदेव की निश्रा में श्री जयन्तसेन सूरि पाठशाला डीसा के बच्चों द्वारा वारिया परिवार के पूर्वज श्री नत्थुशाह वारिया के जीवन पर आधारित एक सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे देखकर उपस्थित समाजजन भावविभोर हो गए। दोपहर में श्री सीमंधर स्वामी अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। रात्रि में कुणालभाई द्वारा सुन्दर भजनों की प्रस्तुति देकर भक्तिरस का पान कराया गया।

आयोजन के दूसरे दिन गुरुवार प्रातः शुभ बेला में मातृ-पितृ वंदनावली का सुन्दर आयोजन किया गया। इसमें संवेदक भाविक भाई मेहता, अहमदाबाद द्वारा माता-पिता की महत्ता बड़े ही प्रभावी तरीके से बताई गई। पूरे वारिया परिवार द्वारा श्री मफतलालजी एवं कान्ता बहन का पग प्रक्षालन एवं प्रदक्षिणा कर उन्हें बधाया गया। इस कार्यक्रम को वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. द्वारा निश्रा प्रदान की गई। दोपहर में श्री राजेन्द्र गुरु महापूजन किया गया जिसमें मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. द्वारा परमात्मा की संध्या भक्ति कराई गई जिसमें भावुकों को परमात्मा से मिलने का मार्ग बताया गया। रात्रि में सुन्दर

भक्ति का आयोजन किया गया।

तृतीय दिवस शुक्रवार को प्रात:काल अपने व्याख्यान में पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने 'जीव करु शासन रशि' की भावना प्रत्येक हृदय में अन्तर्निहित होने, किसी भी परिस्थिति में चित्त की प्रसन्नता एवं सद्भावना से विरत नहीं होने की बात कही। इसके पश्चात् श्रीसंघ का सामूहिक स्वामीवात्सल्य हुआ। दोपहर में श्री सिद्धचक्र महापूजन का अनुष्ठान मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. एवं प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ।

आयोजक वारिया परिवार द्वारा इस त्रिदिवसीय महोत्सव को सफल बनाने के लिए सकल श्रीसंघ, तरुण परिषद्, बाल परिषद्, बालिका परिषद्, महिला परिषद् आदि का आभार प्रकट किया गया।

मंगल प्रवेश

डीसा। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. का मंगल प्रवेश 11 जुलाई 2015 को विशाल मुनिमंडल एवं साध्वीवृंद के साथ डीसा नगर में हुआ। मंगल प्रवेश पर आयोजित चल समारोह में भक्तजन बैंड बाजों एवं शहनाइयों की गूंज के साथ नाचते, गाते, राष्ट्रसंत की जय-जयकार के नारे लगाते हुए चल रहे थे। महिलाएं एवं बालिकाएं सिर पर कलश धारण कर परिषद् की निर्धारित वेशभूषा में पंक्तिबद्ध होकर चल रही थीं। राष्ट्रसंतश्री को जगह-जगह गहुंली कर बधाया गया। पूरे उत्साह के साथ सभी मुनिमंडल के साथ गुरुमंदिर के पास स्थित पांडाल पहुँचे। यहाँ आयोजित धर्मसभा में पू. गुरुदेव ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए मांगलिक श्रवण कराया।

दिन में गुरु मंदिर के समीप बने पांडाल में संयम संवेदना का प्रभावी आयोजन भी किया गया, जिसमें सैकड़ों भक्तगण उपस्थित हुए। संवेदना का इतना मार्मिक प्रदर्शन था कि उपस्थित सभी भक्तों की आँखों से अश्रुधाराएं बहने लगीं। मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा., श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा., श्री जिनागम रत्न विजयजी म.सा., श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. आदि मुनि भगवंतों एवं साध्वी भगवंतों की निश्रा में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अ.भा.नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, महामंत्री श्री अशोकजी श्रीमाल सहित अन्य कई पदाधिकारी एवं भक्तगण उपस्थित थे।

मानव पहले इंसान बने, फिर धर्म अनुयायी

–मुनि वैभवरत्न विजयजी म.

उज्जैन। आज के युग में हर तरफ हर व्यक्ति किसी न किसी धर्म के नाम पर गुटबाजी में बंटता जा रहा है और कोई भी मानवता के धर्म को नहीं निभा पा रहा है। क्या किसी भी धर्म में हमें ये सिखाया जाता है कि आप हिंसा करो, लोगों को कष्ट दो, उन्हें दु:ख पहुंचाओ, किसी के आंसू ना पोंछो, किसी गरीब की मदद न करो, नारी अस्मिता को पैरों तले रौंद डालो, अपने माता–पिता को बेघर कर वृद्धाश्रम में फेंक आओ। ऐसा कोई धर्म नहीं सिखाता, वरन् हमें सदैव एक ही बात सिखाई जाती है कि प्यार करो, प्यार बांटो और प्यार बढ़ाओ।

आज धर्म के ठेकेदारों की गुटबाजी में मानवता के असली धर्म को सब भूल गए हैं। भगवान महावीर स्वामी ने खुद अनंतकाल तक वेदना सहकर भी किसी दोषी पर क्रोध नहीं किया, हिंसा नहीं की। और आज हम उन्हीं के अनुयायी होकर क्या कर रहे हैं? यह विचारणीय है।

मुंबई सात रास्ता जैन संघ में विराजित मुनि वैभवरत्न विजयजी म.सा. ने जैन मीडिया सोशल वेलफेयर सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार विनायक ए लुनिया एवं संगठन महासचिव ललित हीरालाल मेहता से चर्चा करते हुए उक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

ज्ञानायतन का आयोजन

बिलेश्वर पुरा (छत्राल, गुज.)। गुजरात के अहमदाबाद मेहसाणा राजमार्ग पर स्थित बिलेश्वरपुरा में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार द्वारा संचालित मधुकर संस्कार ज्ञानायतन-3 का आयोजन गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में 27 जून से 1 जुलाई 2015 तक किया गया। इसमें बच्चों को आध्यात्मिक संस्कारों से जीवन को निखारने की शिक्षा दी गई।

गुरुद्वय का आत्मीय मिलन

अहमदाबाद। प.पू.गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. विहार कर उंझा पधारे। इसके पूर्व पालनपुर अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय पद्मसागरजी सूरि म.सा. से आपका आत्मीय मिलन हुआ। दोनों गुरुदेवों ने अपने विहार को करीब 45 मिनट तक रोककर जैन शासन की अनेक बातों पर चर्चा की। इस प्रसंग पर आचार्य श्रीमद् विजय देवेन्द्रसागरजी सूरि म.सा. भी उपस्थित थे।

काव्य कुंज

नवकार करता भवसागर से पार

जयन्त सकलेचा, नीमच

नवकार है आत्मा का आधार
नवकार दूर करता है अहंकार
नवकार से आता है जीवन में सदाचार
नवकार मिटाता है अज्ञान का अंधकार
नवकार करता है करुणा का संचार।
नवकार में है पंचपरमेष्ठि नमस्कार।
नवकार धर्मपथ पर ले जाता है हर क्षण,
नवकार करता है भावों का शुद्धिकरण।
नवकार से पवित्र होता है अंत:करण,
नवकार से मिलती है पंचपरमेष्ठि की शरण।
नवकार है आत्मगुणों का प्रकाशक,
नवकार है विनय गुण का प्रसारक,
नवकार है मैत्रीय भाव का संचारक,
नवकार है भवभय निवारक,
नवकार है मंगल कारक।
नवकार है कर्मों का क्षायक
नवकार है सिद्धि का दायक।
नवकार की महिमा है अपरंपार,
नवकार करता है भवसागर से पार।

चातुर्मास पर मंगल प्रवेश

जावरा। श्री राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पौषधशाला जैन मंदिर, पीपली बाजार पर साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा., श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा., श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा., श्री तृप्तिदर्शना श्रीजी म.सा का चातुर्मास है। आपका चातुर्मास प्रवेश विगत 25 जुलाई, शनिवार को हुआ।

मंगल प्रवेश का चल समारोह श्री मनमोहन पार्श्वनाथ मंदिर से प्रारंभ होकर पीपली बाजार पौषधशाला पर पहुँचा। बरसते पानी में भी श्रावक-श्राविकाओं में अपूर्व उत्साह था। चल समारोह के पूर्व मंदिर स्थित पौषधशाला में धर्मसभा का आयोजन हुआ जिसमें पू. साध्वीगण के प्रवचन हुए। समारोह में मुख्य अतिथि अ.भा.श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी दगवाड़ा, राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री धर्मचंदजी मेहता सहित उज्जैन, महिदपुर, खाचरौद आदि दस नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधियों का तिलक, शाल, श्रीफल से सम्मान किया गया। जावरा नगरपालिका अध्यक्ष श्री अनिलजी दसेड़ा, श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा का स्वागत अ.भा.श्रीसंघ द्वारा किया गया। पीपली बाजार पौषधशाला में प्रवेश के पश्चात् धर्मसभा हुई। कार्यक्रम में स्वागत श्रीसंघ जावरा के अध्यक्ष श्री बाबूलालजी तांतेड़, महासचिव श्री प्रदीपजी सिसौदिया, चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री तेजमलजी (बोदिनावाला), महासचिव श्री हेमेन्द्रराज जी चौरड़िया एवं श्री विजयकुमारजी आंचलिया, श्री प्रकाशजी मोदी, श्री महेन्द्रजी कोलन, श्री अशोककुमार जी नवलक्खा, श्री अशोकजी बोरदिया, श्री संजयजी तांतेड़, श्री सुरेशकुमारजी धारीवाल, श्री पवनजी कटारिया, श्री सचिवजी चत्तर आदि ने किया।

स्वधर्मी वात्सल्य का लाभ श्री अनोखीलालजी दिलीपकुमारजी धारीवाल परिवार ने लिया। प्रातः नवकारसी श्री भंवरलालजी, पारसमलजी, प्रकाशचंदजी मोदी परिवार की ओर से हुई।

सच्चा सुख आत्म सुख है

-साध्वी श्री रुचिदर्शना श्रीजी

जावरा। सौ.वृ.त.त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति द्वारा युग प्रभावक राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयन्त सेन सूरिश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्य साध्वी महाप्रभा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी म. आदि ठाणा चार की प्रेरणा से चातुर्मास अन्तर्गत आयोजित हो रहे व्याख्यान में ज्ञान गंगा बह रही है।

जैन पौषध शाला पीपली बाजार में आयोजित व्याख्यान में पूज्य साध्वीजी श्री रुचिदर्शना श्रीजी ने कहा कि पुण्य के बिना जीवन अधूरा है। पुण्य नहीं रहने पर आप जो भी करेंगे वह व्यर्थ है। सच्चा सुख आत्मसुख है, जिसे पाने के लिए धर्म की शरण में जाना ही पड़ेगा। संसार का सुख नश्वर है और संसार दु:खों का दुश्चक्र है। सच्चा सुख यदि पाना है तो पुण्य अर्जन के लिए दु:ख को सहन करें। प्रवचन में साध्वीजी ने 12 व्रतों के सार को समझाते हुए 22 अभक्ष्य में सावधानी बरतने, व्रत करने और अभक्ष्य के त्याग से पुण्य अर्जन करने को कहा।

इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी तांतेड़, चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री तेजमलजी मेहता (बोदिनावाले), श्रीसंघ महासचिव श्री प्रदीपजी सिसौदिया, चातुर्मास समिति महासचिव श्री हेमेन्द्रराजजी चौरड़िया, अशोकजी नवलक्खा, महेन्द्रजी कोलन, राजमलजी धाड़ीवाल, प्रकाशजी मोदी, शांतिलालजी कावड़िया, इन्दरमलजी दसेड़ा, पारसजी सकलेचा, कनकमलजी मालक, वैभवजी मूणत, शशांकजी मेहता, अमितजी चौरड़िया, जितेन्द्रजी मेहता, ऋषभजी मेहता, वैभवजी मूणत, अंकितजी मालक, श्रीसंघ चातुर्मास समिति, नवयुवक परिषद्, महिला परिषद्, जयंत ज्योति बहु परिषद्, तरुण परिषद्, अध्यक्ष दीपकजी सकलेचा, पवनजी कटारिया आदि उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि साध्वीजी म.सा. की निश्रा में चातुर्मास अन्तर्गत 2 अगस्त से 50 दिन का मेरू पर्वत तप प्रारंभ हुआ है। प्रति रविवार साध्वीजी म.सा. की निश्रा में चल रहे ज्ञान शिविर का बच्चे लाभ ले रहे हैं। यह जानकारी प्रचार-प्रसार सचिव सचिन चत्तर ने दी।

गुरु आज्ञा का पालन करना ही
गुरु पूर्णिमा है

शाजापुर। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर दो समुदायों के मुनिगणों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। मुनिश्री संयमरत्न विजयजी, श्री अक्षयऋषिजी के साथ प्रवचन सभा को मुनिश्री अमृतऋषिजी, श्री भुवरत्न विजयजी म. ने भी संबोधित किया।

अपने प्रवचन में श्रीमद् जयंतसेन सूरिजी के शिष्य श्री संयमरत्न विजयजी ने कहा कि गुरु हमेशा पूर्ण होते हैं। गुरु को प्राप्त कर अपूर्ण शिष्य भी कर्मों का चूर्ण करते हुए पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। गुरु की कृपा सभी पर समान रूप से होती है किन्तु जिसकी जितनी पात्रता होती है, वह उतना ग्रहण कर आगे बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि वर्ष में एक बार गुरु को याद करना गुरु पूर्णिमा नहीं है, वरन् गुरु की आज्ञा का पूर्ण पालन ही सच्ची गुरु पूर्णिमा है। ऐसे संतों का संग करना चाहिए जिनकी संगत से परमात्म प्राप्ति की लगन बढ़ती हो, दुर्गुण-दुराचार स्वतः दूर हो जाते हों, सद्गुण -सदाचार स्वतः आते हों, भगवान पर श्रद्धा-आस्था बढ़ती हो, बिना पूछे ही शंकाओं का समाधान होने लगे वही सद्गुरु होता है। एक अक्षर का ज्ञान देने वाले को भी यदि कोई गुरु मानकर यदि आज्ञा में रहे तो दुर्गति से बच सकते हैं। वास्तव में मनुष्य स्वयं ही अपना गुरु है, क्योंकि कल्याण न गुरु से होता है न ईश्वर से बल्कि इनके प्रति हमारी सच्ची लगन से होता है।

श्री आनंदऋषिजी के शिष्य मुनि श्री अक्षयऋषिजी ने कहा कि गुरु के पास अहंकार नहीं अपितु समर्पण भाव लेकर जाना चाहिए। कोरे होकर जाएंगे तो ही गुरु उस पर कुछ लिख सकेंगे। गुरु हमें सत्य का मार्ग बताते हैं, गुरु के बिना प्राणी का जीवन अधूरा है। गुरु शिल्पी की तरह शिष्य का निर्माण करते हैं। गुरु पूर्णिमा के दिन श्री संयमरत्न विजयजी की वर्धमान तप की 32 वीं ओली के पारणा का लाभ मितेश कुमार महेन्द्रजी कोठारी को प्राप्त हुआ।

साध्वीजी का भव्य चातुर्मास प्रवेश

गुंटूर। आंध्रप्रदेश के गुंटूर नगर में 25 जुलाई 2015 को आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वीजी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का भव्य चातुर्मास प्रवेश हर्ष, उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। चंदना ब्रदर्स के समीप उनका भव्य स्वागत के पश्चात सोमैया एवं वधाने का कार्यक्रम आरंभ हुआ।

बैंड बाजों एवं ढोल नगाड़ों के साथ आरंभ हुई शोभायात्रा लालापेट मेन बाजार होते हुए गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर पहुंची। मंदिर में दर्शन, वंदन उपरांत श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ, राजेन्द्रसूरि मंदिर, आर अग्रहाराम पहुंचकर दर्शन वंदन किया। लगभग 8:50 बजे श्री राज राजेन्द्र भवन में चातुर्मास हेतु साध्वीजी का प्रवेश हुआ। हजारों धर्मप्रेमियों के उत्साह व उमंग के साथ चातुर्मास प्रवेश दिवस पर विभिन्न शहरों के संघों के साथ हजारों धर्मप्रेमियों ने भी उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर विजयवाड़ा, तेनाली, वारंगल, हैदराबाद, नैल्लूर, वेल्लूर, चैन्नई, बैंगलूर, ईरोड, सेमल, कोयम्बतूर, त्रिचनापल्ली, वीजापुर आदि अनेक स्थानों से सैकड़ों लोगों ने उपस्थिति दर्ज करवाई।

गुरुवर्या श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. के अब तक 12 चातुर्मास दक्षिण भारत के प्रांतों में हो चुके हैं। इस अवसर पर पधारे समस्त संघों के वक्ताओं ने शुद्ध चारित्र पालक, कर्मठ अनुशासन सहित 'ज्ञान गंगा' के नाम से मशहूर साध्वीजी के पूर्व में हुए चातुर्मास के अपने अनुभव व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि लोग धर्म की आराधना में जुड़ेंगे और यह चातुर्मास भी अत्यन्त सफल होगा। इस अवसर पर संघ पूजा का आयोजन किया गया। संघ पूजा के लाभार्थियों का बहुमान भी किया गया।

साध्वीजी म.सा. के मुखारविंद से मंगलाचरण का श्रवण कराया गया।

श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र सूरि जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित हो रहे चातुर्मास कार्यक्रमों में मंगल प्रवेश के कार्यक्रम को भव्य एवं ऐतिहासिक बनाने में चातुर्मास समिति, स्थानीय श्री राजेन्द्र सूरि जैन सेवा मंडल के कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा। समस्त जैन संघ एवं बाहर से पधारे मेहमानों के लिए साधार्मिक भक्ति का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में हजारों लोगों ने अत्यन्त हर्ष, उत्साह एवं उमंग से भाग लिया।

श्री संघ सौरभ

पर्युषण पर्व पर उपाश्रय में प्रवचन होंगे

रतलाम। अनुष्ठान, आराधना, उपासना महोत्सव के तहत नीमवाला उपाश्रय पर धर्माराधना का क्रम जारी है। सामूहिक पौषध, श्री शांतिनाथ प्रभु के जाप, सामायिक, प्रतिक्रमण में काफी संख्या में तपस्वी भाग ले रहे हैं। साध्वीश्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वियाँ पर्युषण पर्व पर उपाश्रय पधारकर प्रवचन प्रदान करेंगी।

मीडिया प्रभारी एवं महोत्सव संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने आगे जानकारी देते हुए उपाश्रय में 21 अगस्त से आरम्भ होने वाली 9 दिवसीय महामंत्र नवकार आराधना में अधिकाधिक आराधकों से भाग लेने का अनुरोध किया है। आयोजन के क्रम में 7 अगस्त को सोहनबेन अम्बोर, राजलदेवी सकलेचा, विमलाबेन चोपड़ा, रमीलाबेन कोचर, श्यामाबेन नांदेचा, दाखाबाई पारख, चन्द्रकांता बेन खिमेसरा, चंदनबाला खेड़ावाला, मंजूश्री खेड़ावाला, लीलाबेन राठोड़ द्वारा सामूहिक पौषध, सामायिक, जाप व प्रतिक्रमण किया गया।

सात हजार पदयात्रा पूर्ण होने पर सामूहिक पदयात्रा आयोजित

के.के.संघवी व सुरेश बच्छावत की ठाणे तीर्थ से शांतिधाम तीर्थ मानपाड़ा की 7000 पदयात्रा निर्विघ्न पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 जून 2015 रविवार को थाने तीर्थ से सीमंधर स्वामी जिनालय करवालो नगर की सामूहिक पदयात्रा आयोजित की गई। पदयात्रा प्रातः 6 बजे के.के. संघवी के संयोजन में आरंभ हुई। पदयात्रा में बड़ी संख्या में पदयात्रियों ने भाग लिया।

पदयात्रियों ने पदयात्रा मार्ग में महावीर स्वामी जिनालय (वर्तक नगर) व मतिलनाथ जिनालय (लोकमान्य नगर) के दर्शन, वंदन किए। सीमंधर स्वामी जिनालय करवालो नगर में दर्शन, वंदन व आरती की गई। इस अवसर पर संघ द्वारा पदयात्रियों का स्वागत किया गया। संघ की ओर से नवकारसी रखी गई एवं संघ पूजन व तपस्वियों का बहुमान भी किया गया। स्मरण रहे कि थाणे तीर्थ से शांतिधाम मानपाड़ा की अखंड पदयात्रा के 21 वें समापन वर्ष में 150 पदयात्री नियमित पदयात्रा का रोज लाभ ले रहे हैं।

वर्षा के कहर में परिषद् ने चालू किए कई राहत कार्य

इन्दौर। परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् विभिन्न प्रकल्पों के साथ मानव कल्याण, जीवदया, मानव सेवा, पर्यावरण आदि कार्ययोजना बनाकर देश भर की विभिन्न शाखाओं के माध्यम से संपादित किए जा रहे हैं।

गुजरात के बनासकांठा क्षेत्र में अतिवर्षा के कहर से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। पशुधन के साथ व्यापक हानि हुई। कई गाँव और कई गाँवों में कई घर बाढ़ के पानी में बह गए। कुड़ा-नागला आदि ऐसे कई गांव थे जहाँ पेड़ों पर चढ़कर या घरों की छतों पर किसी तरह अपना समय रहवासियों ने गुजारा। पानी का प्रवाह दूसरी मंजिल तक पहुंच गया। अनेक घरों में बाढ़ का पानी घुसा, घर रेत व मलबे से भर गए। खाने-पीने और दैनिक जीवन में इस्तेमाल की अधिकांश चीजें नष्ट हुईं।

यहां दोहरा संयोग यह रहा कि इसी क्षेत्र में पूज्य गुरुदेवश्री की जन्म भूमि पेपराल स्थित हैं और आपश्री चातुर्मासार्थ यहाँ विराजित हैं। पेपराल क्षेत्र भी वर्षा के प्रकोप से प्रभावित हुआ। यहाँ की सम्पूर्ण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। गुजरात सहित सम्पूर्ण भारत में समाजजन चिंतित था। संचार व्यवस्था भी ठप्प रही। जैसे-जैसे टी.वी., रेडियो आदि माध्यमों से वर्षा के प्रकोप के समाचार प्रसारित होते गुरुभक्तों की चिंता और बढ़ती जाती।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में समीपस्थ गाँवों, शहरों के श्रीसंघों के साथ श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, तरुण परिषद् के साथियों ने सम्पूर्ण शक्ति के साथ कार्य करना आरंभ किया। विशेषकर सूरत, अहमदाबाद, डीसा, थराद, लाखणी, नड़ियाद परिषदों ने आकर तुरन्त राहत कार्य आरंभ किए।

परमपूज्य गुरुदेवश्री के आह्वान के साथ ही इन परिषदों के सदस्य समीपस्थ वर्षा प्रभावित गाँवों में पहुँचे और आरंभ हो गया बचाव-राहत कार्यों का दौर। परिषद् के बैनर तले अनाज, कपड़ा, बर्तन, खाने-पीने की सामग्री, दवाइयाँ, आर्थिक सहायता का वितरण आरंभ किया गया।

गुजरात प्रांतीय परिषद् के अध्यक्ष श्री अरविंदभाई देसाई आदि साथियों के नेतृत्व में पशु आहार, घास आदि की व्यवस्था भी करवाई गई। उल्लेखनीय है कि थराद के आसपास पांजरा पोल में हजारों की संख्या में पशुधन को हानि हुई है। ऐसे समय में इनकी टीमों ने जेसीबी मशीन के माध्यम से पानी की

निकासी करवाकर, गड्ढे खुदवारकर, कीटनाशक दवाओं से ट्रीटमेंट कर मृत पशुओं को दफनाया गया जिससे बीमारी न फैले, महामारी का खतरा न पैदा हो।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरु की अगवानी में बनासकांठा क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जाकर प्रार्थना समाज श्री संघ थराद मुंबई ने लाखों रुपए की राहत सामग्री का वितरण किया गया। डीसा परिषद् व थराद परिषद् ने घर-घर जाकर आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, कोषाध्यक्ष धरमचंद बोहरा, मुकेश नाकोड़ा, तरुण परिषद् अध्यक्ष श्री शशांक लुणावत ने पेपराल जाकर सभी परिषद् साथियों के कार्यों की सराहना कर उनकी हौंसला अफजाई की।

इन्दौर परिषद् के 80 सदस्यीय दल ने गुरुदेव के दर्शन कर वर्षा पीड़ितों को कंबल वितरित किए। इसके अलावा देश की अन्य विभिन्न शाखाओं ने आर्थिक सहायता पहुँचाई है। परम पूज्य गुरुदेव, परिषद् तथा श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वागजीभाई व्होरा ने भी परिषद् के इन कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

हड्डी रोग शिविर

जावरा। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा जावरा द्वारा स्व. बाबुलालजी रूनवाल की स्मृति में रूनवाल परिवार के सौजन्य से विशाल निःशुल्क हड्डी रोग निदान शिविर एवं परामर्श शिविर आयोजित किया गया। शिविर में पूज्य साध्वी डॉ.श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने अपनी पावन निश्रा प्रदान की। कार्यक्रम के शुभारंभ में साध्वी जी ने मंगलाचरण कर मानव सेवा में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान कर मानव जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम को डॉ.श्री नितिन जी जैन, संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी दसेड़ा, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी तांतेड़, वाटिका ट्रस्ट अध्यक्ष श्री इंदरमलजी दसेड़ा, जिला केमिस्ट एसोसिएशन के जिला सचिव श्री प्रकाशजी चौरड़िया ने आतिथ्य प्रदान कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सभी अतिथियों का स्वागत परिषद् एवं समाज के पदाधिकारियों व वरिष्ठ सदस्यों ने किया। स्वागत उद्बोधन परिषद् के अध्यक्ष श्री यशवंतजी चोरड़िया ने किया। स्वागत गीत श्रीमती वर्षा एवं श्रीमती प्रियंका रूनवाल ने प्रस्तुत किया। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में स्व. श्री बाबुलालजी रूनवाल के जीवन पर प्रकाश डाला एवं परिषद् की उपलब्धियों की सराहना भी की। परिषद् के कोषाध्यक्ष श्री पारसजी सकलेचा ने डॉ. नितिनजी जैन का संक्षिप्त परिचय दिया।

कार्यक्रम में श्रीसंघ एवं अ.भा.श्री जैन नवयुवक, तरूण, महिला, बहु परिषद परिवार के गणमान्य नागरिक एवं सदस्यगण उपस्थित थे। परिषद् द्वारा शिविर के लाभार्थी परिवार के श्री शांतिलालजी, संजयजी, मुकेशजी रूनवाल का बहुमान शाल एवं श्रीफल से किया गया। अपनी सेवाएं दे रहे डॉ. नितिनजी जैन को परिषद् की ओर से मोमेंटो प्रदान कर बहुमान किया गया। शिविर के संयोजक परिषद् के स्वास्थ्य सचिव श्री मनोज जी रूनवाल के साथ श्री बच्छराज जी चौरड़िया, श्री कनकमलजी मालक, श्री सुरेशजी चौरड़िया, श्री हेमेन्द्रराजजी चौरड़िया, श्री अशोकजी नवलक्खा, श्री जितेन्द्रजी मेहता, श्री अरविंदजी मोदी, अरविंदजी मेहता, देवेन्द्रजी कांकरिया, मुकेशजी चोरड़िया एवं पवनजी कटारिया ने अपने विशिष्ट सेवा से शिविर को सफल बनाया। कार्यक्रम का संचालन श्री निलेशजी दसेड़ा एवं प्रवीणजी वन्याक्या ने किया। आभार परिषद् के महासचिव श्री संजयजी धारीवाल ने माना।

जावरा। पूज्य साध्वीजी महाप्रभाजी श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीजी डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चार की प्रेरणा से चल रहे चातुर्मास अंतर्गत पूज्य साध्वीजी के प्रतिदिन व्याख्यान के रूप में ज्ञान गंगा बह रही है।

श्रद्धालुओं द्वारा नमस्कार महामंत्र का जाप करते हुए

साध्वीजी ने अपनी वाणी में कहा कि जीवन में पाप कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। छोटे-छोटे पापों के लिए बड़ी सजा मिलती है। प्रभु से प्रार्थना करो कि हे प्रभु मेरी आसक्ति कब छूटेगी। मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं पाप से मुक्ति पाऊँ। किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं रखूँ। जिस पाप के बिना जीवन चल सकता है, उनका त्याग करूँ। जो पाप आसक्ति से हो जाए उनका प्रायश्चित करो। बड़े से बड़े पाप का गुरु भगवान के सम्मुख प्रायश्चित करो। ऐसा करने से पाप में कमी आ जाती है। आपने कहा कि अन्दर की बुराइयों को हमें स्वयं दूर करना होगा। संसार समुद्र के समान और मनुष्य जीवन नौका के समान है। दूसरों की निंदा यदि करते हों तो कर्म का बंधन होता है, आपको अहंकार होगा, क्रोध होगा और उतने ही आप दु:खी होंगे। धर्मरूपी नौका में बैठकर आप अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

पूज्य साध्वीजी की निश्रा में चातुर्मास अन्तर्गत मेरु तप की तपस्या चल रही है। इसमें एक दिन उपवास एक दिन बियासणा करना होता है।

16 अगस्त को पूज्य साध्वीजी की

निश्रा में जैन पंचायती नोहरे में प्रात: 8 बजे सामूहिक नवकार मंत्र का जाप हुआ। इसमें 700 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। धार्मिक नाटिका का कार्यक्रम भी हुआ। इसमें संसार के सभी भौतिक सुखों को छोड़कर संयम जीवन के रूप में रहकर अपने जीवन में आत्मोन्नति के पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। पूज्य साध्वीजी म.सा. ने अपने व्याख्यान में कहा कि नवकार महामंत्र का जाप करने से सभी पाप, कष्ट, बाधाएं दूर होती हैं। व्यक्ति को गुणवान बनना चाहिए। गुणों को अपनी ओर खींच कर लाना सच्चा धर्म है। गुण देखने से द्वेष की भावना समाप्त होती है। जीवन गुण और अवगुण का संगम है, हमें दृष्टि में बदलाव लाना चाहिए। गुणवान बनने के लिए गुणों को देखना है, अवगुणों को दूर करना है। आत्मा अनंत गुणों की खान है।

17 अगस्त को मेरू तप तपस्या के पारणे के लाभार्थी श्रीमान् संतोषकुमारजी, पंकजकुमारजी खिमेसरा का बहुमान लाभार्थी श्रीमान प्रकाशचंदजी सुरेशकुमारजी चौरड़िया (बोरखेड़ावाला) परिवार द्वारा किया गया।

साध्वीजी की मंगल प्रवेश हुआ

राजगढ़। साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री कुलरत्नाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विरतिरत्नाश्रीजी म.सा. का नगर में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। भारी बारिश के बावजूद गुरुभक्तों के उत्साह में कमी नहीं आई वरन् दुगुने उत्साह से नगरजनों ने साध्वीजी भगवंत की अगुवानी की।

नगर प्रवेश पर कलश व गहुली से श्रीमती लता व मितवा भंडारी ने वदाया। इस अवसर पर अगवानी श्रीसंघ के राष्ट्रीय सहयंत्री श्री मनोहरलालजी पुराणिक, चातुर्मास समिति संरक्षक श्री बाबुलाल मामा, श्रीसंघ, नवयुवक व तरुण परिषद् के सदस्यों ने की। चल समारोह के पूर्व साध्वजी भगवंत श्री सुनिल परबदा के निवास पर पधारे जहाँ उनको गहुली से वदाया एवं परिवार द्वारा श्रीसंघ को प्रभावना वितरित की गई। तत्पश्चात् मोहन गार्डन पर श्री कोठारी एवं मूणत परिवार ने साध्वीजी को अक्षत गहुली से वदाया।प्रवेश चल समारोह का शुभारंभ श्री मोहन गार्डन से हुआ जिसमें तरुण परिषद् के उत्साही युवक नाचते, गाते, जयघोष करते हुए चल रहे थे। शोभायात्रा में सकल जैन श्रीसंघ के सदस्य, महिला मंडल की सदस्याएँ

अपनी वेशभूषा में चल रहीं थीं। शोभायात्रा का समापन श्री राजेन्द्र भवन में धर्मसभा के रूप में हुआ। यहाँ सर्वप्रथम उपस्थित महिलाओं ने गुरुवंदना की। साध्वीजी भगवंत ने मंगलाचरण से धर्मसभा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथि श्रीसंघ के राष्ट्रीय सहयंत्री श्री मनोहरलालजी पुराणिक कुक्षी, अतिथि-नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश धाड़ीवाल कुक्षी, म.प्र.श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुरेश तातेड़, तरुण परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री शशांक लुणावत, राजगढ़ श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मणिलालजी खजांची, चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री भेरुलाल भण्डारी, नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी श्री दिनेश मामा ने किया। स्वात गीत श्रीमती सोनू सुनील लोढ़ा ने प्रस्तुंत किया। अतिथियों का स्वागत श्रीसंघ व परिषद् के पदाधिकारियों ने किया। इस अवसर पर प्रवेश समारोह पर नवकारसी व स्वामीभक्ति के लाभार्थी श्री चंदनमल, सागरमल, कैलाश, प्रकाशचंद्र, मुकेश, राकेश कोठारी मूणत परिवार का श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया।

साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि अपने जीवन को कर्ममुक्त बनाने के लिए हमें बारिश की तरह धर्म की बौछार में भिगना है। चातुर्मास के दौरान आराधना कर अपने कर्मों का क्षय करना है। राजगढ़ की व्याख्या करते हुए आपने कहा कि राज का अर्थ है धर्म की आराधना कर आत्मा का राज पाना और गढ़ का अर्थ त्याग व तपस्या कर मोक्ष का गढ़ पाना है। पश्चात् अतिथि उद्बोधन में श्री पुराणिकजी ने राजगढ़ से जुड़े गुरुदेवश्री राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि राजगढ़ नगर एक धर्मभूमि है, जहाँ तप आराधना का सिलसिला चलता रहता है। श्री धाड़ीवालजी ने कहा कि आज बादल की गड़गड़ाहट इस बात की सूचक है कि चातुर्मास जप-तप की बारिश लेकर आया है। श्री तांतेड़ ने कहा कि चातुर्मास का कई वर्षों बाद योग आया है जिसका लाभ लेकर समाजजन को अपने जीवन को तपमय, धर्ममय व मंगलमय बनाएं। श्री लुणावत ने कहा, कि नगर का राजेन्द्र भवन पूज्य गुरुदेवश्री की उर्जा का केन्द्र है। यहाँ से साध्वीजी भगवंत आध्यात्मिक उर्जा में वृद्धि कर संयम जीवन के उच्च शिखर को प्राप्त करें। अहमदाबाद से पधारे कीर्तिभाई ने भी विचार व्यक्त किए। जावरा के आशीष जैन ने मंगल गीत की प्रस्तुति दी। धर्मसभा के समापन पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ राजगढ़, श्री मनोहरलालजी पुराणिक, चंदनमल सागरमल कोठारी परिवार लाबरिया, संजेली, राजगढ़ द्वारा प्रभावना वितरित की गई। कार्यक्रम का संचालन श्री कांतिलाल भंडारी ने

तथा आभार श्री लोकेन्द्र मोदी ने व्यक्त किया। इसके पूर्व श्री राजेन्द्र भवन, यतीन्द्र भवन, एवं नगर के प्रमुख मार्गों की साज-सज्जा तरुण परिषद् के उत्साही युवकों ने की, जिसकी साध्वीजी भगवंत व अतिथियों ने प्रशंसा की। इस अवसर पर चल समारोह मार्ग पर स्वागत द्वार, बैनर, झण्डे, पूज्य आचार्यश्री की विभिन्न मुद्राओं के चित्रों से सजाए गए थे। कुक्षी, बाग, टांडा, रिंगनोद, दसई, लेडगांव, लाबरिया, बरमंडल, राजोद, पारा, नामली, जावरा, रतलाम, धार, इन्दौर, अहमदाबाद, सूरत आदि अनेक स्थलों के श्रीसंघ सदस्य पधारे थे।

श्री कोठारी सी.ए. में प्रथम रहे

रतलाम। रतलाम निवासी श्रीमती हेमलता-प्रकाशजी कोठारी के पुत्र रत्न श्री पलाश कोठारी ने महानगर मुंबई से प्रथम प्रयास में सी.ए. उत्तीर्ण की। सी.ए. परीक्षा में 483 अंकों के साथ रतलाम संभाग में प्रथम स्थान प्राप्त कर जैन समाज को गौरवान्वित किया है।

श्री पलाश उर्फ अंशु आरंभ से ही मेधावी छात्र रहा है। वर्तमान में मुंबई में सी.एस. फाइनल की तैयारी कर रहा है। विद्यार्थी पलाश को आचार्यश्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है।

श्री पार्श्वनाथ संगीत मंडल की कार्यकारिणी गठित

जावरा। साध्वीजी डॉ.प्रीति दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री पार्श्वनाथ संगीत मंडल की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें अध्यक्ष श्री राजकुमार मारवाड़ी, उपाध्यक्ष राजकुमार सकरावत, वैभव मूणत महासचिव अंकित मालक, सचिव पवन कटारिया, कोषाध्यक्ष पंकज मोदी, सह कोषाध्यक्ष धर्मेन्द्र कोलन, प्रचार प्रसार मंत्री प्रभात चौरड़िया, कार्यालय प्रमुख नरेन्द्र कुमार संघवी, संगठन मंत्री शशांकजी मेहता, संरक्षक शांतिलालजी कावड़िया, इंदरमलजी दसेड़ा, विजयजी आंचलिया, सुरेन्द्र पोखरना, प्रकाश मोदी, पूर्व अध्यक्ष नगीन सकलेचा आदि की उपस्थिति में सम्पन्न कार्यक्रम का संचालन राजकुमार मारवाड़ी ने किया। यह जानकारी प्रचार प्रसार मंत्री प्रभात चौरड़िया ने दी।

रत्न संदेश-भाग 2

लेखक - पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.
प्रकाशक - दिव्य संदेश प्रकाशन, मरीन लाईंस (ई.) मुंबई।
मूल्य - रु.150/-मात्र
साहित्य सज्जा - सुंदर व आकर्षक, बहुरंगी पृष्ठ, पक्की बाईंडिंग सहित।

प्रस्तुत पुस्तक नाम के अनुरूप किसी रत्न से कम नहीं है। पुस्तक में प्रभावी रूप से 188 संदेशों का पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने आलेखन किया है। हर एक संदेश मनुष्य जीवन को सही राह व सही मोड़ दिखाने वाला है। पुस्तक में दिया प्रत्येक संदेश पूज्यश्री के गहन चिंतन को भी रेखांकित करता है। यह पुस्तक, पुस्तक नहीं अपितु ऐसी निधि है जो मनुष्य जीवन को रत्न बना सकती है।

-राजेन्द्र सोनी

तप, आराधना आरंभ

इन्दौर। पूज्य साध्वीजी श्री सूर्योदयाश्रीजी, श्री कैलाश श्रीजी एवं श्री विपुलदर्शिता श्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से उन्हीं की निश्रा में इन्दौर स्थित श्री राजेन्द्र उपाश्रय में 'श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ' की अट्ठम तप आराधना तथा 'श्री अरिहंत पद' के एकासने सम्पन्न हुए। इसके साथ ही दस यति धर्म की तपस्या आरंभ हुई है। प्रत्येक रविवार को विभिन्न पदों के साथ एकासना एवं संबंधित विषय पर प्रश्नोत्तर चल रहे हैं।

श्री वीरेन्द्र राठौर ट्रस्टी बने

बड़नगर। नगर के युवा समाजसेवी वीरेन्द्र राठौड़ (जैन) को प्रसिद्ध जैन तीर्थ पालीताणा (गुजरात) के यतीन्द्र भवन ट्रस्ट का ट्रस्टी मनोनीत किया गया है। आपका मनोनयन ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी चौधरी बैंगलूर द्वारा राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के शुभाशीर्वाद से किया गया है.

उल्लेखनीय है कि श्री वीरेन्द्र राठौड़ वरिष्ठ समाजसेवी एवं भाजपा नेता स्व. श्री वर्धमानजी जैन के ज्येष्ठ पुत्र हैं। वर्तमान में आप अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के प्रांतीय कोषाध्यक्ष, श्री त्रिस्तुतिक श्रीसंघ बड़नगर के सचिव हैं। मृदुभाषी एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री राठौड़ राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के अनन्य भक्त हैं। आचार्यश्री का असीम आशीर्वाद आपको प्राप्त है। आपकी नियुक्ति पर सम्पूर्ण समाज में हर्ष व्याप्त है। प्रमुख समाजजनों में शांतिलाल गोखरू, शिखर मोदी, राजकुमार नाहर, धनुष खाबिया, नरेन्द्र चौपड़ा, प्रकाश श्रीश्रीमाल, संजय खाबिया, सुशील श्रीश्रीमाल, राजेन्द्र तलेसरा, नीलेश राठौड़ आदि ने उन्हें बधाई देते हुए उज्वल भविष्य की कामना की है। यह जानकारी संघ के पूर्व ट्रस्टी राजकुमार नाहर ने दी।

गिरिया अध्यक्ष एवं गादिया सचिव बने

सुशील गिरिया

प्रकाश गादिया

उज्जैन। त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ नयापुरा उज्जैन के त्रिवार्षिक चुनाव राजेन्द्र सूरि ज्ञान मंदिर नयापुरा में सम्पन्न हुए। अध्यक्ष पद पर सुशीलजी गिरिया, सचिव प्रकाशजी गादिया, उपाध्यक्ष कपिल सकलेचा, विजय गादिया, पुष्पेन्द्र जैन, कोषाध्यक्ष श्री सुरेशजी पगारिया सर्वानुमति से निर्विरोध निर्वाचित हुए।

उपरोक्त जानकारी देते हुए नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष राजेन्द्र पगारिया ने बताया कि श्री गिरिया को लगातार पांचवी बार अध्यक्ष बनाया गया है। सभा में नवीन पदाधिकारियों का स्वागत संघ से राजमल चत्तर, बाबूलाल सकलेचा, माणकलाल चत्तर, नवयुवक परिषद् से अतुल चत्तर, राजेश पगारिया, प्रवीण गादिया, नवीन गिरिया, मनोज जैन, मनीष पिपाड़ा, विजय डांगी, राकेश चत्तर, राजेश चपलोद, दीपेश सकलेचा, योगेश पगारिया, महिला परिषद् से चन्द्रकांता चत्तर, आजाद बेन, चन्द्रकांता गादिया, प्रमिला सकलेचा, तरूण परिषद् से राजेन्द्र पटवा, राहुल सकलेचा, सौरभ संघवी, बहु परिषद् से बबीता गिरिया, पिंकी सकलेचा, रेखा चत्तर आदि ने किया।

श्रीमती तारादेवी जैन नहीं रहीं

इन्दौर। सुश्राविका, धर्मनिष्ठ, तपस्वी, समाजसेवी, परम गुरुभक्त श्रीमती तारादेवी पति स्व. चांदमलजी (बागवाला) का विगत दिनों स्वर्गवास हो गया। संघवी श्री केसरीमल रूपचंद्र, चांदमल-राजमल जैन का परिवार बाग तथा इन्दौर में अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में बाग से पालीताणा छःरिपालक संघ, इन्दौर से परासली संघ तथा अनेक तीर्थयात्रा संघ, उपधान, बाग चातुर्मास में उल्लेखनीय सहयोग में परिवार की वरिष्ठ ताराबाई का मार्गदर्शन सराहनीय रहा। शारीरिक अनुकूलता तक आप नियमित प्रतिक्रमण, पूजन, सामायिक एवं तपस्या करती रहीं। आपके परिवार ने हासमपुरा गुरु मंदिर हेतु जमीन तथा निर्माण कार्य में प्रमुख सहयोग प्रदान किया। उज्जैन से हासमपुरा के दो पैदल यात्रा संघ भी निकाले। परिषद् परिवार, शाश्वत धर्म परिवार द्वारा उन्हें सादर श्रद्धांजलि।

श्रीमती लीलाबाई मूणत नहीं रहीं

बदनावर। सुश्राविका, तपस्वी, देव-गुरु-धर्म अनुरागी श्रीमती लीलादेवी मूणत का 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। श्रीमती लीलादेवी अंतिम समय तक आत्म कल्याण की क्रियाओं में संलग्न रहीं। प्रतिदिन दोनों समय प्रतिक्रमण, देवदर्शन, पूजन, तप आदि उनकी दिनचर्या थी। साधु-साध्वीजी भगवंतों के वैय्यावच्च में अग्रणी श्रीमती मूणत ने जीवन के अंतिम दिवस भी प्रवचन और गोचरी व्होराने का अनुपम लाभ प्राप्त किया।

प.पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने अपने संदेश में लिखा- 'जीवन चक्र भव-भ्रमण को रोकने का प्रयास करते हुए अंतिम लक्ष्य को पाना है। कर्म की शून्यता ही जीवन का मुख्य ध्येय है। लीलाबाई बड़नगर चातुर्मास के दौरान तथा बदनावर में प्रतिष्ठा अवसर पर भी धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थीं। उनकी प्रवृत्तियाँ और निर्मल भावनाएं उन्हें उच्च गति की ओर ले जाएंगी।'

स्व. राजमलजी सा. की पत्नी श्रीमती लीलाबाई ने जीवन में उपधान तप, सोकमत्ता अट्ठाइयाँ आदि तप, विभिन्न तीर्थों की यात्रा कर जीवनयात्रा की अनंतता को विराम देने का प्रयास किया।

भाई श्री नवीनजी, नरेन्द्रजी, अनिलजी की माताजी एवं मुकेशजी लुणावत की बड़ी मम्मी श्रीमती लीलाबाई ने अपना पारिवारिक एवं मातृत्व फर्ज निभाते हुए सुसंस्कारों से सिंचित किया। उसी का सुफल है कि आज अनिलजी-मुकेशजी आदि परिवारजन परिषद् के माध्यम से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप स्व. श्री मांगीलालजी की अनुज वधु व श्री श्रेणिकजी की भाभी सा. थे।

बदनावर श्रीसंघ अध्यक्ष, रतलाम श्रीसंघ, बड़नगर श्रीसंघ सहित श्री दिलीपजी चोरड़िया, निलेश लोढ़ा, भाजीबीनि के श्री गौस्वामीजी व अनेक गणमान्यजनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। शाश्वत धर्म परिवार भी उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

रजत रश्मियाँ

500/- स्व. श्रीमती तारादेवी चांदमलजी पोसिया (बागवाले) इन्दौर की पावन स्मृति में संघवी पोसिया परिवार बाग वाले इन्दौर की ओर से शाश्वत धर्म को भेंट। धन्यवाद ! — व्यवस्थापक

चातुर्मासिक धर्माराधना का आयोजन

रतलाम। नीमवाला उपाश्रय में इस चातुर्मास साधु-साध्वी विराजित नहीं हैं। महिला परिषद् के तत्वावधान में आराधना-उपासना महोत्सव व्यापक रूप से मनाने के लिए समाजजनों ने व्यापक योजना तय की है।

चातुर्मास के दौरान 108 सामायिक, 108 प्रतिक्रमण, 68 दिवसीय श्री शांतिनाथ भगवान के जाप, 24 दिवसीय श्री विमलनाथ भगवान के जाप के साथ पौधष, चौबीस प्रहरी पौषध कराने का संकल्प अ.भा.महिला परिषद् शाखा रतलाम के माध्यम से घोषित किया गया है। सामायिक व प्रतिक्रमण का आयोजन 108 दिवसीय है। जाप में परिवार के किसी एक सदस्य की उपस्थिति अनिवार्य होगी। पूरे चातुर्मास में 9 पौषध, 7 चौबीस प्रहरी पौषध करने तथा उक्त सभी आयोजनों में शामिल होने वाले सभी श्रावक-श्राविकाओं का बहुमान कार्तिक पूर्णिमा पर किया जाएगा। श्री शांतिनाथ प्रभु के जाप 1 अगस्त से 7 अक्टूबर तक होंगे। श्री विमलनाथ भगवान के जाप पर्युषण पश्चात् होंगे। अनुष्ठानों का आयोजन स्थल नीमवाला उपाश्रय रहेगा।

श्री संघ एवं ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष डॉ.ओ.सी. जैन ने श्रीसंघ के सभी सदस्यों एवं श्राविकाओं से इस चातुर्मासिक धर्माराधना महोत्सव में भाग लेने का अनुरोध किया है।

68 दिवसीय जाप प्रारंभ:-श्री शांतिनाथ भगवान के 68 दिवसीय जाप श्री शांतिनाथजी प्रभु के चित्र की स्थापना, माल्यार्पण, धूप-दीप पूजा एवं विधि सम्पन्न होने के साथ नीमवाला उपाश्रय पर आरंभ हुए। इसके पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं ने जाप प्रारंभ किए। जानकारी में अनुष्ठान आराधना उपासना महोत्सव की प्रभारी ममता धनसुख भंडारी ने बताया कि श्रीसंघ एवं ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, वरिष्ठ श्रावक गेंदालाल सकलेचा, टेकचंद पितलिया, महोत्सव संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने पूजा अर्चना की। साधु-भगवंतों के निर्देशानुसार जाप किया जा रहा है। इससे देश, समाज एवं जाप करने वालों को सुख-शांति व सफलता प्राप्त हो।

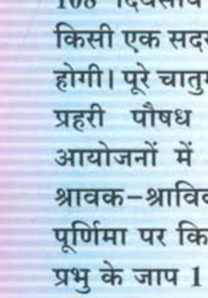

अविशा बोहरा 'जैन' बनीं सी.ए.

बखतगढ़। इस वर्ष सी.ए.ऑल इंडिया फाईनल परीक्षा में बखतगढ़ की 20 वर्षीय अविशा बर्धमान बोहरा (जैन) ने 800 में से 507 अंकों के साथ सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर क्षेत्र का नाम गौरवान्वित किया है। इन्दौर में सेकंड रैंक अर्जित की है।

अमूल पटवा को आईआईटीजेईई में 1570 वीं रेंक

बखतगढ़। आईआईटीजेईई एडवांस्ड 2015 की ऑल इंडिया रेंक में मेधावी छात्र अमूल पंकज पटवा ने 1570 वाँ स्थान अर्जित कर जैन समाज एवं नगर का नाम गौरवांवित किया है। पब्लिक स्कूल का छात्र अमूल इंजीनियर बनना चाहता है।

शिवानी पटवा को सुयश

बखतगढ़। यहाँ की मेधावी छात्रा शिवानी निलेश पटवा ने ऐमराल्ड हाईट्स स्कूल इन्दौर से कक्षा 10 वीं (सीबीएसई) केन्द्रीय बोर्ड की परीक्षा देकर 9 सीजीपीए हासिल कर परिवार, विद्यालय एवं नगर का नाम रोशन किया है।

221 वीं सामूहिक पदयात्रा की पूर्णाहुति

थाने। थाने तीर्थ से प्रति माह पूर्णिमा से शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय नीलम नगर मुलुंड के लिए निकलने वाली सामूहिक पदयात्रा इस बार आषाढ़ सुदी 15 गुरुवार दिनांक 2 जुलाई 2015 को प्रातः 6 बजे रवाना हुई। 221 वीं मासिक यात्रा थाने के विभिन्न मंदिरों के दर्शन करते हुए शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय पहुँची। दर्शन, वंदन, आरती उपरांत यहाँ स्थित विशाल हाल में पूर्णाहुति अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्री शांतिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट, पदयात्रा संयोजक के.के. संघवी की ओर से 221 अखंड पदयात्रा करने वाले पदयात्री नीलेश शाह, राजेश कोठारी का अभिनंदन किया गया। सभी तपस्वियों का बहुमान कर पदयात्रा में सम्मिलित सभी पदयात्रियों का 100 रु. के साथ संघपूजन किया गया। ज्ञात रहे कि पिछले 221 महिनों से प्रति पूनम को आयोजित पदयात्रा में हजारों पदयात्री सहभागी बने। सभी को शंखेश्वर तीर्थ पानसर, भोयणीजी, शोरीसा आदि तीर्थों की यात्रा कराई गई। 108 अखंड यात्रा करने वाले पदयात्रियों को विमान द्वारा शंखेश्वर तीर्थ आदि की यात्राएं कराई गईं। 221 अखंड पदयात्रा करने वालों को सम्मेत शिखरजी महातीर्थ की यात्रा कराई जाएगी।

अ.भा.
श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद सूरत द्वारा सामुहिक सामायिक

1400 हुई।

परिषद प्रांगण से

गुजरात इकाई का भव्य सम्मेलन सम्पन्न

डीसा। परमपूज्य आचार्य देवेश सुविशाल गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में डीसा शहर में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की गुजरात इकाई का प्रांतीय सम्मेलन हजारों कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में मुख्य अतिथि संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई व्होरा, स्थानीय विधायक श्री गोवाभाई देसाई, नगर प्रमुख मेयर तथा स्थानीय संघ के अध्यक्ष, परिषद् परिवार प्रमुख राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, महिला राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती गुणमाला नाहर के साथ अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात परिषद् के प्रांतीय अध्यक्ष श्री अरविंद भाई देसाई एवं नवीनजी वीरवाडिया ने की। गुजरात प्रांतीय महिला अध्यक्ष रसीला बेन एवं बाजार समिति प्रमुख मावजी भाई देसाई थे।

परम पूज्य गुरुदेवश्री ने परिषद् के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि परिषद् अनुशासनबद्ध संस्था है। सदस्यों का उत्साह, त्याग, समर्पणता और गुरु आज्ञा पालन के साथ संगठित अनुशासन नित नये आयाम छू रहा है। नागेश्वर तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव सहित अनेक ऐसे प्रसंगों पर हजारों कार्यकर्ताओं ने अनुशासन एवं गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत

किया। परिषद् संघ के आदेश का पालन करती है, संघ सर्वोपरि है। चतुर्विध संघ की सेवा, जिन शासन की सेवा तथा मानव मात्र के कल्याण की भावना से कार्य करना परम उद्देश्य है। परिषद् की चारों इकाइयाँ मिलकर एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने, साधु–साध्वी भगवंतों की विहार में वैयावच्च करना, समाज के प्रत्येक कार्य को अपना कार्य समझकर तन, मन से समर्पित होकर सहयोग करना हमारा दायित्व है। जीवन में उतार–चढ़ाव, मान–अपमान, सुख–दु:ख, अनुकूल–प्रतिकूल प्रसंग उपस्थित होते रहेंगे किन्तु अपने लक्ष्य को निर्धारित कर कदम बढ़ाने वाला कार्यकर्ता ही सफलता को प्राप्त करता है। परिषद् को इस मुकाम तक पहुंचाने में न जाने कितने कार्यकर्ताओं ने नि:स्वार्थ भाव से अपना खून–पसीना एक किया है, जो स्तुति योग्य है। आज परिषद् का कार्यक्षेत्र बढ़ा है, समय के साथ विस्तारीकरण हो रहा है। सकारात्मक, रचनात्मक कार्यों की श्रृंखला में वृद्धि उज्ज्वलता का संकेत है। परिषद् अद्भुत कार्य कर रही है।

कार्यक्रम का आरंभ प्रभात फेरी, ध्वज वंदन, गीत, गुरुवंदन, मंगलाचरण, दीप प्रज्ज्वलन, अतिथि स्वागत एवं स्वागत उद्बोधन से हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने परिषद् के 57 वर्षीय गौरवमय इतिहास, उसके स्थापना और उद्देश्य सहित समाज और राष्ट्र के लिए विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से प्रदान की जा रही सेवाओं, विभिन्न प्रसंगों का पूरा चित्रण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मालवा, गुजरात, दक्षिण भारत, राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली सहित अनेक प्रांतों में फैली सैकड़ों शाखाओं के हजारों कार्यकर्ता अपने मिशन में लगे हुए हैं। धार्मिक, सामाजिक, सार्वजनिक कार्यों को बखूबी संचालित किया जा रहा है। परिषदों द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में चिकित्सालय, शैक्षणिक संस्थाओं, अन्न तथा भोजन वितरण केन्द्र, पर्यावरण क्षेत्र में सुधार के लिए पौधारोपण, जीवदया के क्षेत्र में पांजरापोल, गौशालाएं, प्याऊ, स्वास्थ्य शिविर, विकलांगता निवारण शिविर, शैक्षणिक सामग्रियों का वितरण, भूकंप प्रभावित, सूखा या

अतिवृष्टि ग्रस्त क्षेत्रों में राहत सहायता, संक्रांति पर पतंगबाजी में घायल पक्षियों की सेवा-सुश्रुषा सहित समाज के मध्यमवर्गीय तथा जरूरतमंदों को रियायती मूल्य पर सुविधायुक्त आवास की व्यवस्था जैसी अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है।

धार्मिक पाठशाला, पूज्य गुरुभगवंत, मुनि भगवंतों, साध्वी भगवंतों, श्रावक-श्राविकाओं द्वारा भी धार्मिक शिविरों का आयोजन कर नई पीढ़ी को सुसंस्कारों से सुसज्जित कर संस्कृति की रक्षा में अहम् भूमिका का निर्वाह हो रहा है। परिषद् द्वारा संचालित पाठशालाओं में अनेक मुमुक्षु तैयार हुए जो आज संयम जीवन अपनाकर जिन शासन की सेवा के साथ आत्मकल्याण में संलग्न हैं।

परम पूज्य गुरुदेव की निश्रा, मुनि भगवंतों के मार्गदर्शन में युवा मुनिराजों द्वारा 'मधुकर ज्ञानायतन' का सफल संचालन पूणे, सूरत तथा छत्राल में हुआ जहाँ सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया। अनेकों के हृदय, मस्तिष्क में संयम का बीजारोपण हुआ।

इसके अतिरिक्त परिषद् 'शाश्वत धर्म' सहित साहित्य प्रकाशन, यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ का संचालन, विद्वतजनों का सम्मान, स्वर्ण जयंति समारोह, शताब्दी वर्ष में अखण्ड ज्योत यात्रा के माध्यम से समाज में जागृति के शंखनाद, अल्पबचत योजना, दीपावली पर फटाके नहीं चलाने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देने, ईद पर मूक पशुओं की आत्मशांति के लिए आयम्बिल जैसे अनेक प्रकल्पों के द्वारा अपनी सक्रिय भागीदारी से मानव मात्र की सेवा में लगी हुई है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बाघजी भाई व्होरा ने परिषद् के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस सामाजिक संस्था में ऐसे समर्पित कार्यकर्ता हैं, उस समाज का भविष्य भी अत्यंत उज्ज्वल रहेगा। समाज और परिषद् एक दूजे के पूरक हैं। समाज ही परिषद और परिषद् ही समाज है। युवावर्ग समाज का दर्पण है।

स्थानीय विधायक श्री गोवाभाई देसाई ने कहा कि वे यह देखकर आश्चर्यचकित हैं कि पूज्य गुरुदेव की पावन प्रेरणा, मार्गदर्शन में राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् नाम की इतनी बड़ी संस्था बिना किसी प्रचार-प्रसार के इतने वर्षों से बड़े-बड़े मानव सेवा सहित विभिन्न कार्य किस प्रकार संपादित कर रही है। ये अन्य समाजों के लिए भी प्रेरणास्पद है। जिस संस्था पर गुरु का हाथ, संगठन की मजबूती, कार्यकर्ताओं की निःस्वार्थ भावना, परिश्रम और निष्ठा, परोपकार का पावन उद्देश्य हो, ऐसी संस्था पर समाज ही नहीं राष्ट्र भी गर्व करता है। मेरी बहुत शुभकामनाएँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने कार्यकर्ताओं की निष्ठा, सेवा कार्यों में उनके जुनून को प्रणाम करते हुए कहा कि यह तो परम पूज्य गुरुदेव का पुण्य प्रताप, आशीर्वाद का सुफल है। मानस पुत्र की तरह पालनकर्ता गुरुदेव अपनी दीक्षा

से लेकर आज तक परिषद् और शाश्वत धर्म को सिंचित कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव ने चार-चार पीढ़ियों को इस माध्यम से जोड़े रखा है। गुरुदेव की कल्पना ने परिषद् को वृहद रूप देते हुए महिला परिषद्, तरूण परिषद्, बालिका परिषद् तथा बाल परिषद् को अस्तित्व दिया है। ये सभी इकाइयाँ एक दूसरे की पूरक हैं, एक दूसरे की कड़ी हैं। पदाधिकारीगण समय-समय पर प्रवास कर शाखाओं में उत्साहवर्द्धन करते हैं।

इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री शांतिलालजी गोखक एवं सह प्रवक्ता चिराग भंसाली ने पेपराल चातुर्मास को ऐतिहासिक एवं सफल बनाने का आह्वान करते हुए परिषद् द्वारा समाधि स्थल भरतपुर से 'अखण्ड ज्योति' लाकर गुरुजन्म भूमि पेपराल पर स्थापित करने की योजना के बारे में बताते हुए कहा कि परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र दंगवाड़ा के नेतृत्व में 17 जुलाई को शुभ मुहूर्त में भरतपुर से प्रज्वलित ज्योत लेकर पेपराल के लिए प्रस्थान करेंगे, जिसे एक समारोह में ट्रस्टी एवं राजस्थान प्रांत के परिषद् अध्यक्ष श्री बाबुलालजी कटारिया व अन्य ट्रस्टीगण विदाई देंगे। इस ज्योत की अगवानी गुरुदेव के पेपराल चातुर्मास प्रवेश के समय संघ एवं परिषद् परिवार के हजारों सदस्यों की उपस्थिति में वरिष्ठजनों द्वारा पूज्य गुरुदेव एवं मुनि भगवंतों की निश्रा में की जाएगी। रथ में जुलूस के साथ भ्रमण करती हुए ज्योत पूज्य गुरुदेव की जन्म स्थली पर स्थापित की जाएगी।

कार्यक्रम में श्री नवीन वीरवाडिया, रमेश डोसी, श्री जयंतिलाल वकील, गुणमाला नाहर, विनोद कोरडिया, संजय अदाणी, अरविंद भाई देसाई सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। पाठशाला के नन्हें बालक श्री शील कोरडिया एवं ध्वज ने जोशीले अंदाज में परिषद् एवं गुरुदेव का गुणगान किया।

द्वितीय सत्र में परिषद् को मार्गदर्शन देते हुए पूज्य मुनिराज श्री चरित्ररत्न विजयजी म.सा. ने परिषद् की स्थापना, इतिहास में पूज्य गुरुदेव श्री जयंतविजयजी म.सा. द्वारा अपने गुरुदेव पू. यतिन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के करकमलों द्वारा परिषद् स्थापना के समय दिए गए अविस्मरणीय योगदान, युवाओं में जोश भरकर संगठित करना, मालव निमाड़ से अखिल भारतीय पहचान देना, गुरुदेव की इस धरोहर को विशाल और विराट स्वरूप देने आदि के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इसमें गुरुदेव के सतत चिंतन, समाज संघ के प्रति गहरी सोच के साथ भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित कर सुदृढ़ता प्रदान करने के लक्ष्य समाहित हैं। पूज्य निपुण विजयजी म.सा. ने भी अपनी रोचक शैली में सम्मेलन को उद्‌बोधित किया। पू. निपुण विजयजी म.सा. के जन्मदिवस अवसर पर उनके संयम जीवन की अनुमोदना की गई।

इस अवसर पर डॉ.अरविंद भाई का उनकी सेवाओं के लिए स्वागत किया गया। विभिन्न शाखाओं ने अपना वार्षिक अंकेक्षण प्रस्तुत किया। शाखाओं के

उल्लेखनीय कार्यों के लिए उन्हें पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान पाठशाला के गुरुजी श्री कुणाल भाई एवं मिलन भाई बंधुद्वय का बहुमान किया गया। पाठशाला के छोटे बच्चों ने अपनी वेशभूषा में प्रस्तुति दी। सम्मेलन में सूरत, अहमदाबाद, आणंद, नडियाद, लाखणी, डीसा, थराद, दुधवा, नारोली, भायंदर आदि स्थानों से नवयुवक, महिला, तरुण, बालिका एवं बाल परिषदों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने कार्यक्रम के सफल आयोजन और सुंदर व्यवस्था के लिए डीसा श्री संघ, डीसा परिषद्, महिला तरूण एवं बालिका परिषद् का अभिनंदन पत्र प्रदान कर स्वागत किया। परिषद् अध्यक्ष श्री जगदीशभाई डोसी, संघ के मंत्री श्री चन्द्रकांत भाई, परिषद् के मंत्री श्री महेन्द्र मोरखिया, महिला परिषद् अध्यक्ष मोक्ष कोरडिया, बालिका परिषद् अध्यक्ष कु. निधि मोरखिया ने समस्त अतिथियों का आभार माना। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री विनोद कोरडिया एवं कुणाल भाई ने किया।

परिषद सेवा कार्य में अग्रणी

राजगढ़। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् मध्यप्रदेश की बैठक श्री जयंतसेन म्यूजियम में स्थित राष्ट्रीय कार्यालय पर परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नवीन भाई बल्लु मुंबई, मध्यप्रदेश श्रीसंघ अध्यक्ष श्री सुरेश तांतेड़ के मुख्य आतिथ्य व परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में प.पू.राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के पेपराल वर्षावास में चातुर्मासिक व्यवस्था संचालित करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

बैठक में श्री तातेड़ ने कहा कि जब जब श्रीसंघ ने परिषद् को निमंत्रित किया है परिषद् ने हमेशा सेवा कार्यों में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशचन्द धाड़ीवाल ने कहा कि मध्यप्रदेश परिषद् हमेशा से सेवाकार्य में तत्पर रही है। हमें योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री अशोकजी श्रीश्रीमाल ने कहा कि मध्यप्रदेश की प्रत्येक शाखा से 10-10 सदस्यों को सेवा कार्य हेतु 10 दिन के लिए पेपराल तीर्थ पहुंचना है। उपस्थित शाखा अध्यक्षों ने स्वीकृति प्रदान की। बैठक में राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री श्री अनिल दसेड़ा ने कहा कि परिषद् द्वारा किसी एक निश्चित दिन सारे देश में एक साथ पौधारोपण का कार्य आयोजित किया जाना चाहिए। इस सुझाव पर भी स्वीकृति प्रदान की गई। राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री अशोक जैन ने कहा कि सभी शाखाओं में कार्तिक पूर्णिमा पर दो वर्ष में एक बार पदाधिकारियों की

चयन प्रक्रिया होनी चाहिए। इस अवसर पर अनेक राष्ट्रीय, प्रांतीय व शाखा अध्यक्षों ने अपने विचार व्यक्त किए। बैठक का संचालन श्री मोहित तातेड़ ने एवं आभार प्रदर्शन श्री सुशील गिरिया ने किया।

परिषद् के राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी श्री दिनेश मामा ने बताया कि इस अवसर पर केन्द्रीय तरूण परिषद् की बैठक भी आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चिरागजी भंसाली व श्री अभयजी बरबोटा थे। केन्द्रीय अध्यक्ष श्री शशांकजी लुणावत ने मार्गदर्शन दिया। बैठक में आगामी कार्ययोजना की रूपरेखा तैयार की गई। बैठक का संचालन केन्द्रीय महामंत्री श्री पवन जैन ने किया एवं आभार केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री हार्दिक तातेड़ ने व्यक्त किया।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

झकनावदा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् परिवार के सदस्यों द्वारा स्थानीय मंदिर में श्री केसरियानाथ भगवान एवं श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की केसर पूजा कर गुरु पूर्णिमा महोत्सव उत्साह से मनाया गया। वर्तमान आचार्य श्रीमद् जयंत सेन सूरिश्वरजी म.सा. के मंगल स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन के लिए नवकार मंत्र का जाप किया गया। स्थानीय शासकीय हॉस्पीटल में जाकर मरीजों को फल–बिस्किट का वितरण, गौ माता को घास एवं फल खिलाए गए। इस अवसर पर तरूण परिषद् के शैतानमल कुमुठ, अर्जुन सेठिया, डॉ. चौपड़ा, अध्यक्ष मनीष कुमट, परिषद् सचिव मनीष सेठिया (मोनु) आदि उपस्थित थे।

झकनावदा। विगत कुछ समय से श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री हर्षदर्शनाश्रीजी म. का स्वास्थ्य खराब चल रहा है। उनके मंगल स्वास्थ्य के लिए नवकार महामंत्र का जाप किया गया। महामंत्र का जाप त्रिस्तुतिक मूर्तिपूजक श्रीसंघ एवं अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद्, महिला मंडल, तरूण परिषद् झकनावदा व रायपुरिया श्रीसंघ द्वारा किया गया। यह जानकारी तरूण परिषद् के अध्यक्ष मनीष कुमट ने दी।

नवयुवक परिषद् ने की ट्रेन चलाने की मांग

हुबली। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की हुबली शाखा के सदस्यों ने दक्षिण पश्चिम रेल्वे के नए डीआरएम श्री ए.के.जैन से भेंट कर उन्हें पुष्प गुच्छ के साथ रेलमंत्री के नाम से एक मांग पत्र सौंपा। मांग पत्र में हुबली से राजस्थान व गुजरात की ओर ट्रेनें चलाने की मांग विशेष रूप से की गई है।

मांग पत्र में बताया गया कि हुबली कर्नाटक की वाणिज्य राजधानी के रूप में मशहूर है। यहाँ राजस्थान एवं गुजरात के लगभग 5 हजार परिवार व्यवसाय हेतु निवासरत हैं, जो सालाना लाखों रुपए का कर सरकार को अदा करते हैं। इसके उपरांत भी उन्हें अपनी जन्मभूमि राजस्थान व गुजरात जाने हेतु हुबली से रेल सुविधाएं नहीं के बराबर हैं। अधिकांश ट्रेनें बेंगलूर से होकर गुजरती हैं। 4 महीने पहले रिजर्वेशन करने पर भी वेटिंग लिस्ट से ही संतोष करना पड़ता है। साउथ वेस्ट रेल्वे झोन बने वर्षों हो गए हैं परन्तु हुबली को आवश्यक सुविधाएं नहीं मिली हैं। लंबे समय से राजस्थान के लिए कम से कम सप्ताह में दो ट्रेनें चलाने की मांग की जा रही है, जो अभी पूरी नहीं हुई है। हुबली से वाडमेर, जोधपुर या अजमेर के लिए रेल शुरू करने की मांग की गई है। इस अवसर पर नीलेश जैन, संजय सेठ, रिंकेश, विक्रम, मुकेश एवं महेन्द्र उपस्थित थे।

नवयुवक परिषद् द्वारा डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े का सम्मान

हुबली। पिछले दिनों भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित होने के बाद प्रथम हुबली आगमन पर डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े का अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समाजसेवी श्री महेन्द्र सिंघी, परिषद् के अध्यक्ष ललित जैन, निलेश जैन, संजय सेठ, किरण, सुभाष एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे।

नवयुवक परिषद् द्वारा छात्रों को शिक्षण सामग्री भेंट

हुबली। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली द्वारा हुबली से 15 कि.मी. दूर गिरियाल ग्राम स्थित सरकारी स्कूल के छात्रों को नोटबुक, पेन, पेन्सिल, स्कूल बेग, खेल-कूद सामग्री एवं बिस्किट का वितरण किया गया। स्कूल के प्रधानाध्यापक ने परिषद् द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की।

इस अवसर पर पीयूसी 2 की छात्रा दीक्षिता ओसवाल जिन्होंने कामर्स में 97.5 प्रतिशत अंक हासिल कर कर्नाटक राज्य में 9 वीं रेंक और धारवाड़ डिस्ट्रिक्ट में टापर रहने का गौरव हासिल किया है, उनका सम्मान परिषद् द्वारा उन्हें मोमेंटो प्रदान कर किया गया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष ललित जैन, नीलेश जैन, संजय सेठ, किरण जैन, राजु, अक्षय, रिंकेश, दिनेश, गौतम जैन आदि उपस्थित थे।

कत्लखानों को बंद करने हेतु ज्ञापन

हुबली। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सदस्यों द्वारा मुख्यमंत्री के नाम उपतहसीलदार को एक विनती पत्र दिया। जिसमें बताया गया की जैन धर्म का प्रमुख आठ दिवसीय पर्युषण पर्व 10 सितम्बर से 17 सितम्बर तक मनाया जायेगा। इन दिनों सभी जैन धर्मावलम्बी ध्यान, दर्शन, चरित्र और तप की आराधना, साधना और उपासना करते हैं। पर्युषण के दौरान अहिंसा करूणा और मैत्रि का विशेष संदेश प्रचारित किया जाता है।

इस कारण इस पत्र के माध्यम से हम आपसे यह निवेदन करना चाहते हैं की भगवान महावीर का संदेश 'जीओ और जीने दो' की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए और वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता बताने के लिये जैन धर्म के पर्युषण पर्व के आठ दिवस तक संपूर्ण कर्नाटक के कत्लखानों को बंद रखा जाय और मांस के क्रय विक्रय को भी आठ दिनों तक प्रतिबंधित किया जाये।

छात्रों को पुरस्कृत किया गया

विजयवाड़ा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा विजयवाड़ा द्वारा गत वर्ष से आरंभ किए गए धार्मिक स्कूल में अध्ययनरत छात्रों में से इस वर्ष अर्ध वार्षिकी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

परिषद् परिवार द्वारा विद्यालय में सेवा गतिविधियाँ यथावत संचालित की जा रही हैं। हर 15 दिनों में आश्रम में खाना-नाश्ता कराने का कार्य सुचारू रूप से जारी है। 26 जून को चिगुरु आश्रम के 150 बच्चों को सुबह का खाना परिषद् के कार्यकर्ताओं ने अपने हाथों से परोसा। इसके अलावा परिषद् सदस्यों में सर्वश्री नरपतजी, जैठमलजी, मगराजजी, आदि गौशाला में जाकर गायों की सेवा भी करते हैं।

151 सदस्यों ने की नेत्रदान की घोषणा

कुक्षी। श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय जैन श्रीसंघ के 151 सदस्यों ने नेत्रदान की सामूहिक घोषणा दिनांक 20 जून को आयोजित रक्तदान एवं अंगदान शिविर में की है। नेत्रदान हेतु समाजजन निरंतर आगे आ रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि नगर में पहली बार स्व. मणिलालजी पुराणिक सा. की धर्मपत्नी स्व. चंदरबाई के नेत्रों का मरणोपरांत दान किया गया था। इससे प्रेरित होकर नेत्रदान का बीड़ा परिषद् ने उठाया था। श्रीमती चंदरबाई के बाद उनके परिवार के लगभग सभी वयस्क सदस्यों ने भी नेत्रदान की घोषणा की है। नेत्रदान को लेकर जैन श्रीसंघ में जागरूकता बनी हुई है। इसी क्रम में श्रीमती मणिकांताबाई धनराजजी डूंगरवाल देहदान करने वाली प्रथम महिला हैं। इनके बाद मनोहरलाल पुराणिक, अल्केश कुमार पारिख ने भी देहदान की घोषणा की है।

निःशुल्क सर्वरोग निदान शिविर सम्पन्न

अलीराजपुर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा अलीराजपुर में पटेल पब्लिक स्कूल में निःशुल्क सर्वरोग निदान शिविर का आयोजन 28 जून 2015 को किया गया जिसमें 427 सामान्य मरीजों के साथ 55 विशेष बीमारियों से ग्रस्त मरीजों का धीरज हास्पीटल बड़ौदा में गाड़ी से भेजकर निःशुल्क इलाज कराया गया।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व मार्च एवं अप्रैल माह में भी इस वर्ष सर्व रोग निदान शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें धीरज हास्पीटल बड़ौदा के 45 चिकित्सकों एवं 15 सहकर्मियों के दल ने अपनी सेवाएं प्रदान की थीं। इन दोनों शिविरों में क्रमशः 455 एवं 375 मरीजों का निःशुल्क उपचार कर दवाइयों का वितरण भी किया गया था।

सम्पन्न शिविर में पारा से आये श्री प्रकाश राका, प्रकाश छाजेड़, प्रकाश तलेसरा पत्रकार की विशेष टीम का स्वागत किया गया।

पाठ्य सामग्री वितरित

अलीराजपुर। वनवासी बच्चों में पढ़ने-लिखने की भावना बढ़े इसी उद्देश्य को लेकर ग्राम बड़दला में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा अलीराजपुर द्वारा बच्चों को स्कूल बेग, कापियाँ सहित अन्य सामग्री का वितरण एक कार्यक्रम में किया गया। इस आयोजन में संस्कार ग्रुप मुंबई एवं अलीराजपुर परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से वनवासी बच्चों को उक्त सामग्री निःशुल्क वितरित की गई।

पूर्णिमा महोत्सव प्रारंभ

अलीराजपुर। प्रसिद्ध प्राचीन जैन तीर्थ लक्ष्मणी में प्रत्येक माह की पूर्णिमा पर समाज द्वारा धार्मिक आयोजन किए जाते हैं। प्रतिवर्ष चैत्र पूर्णिमा एवं कार्तिक पूर्णिमा को प्रातः पद दर्शन, भाता, स्वामी वात्सल्य, रात्रि को भक्ति कार्यक्रम रखे जाते हैं। अन्य मासिक पूर्णिमा पर प्रक्षाल पूजा, देव दर्शन, प्रातः नवकारसी का आयोजन किया जाता है। प्रतिदिन यहाँ बड़ी संख्या में गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र सहित प्रदेश के कई जिलों के तीर्थयात्री देवदर्शन, सेवा-पूजा के लिए पहुँचते हैं। इनका आयोजन भी श्रीसंघ करता है। वर्तमान में मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा है वहीं नवीन गुरु मंदिर व भोजन शाला बन चुके हैं।

किशोरजी खिमावत की स्मृति में सामूहिक वृक्षारोपण महोत्सव आयोजित

इन्दौर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के आह्वान पर भारत भर की लगभग सभी शाखाओं ने 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करते हुए पौधरोपण का सामूहिक एवं एकरूपता का संदेश दिया।

उक्त जानकारी देते हुए परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, पर्यावरण मंत्री तथा जावरा नगरपालिका अध्यक्ष श्री अनिल दसेड़ा ने बताया कि गुरुभक्त स्व. किशोरजी खिमावतजी ने राजस्थान जैसे रेतीले क्षेत्र में लगभग 7 लाख से अधिक नीम के पौधों को पल्लवित एवं विकसित किया। श्री किशोरजी के कार्यों से प्रेरणा लेकर परिषद् ने अपने राष्ट्रीय कार्यों में इजाफा करते हुए इस दिवस को पर्यावरण के साथ जोड़ा। इसके अन्तर्गत म.प्र., गुजरात, दक्षिण भारत, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रांतों की नवयुवक परिषद् ने पौधरोपण का कार्य सादगी भरे माहौल में सम्पादित किया। इन्दौर, धार, उज्जैन, खाचरोद, रिंगनोद, जावरा, नीमच, मंदसौर, रतलाम, निम्बाहेड़ा, दसाई, पारा, खवासा, करवा, झाबुआ, राजगढ़, टाडा, बाग, बड़नगर, अलीराजपुर, आलोट, महिदपुर, अंजड़, दक्षिण भारत में विजयवाड़ा, बीजापुर, हुबली, मैसूर, गुजरात के नडियाद, अहमदाबाद सहित देश के अन्य स्थानों पर उत्साहपूर्वक परिषद् परिवार के सदस्यों ने झंडावंदन व वृक्षारोपण का कार्य सम्पन्न किया।

पर्यावरण मंत्री श्री अनिल दसेड़ा ने जावरा, आलोट आदि स्थानों पर पर्यावरण एवं पौधरोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि की भूमिका का निर्वाह किया। झाबुआ शाखा में परिषद् के बैनर तले श्री मुकेशजी जैन, ओ.सी.जैन, मनोहरजी भंडारी सहित अनेक पदाधिकारियों ने पौधरोपण किया। पारा में श्री प्रकाश छाजेड़, प्रकाश रांका, प्रकाश तलेसरा, अभिषेकजी कोठारी परिवार ने, रिंगनोद में श्री शैतानमलजी बाठियाँ व अन्य ने भाग लिया।

कर्नाटक की हुबली शाखा में श्री नीलेश ने पौधरोपण कर गरीब बच्चों को भोजन करवाया। निम्बाहेड़ा में प्रदेश अध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरिया, इन्दौर में राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, रतलाम में सुनिल डैडी ने पौधरोपण कार्य की अगुवाई की।

पारा। स्वतंत्रता दिवस की 69 वीं वर्षगांठ पर पर्यावरण प्रेमी स्व. सेठ श्री किशोरजी खिमावत की स्मृति में परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री श्री अनिलजी दसेड़ा के निर्देशानुसार पर्यावरण संरक्षण को आगे बढ़ाने के लिए अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा पारा द्वारा शास.क.उ.मा.विद्यालय पारा में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वृक्षारोपण के पूर्व स्कूल के बच्चों ने राष्ट्रगीत की प्रस्तुति दी एवं तीन बार नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर विधिपूर्वक स्कूल बाउंड्री में चारों ओर वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण के पश्चात् श्रीसंघ एवं परिषद् के लोगों ने स्वतंत्रता दिवस के संबंध में बच्चों को विस्तार से अवगत कराया। 'साँसें हो रही कम-आओ पेड़ लगाएं हम' नारे से वृक्षों की आवश्यकता दर्शाते हुए हर बच्चे को एक-एक पौधा लगाने का संकल्प दिलाया। श्रीसंघ व परिषद् की ओर से विद्यालय में सांस्कृति मंच बनाने के उद्देश्य से 9000 रु. राशि विद्यालय को प्रदान करने की घोषणा की गई। इस अवसर पर उपस्थित विद्यालय के लगभग 750 विद्यार्थियों को परिषद् की ओर से पेन वितरित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई। स्कूल स्टाफ सहित पारा श्रीसंघ एवं परिषद् के सर्वश्री मनोहरलाल छाजेड़, राजेन्द्र कोठारी, प्रकाश छाजेड़, दिलीप कोठारी, अतुल भंडारी, संदीप व्होरा, अनोखीलाल नाहटा, चंचल कांठेड़, शांतिलाल कोठारी, संजय नागोरी, हिमांशु कांठेड़, अर्पित कोठारी, सोमिल कोठारी, रिंकल नाहटा आदि उपस्थित जनों ने वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाया।

<u>जन्मोत्सव मनाया</u>:- अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने गुरुदेव राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के 79वें जन्मोत्सव हरियाली महोत्सव के रूप में मनाया। मुक्तिधाम पर वृक्षारोपण किया गया।

झण्डावंदन एवं पौधरोपण किया

हुबली– अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली द्वारा गिरियालसाम सरकारी स्कूल में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। जैन संघ के पूर्व अध्यक्ष किशोरजी खिमावत की पुण्यतिथि पर स्कूल प्रांगण में पौधरोपण किया। परिषद् अध्यक्ष ललित कुमार जैन एवं पदाधिकारियों ने झण्डारोहण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संजय सेठ व रिंकेश जैन ने ब्रिटिश शासन से भारत को आजादी दिलाने में स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान पर प्रकाश डाला। नीलेश जैन ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर सुभाष गांधीमुथा, राजेश माण्डोत, कमलेश जैन, बंटी जैन, राजू जैन, आकाश जैन, हर्षल पोरवाल, अक्षय माण्डोत, अभिषेक भंडारी, विक्रम जैन, गुणवंत जैन, कैलाश गांधीमुथा आदि उपस्थित थे।

राजगढ़– अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा राजगढ़ द्वारा 69वें स्वतंत्रता दिवस पर परिषद् भवन पर श्रीसंघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेश तातेड़ व नगर परिषद् राजगढ़ अध्यक्षा श्रीमती मधुलिका तातेड़, पार्षद व गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में शाखा अध्यक्ष श्री कांतिलाल जैन ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया। ध्वजारोण के पश्चात् मिठाई वितरित की गई। आचार्यश्री की प्रेरणा से देशभर की अन्य परिषद् शाखाओं की तरह यहाँ भी त्रिस्तुतिक संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पर्यावरण प्रेमी भामाशाह श्री किशोरजी खिमावत की स्मृति में स्थानीय श्री सरस्वती शिशु मंदिर प्रांगण में पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री दिनेश मामा, तरुण परिषद् के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री शशांक लुनावत, परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री कांतिलाल भंडारी, श्रीसंघ प्रमुख श्री बाबुलाल मामा, परिषद् प्रदेश सह प्रवक्ता श्री विनोद सरसीवाला, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य श्री लोकेन्द्र मोदी, शाखा अध्यक्ष श्री कांतिलाल जैन, श्री कैलाश धाडीवाल, श्री बसंतीलाल लोढ़ा, श्री जिनेन्द्र जैन, श्री मोहन बापना, श्री दिलीप भंडारी, श्री प्रकाश कावडिया, श्री अनिल खजांची, विवेकानंद शिक्षा समिति व तरुण परिषद के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन विवेकानंद शिक्षा समिति के सचिव श्री

तेजकुमार खजांची ने किया। आभार विद्यालय प्राचार्य श्री धर्मवीरसिंह राठौड़ ने व्यक्त किया। कार्यक्रम पश्चात् अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् द्वारा शासकीय चिकित्सालय सरदारपुर में वरिष्ठ चिकित्सक श्री एम.एल.जैन की उपस्थिति में मरीजों को फल एवं बिस्किट वितरित किए गए। इस अवसर पर तरुण परिषद् के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री शशांक लुणावत, शाखा अध्यक्ष श्री रोहिल जैन, पूर्व तरुण राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रणय भण्डारी, सचिव हर्षल खजांची, हर्ष बापना, सोमिक मंडवाडा, अर्पित सराप, साहिल मामा, राहुल कांकरिया, जानी भण्डारी आदि सदस्य उपस्थित थे।

रतलाम–श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा रतलाम ने त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व पर्यावरण प्रेमी श्री किशोरजी खिमावत की स्मृति में 15 अगस्त को जयन्तसेन धाम सागोद रोड पर परिषद् परिवार द्वारा वृक्षारोपण किया गया। तरूण परिषद् के केन्द्रीय निर्देशक श्री सुनिलजी जैन 'डैडी', बाग श्रीसंघ अध्यक्ष श्री अमृत जैन, राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशील छाजेड़, म.प्र.उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र लुणावत, तरूण परिषद् केन्द्रीय सहमंत्री निलेश लोढ़ा के आतिथ्य व परिषद् अध्यक्ष श्री पंकज राठौर की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में परिषद् साथी सर्वश्री मुकेश औहरा, सतीश खेडावाला, राजेश खाबिया, विनय सुराना, जीवन मुरार, अंकित भटेवरा, नरेन्द्र घोचा, एस.बरमेचा, पंकज जैन, सुमित सुराना, शेखर घोचा, उपेन्द्र कोठारी, महिला परिषद् अध्यक्षा श्रीमती ममता भंडारी, तरुण परिषद् सचिव नयन मूणत, निलेश, वैभव आदि परिषद् परिवार के सदस्यों ने वृक्षारोपण किया। संचालन परिषद् सचिव राजकमल दुग्गड़ ने किया।

झकनावदा- परम पूज्य गच्छाधिपति वर्तमान आचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से झकनावदा अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् कार्यालय झकनावदा पर राष्ट्रीय ध्वज आरोहण श्रीसंघ व्यवस्थापक कनकमल माण्डोत द्वारा किया गया। इस अवसर पर शैतानमल कुमट, रोशन सेठिया, मोनू सेठिया, राहुल सेठिया, जयदीप कटकानी, तरुण परिषद् अध्यक्ष मनीष कुमट, अरिहंत कुमट सहित समाजजन उपस्थित थे। तत्पश्चात् तरुण परिषद् के सदस्यों एवं ते.यु.परिषद् के आशीष भांगु, ओमप्रकाश अरोडा आदि ने वृक्षारोपण किया।

सर्वरोग निदान शिविर सम्पन्न

गंभीर रूप से प्रभावित 65 गरीब एवं कमजोर मरीजों को निःशुल्क ले जाते हुए धीरज हास्पीटल की बस। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा अध्यक्ष कमलेश काकड़ीवाला

अलीराजपुर। निःशुल्क सर्वरोग निवारण कैम्प के आयोजन की कड़ी में चतुर्थ कैम्प 9 अगस्त को लगाया गया। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा अलीराजपुर द्वारा अभी तक आयोजित कैंप में पहले कैंप में 427, दूसरे में 375, तीसरे कैंप में 447 एवं चतुर्थ कैंप में 600 मरीजों ने भाग लिया। चतुर्थ कैंप में 200 पुराने मरीजों ने भी उपस्थिति दर्ज की। सुमनदीप विद्यापीठ धीरज हास्पीटल के 45 चिकित्सकों एवं 15 सहकर्मियों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं। 85 गंभीर मरीजों का चिन्हित किया गया जिनमें से 65 को चिकित्सा हेतु अलीराजपुर से पिपरिया (बड़ौदा गुजरात) पहुंचाया गया। मरीजों के आने-जाने, नाश्ता-भोजन सहित ओपीडी की निःशुल्क व्यवस्था की गई। जानकारी देते हुए प्रादेशिक सहसचिव एवं शाखा अध्यक्ष कमलेश काकड़ीवाला ने बताया कि पटेल पब्लिक स्कूल बोरखड़ में आयोजित कैंप में परिषद् परिवार सहित महेश पटेल का विशेष योगदान रहा। अलीराजपुर परिषद् शाखा ने वर्ष में 12 कैंप लगाने का लक्ष्य रखा है।

आलोट शाखा परिषद् द्वारा आयोजित वृक्षारोपण समारोह में पधारे
परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री श्री अनिल दसेड़ा का बहुमान करते परिषद्जन।

रतलाम। राष्ट्रसंत, जैनाचार्य डॉ.जयंतसेन सूरिश्वरजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् रतलाम शाखा ने त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व पर्यावरण प्रेमी किशोर खिमावत की स्मृति में जयंतसेन धाम सागोद रोड पर पौधरोपण किया।

तरुण परिषद् के केन्द्रीय निर्देशक सुनील जैन, बाग श्रीसंघ अध्यक्ष अमृत जैन, राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़, म.प्र. उपाध्यक्ष राजेन्द्र लुणावत, तरुण परिषद् केन्द्रीय सहमंत्री नीलेश लोढ़ा, परिषद् अध्यक्ष पंकज राठौर अतिथि थे।

मुकेश ओहरा, सतीश खेड़ावाला, राजेश खाबिया, विनय सुराना, जीवन मुरार, अंकित भटेवरा, नरेन्द्र घोचा, एस.बरमेचा, पंकज जैन, सुमित सुराना, शेखर घोचा, उपेन्द्र कोठारी, महिला परिषद् अध्यक्ष ममता भंडारी, तरुण परिषद् सचिव नयन मूणत, नीलेश, वैभव आदि उपस्थित थे। संचालन परिषद् सचिव राजकमल दुग्गड़ ने किया।

जावरा । अ.भा.श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् जावरा द्वारा त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व पर्यावरण प्रेमी स्व. श्री किशोरजी खिमावत की स्मृति में गीता भवन के सामने स्थित किशोर वाटिका में वृक्षारोपण किया गया। इसमें परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री एवं नगरपालिका जावरा के अध्यक्ष श्री अनिलजी दसेड़ा, परिषद् के राष्ट्रीय सहमंत्री श्री नगीनजी सकलेचा, प्रदेश प्रवक्ता श्री सुरेशजी चौरड़िया, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी तांतेड़ की

अध्यक्षता में परिषद् अध्यक्ष यशवंत चौरड़िया के नेतृत्व में 21 पौधे लगाए गए। उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी यहाँ किशोरवाटिका में 31 पौधे परिषद् द्वारा रोपित किए गए थे वर्तमान में बड़ा रूप ले चुके हैं। पेड़-पौधों की व्यवस्था परिषद् के सक्रिय सदस्य अजीत जी चत्तर द्वारा की जा रही है। इसी तरह नवयुवक परिषद् शाखा जावरा द्वारा स्थानीय राज राजेन्द्र वाटिका तीर्थ में भी पूर्व में किए गए पौधे वृक्षों का रूप ले रहे हैं।

आयोजित कार्यक्रम में परिषद् के साथी सर्वश्री तेजमलजी मेहता, कनकमलजी मालक, हेमेन्द्रराजजी चौरड़िया, सुनील छाजेड़, सुमीतजी दसेड़ा, प्रकाशजी, अरविंदजी मोदी, प्रकाशजी मोदी, प्रकाशजी कांठेड़, प्रवीण जी कोलन, प्रदीप जी सिसौदिया, प्रवीणजी वन्यक्या, पंकजजी खिमेसरा, अशोकजी नवलक्खा, दिलीपजी कटारिया, सुरेशजी पगारिया, धर्मेन्द्रजी तांतेड़, अजीतजी पिपाड़ा, सुरेशजी मेहता, पवनजी कटारिया, सचिनजी चत्तर, जितेन्द्रजी मेहता आदि साथियों ने पौध रोपण किया। मिठाई वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह जानकारी परिषद् अध्यक्ष यशवंत चौरड़िया ने दी।

मंदसौर। अ.भा.राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा स्थानीय जैन स्कूल, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में पौधरोपण किया गया। परिषद् द्वारा पूरे परिसर में अलग-अलग प्रकार के पौधे लगाए गए।

इस अवसर पर परिषद् के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र डोसी ने वृक्षों का महत्व बताते हुए कहा कि वृक्षारोपण से दूसरे अनगिनत लाभों के साथ स्वच्छ वायु ऑक्सीजन पा सकेंगे। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष गजेन्द्र हिंगड़, सचिव अशोक

खाबिया, केन्द्रीय प्रचार मंत्री सुधीर लोढ़ा, सकल जैन समाज महामंत्री हेमंत हिंगड़, राजकुमार चपरोत, नितेश पोरवाल, अजय फांफरिया, दशरथ जैन, श्रेयांस हिंगड़, राकेश सुराणा, धर्मेन्द्र कर्नावट, अरविंद छिंगावत, सुशील छिंगावत, अशोक बाफना, कैलाश बाफना, केन्द्रीय सहमंत्री तरुण परिषद् जयेश डांगी, विजयेन्द्र फांफरिया, रत्नेश पारख आदि उपस्थित थे।

स्वाधीनता दिवस पर वाहन रैली निकाली

जावरा। 69 वां स्वतंत्रता दिवस युवाओं ने देशभक्ति की गीतों पर नाचते-गाते वाहन रैली निकालकर मनाया। बिना नेता, बिना संस्था, बिना अतिथि की उपस्थिति में आयोजित वाहन रैली में नगर के युवाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। सैकड़ों की तादाद में युवाओं की उपस्थिति रही। सायं 7 बजे गीता भवन से आरंभ हुई रैली नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई गुजरी और घंटाघर चौराहे पर इसका समापन हुआ। नगर में कई स्थानों पर वाहन रैली का आतिशबाजी एवं पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया।

वाहन रैली में वैभव चौपड़ा, शुभम पोरवाल, आकाश दसेड़ा, शुभम दसेड़ा, धीरज सोनी, हर्ष पोरवाल, अंकुर सेठिया, शुभम राठौड़, प्रवीण जैन, राजेश लोढ़ा, यश क्रियावत प्रमुख रूप व्यवस्था संभाले हुए थे। रैली में नगर के अपार दसेड़ा,राजा चंचलानी, शिवेन्द्र माथुर, राहुल पहाड़िया, अंशुल चत्तर, सुफल दसेड़ा, राम पोरवाल, रौनक सुराणा, अंकित पावेचा, अर्पित चत्तर, मुकेश कुमावत सहित कई युवजन सम्मिलित थे।

जूली गोलेचा अध्यक्ष एवं मेघा खाबिया सचिव मनोनीत

अध्यक्ष

सचिव

उज्जैन। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन बहू परिषद् की नमक मंडी उज्जैन शाखा की नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ। इसमें जूली गोलेचा को सामाजिक कार्यों में सराहनीय योगदान देने की अनुमोदना करते हुए अध्यक्ष पद हेतु मनोनयन किया गया। वहीं मेघा खाबिया को सचिव, नीलू गिरिया को उपाध्यक्ष, प्रिया कंकरेचा कोषाध्यक्ष, कविता मेहता सह सचिव एवं जया नाहटा को प्रचार सचिव बनाया गया। इस सभा में सांस्कृतिक समिति संयोजक विनिता बाफना, धार्मिक समिति संयोजक प्रिया कंकरेचा को मनोनीत किया गया।

ज्ञानपीठ परीक्षा में 33 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी

मोहनखेड़ा। परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से परमपूज्य साध्वीजी श्री पुण्यदर्शना श्रीजी आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद् की प्रदेश सचिव श्रीमती आशाजी कटारिया के पर्यवेक्षण एवं नवयुवक परिषद के अध्यक्ष एवं म्यूजियम तीर्थ श्री मोहनखेड़ा के सचिव श्री मुकेशजी जैन के विशेष आतिथ्य में श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ परीक्षा 2015 का आयोजन हुआ। इसमें भाग 1 से 5 तक कुल 33 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इस अवसर पर महिला परिषद् अध्यक्ष श्रीमती सरोज सेठिया, श्रीमती शीला कटारिया, तरुण परिषद् अध्यक्ष निखिल सेठिया, पलाश प्रधान आदि उपस्थित थे। परीक्षा समापन पर प्रदीपजी कटारिया परिवार की ओर से प्रभावना वितरित की गई।

जैन विश्व

इन्दौर- में स्फटिक की सबसे ऊँची मूर्ति बनाई गई है। भगवान सीमंधर की यह मूर्ति 31 ईंच ऊँची तथा 280 किलो वजनी है। इसे एरोड्रम रोड स्थित कुंदकुंद नगर में निर्माणाधीन 80 फीट ऊँचे ढाई दीप मंदिर में प्रतिष्ठित किया जाएगा।

एंटवर्प (ब्रूसेल्स)-बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स से 45 कि.मी. दूर एंटवर्प शहर में स्थित यूरोप का सबसे बड़ा जैन मंदिर राजस्थान के मार्बल से बनाया गया है। इस भव्य मंदिर में पाँच-पाँच सौ किलो के 25 दरवाजों पर महावीर स्वामी के जीवन दर्शन को उकेरा गया है।

सलूंबर- क्षेत्र के ओड़ा में जैन संतों के खिलाफ टिप्पणी के मामले में 13 जुलाई को पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। चारों आरोपी अनूप मंडल नाम की एक संस्था के सदस्य हैं।

हुबली- शहर की हृदयस्थली कंचगार गल्ली स्थित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में निर्मित नूतन महावीर भवन का उद्घाटन पूज्य श्रमण संघीय उप प्रवर्तक दक्षिण केसरी पूज्य श्री नरेशमुनि जी म.सा. के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ।

जबलपुर- श्वेतांबर जैन समाज के आचार्य देवेश जिन पीयूष सागर सूरिश्वरजी म.सा. का चातुर्मासार्थ संस्कारधानी जबलपुर में भव्य नगर प्रवेश हुआ।

नगपुरा (दुर्ग)- प्रथम अषाढी पूनम के अवसर पर छत्तीसगढ़ सहित विभिन्न स्थानों से परमात्म भक्ति का चिदानंद प्राप्त करने हेतु श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने अनुमोदनीय लाभ लिया।

रतलाम- जो सत द्रव्य का लक्षण है, त्रिलक्षण उत्पाद, व्यय, ध्रुव है, त्रैकालिक सत्य है, वह अनेक प्रकारों के परिणामों के परिणमन में द्रव्य की पर्यय में नाना संकल्प-विकल्प में शुद्धि का वय अशुद्धि का उत्पादन कर रहा है। यह बात अध्यात्म योगी आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी ने प्रवचनमाला में कही।

चेन्नई- अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ.दिलीप धींग को चौथी बार जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जबलपुर- संसार में दो चीजें जीवन को नर्क बना देती हैं। एक पुरुष का गुस्सा व दूसरे स्त्री की जिद। स्त्रियों की जिद की दीवार चीन की दीवार से भी बड़ी है। आचार्य श्री जिनपीयूष सागर सूरिजी ने कुशल मंगल भवन में 'महावीर कॉलेज ऑफ बेसिक नॉलेज' विषय पर आयोजित शिविर में युवावर्ग को संबोधित करते हुए उक्त विचार व्यक्त किए।

पालीताणा- कस्तूरधाम पालीताणा में पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजयरत्न सेन सूरिश्वरजी म.सा. आदि गुरुभगवंत एवं साध्वी भगवंत का भव्य सामैया एवं 45 आगम का भव्य वरघोड़ा का आयोजन श्री भद्रंकर परिवार द्वारा किया गया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प्र.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि: श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद,-पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि.....   दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२ ००९

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 140

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज
राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	: अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	: अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	: शाश्वत धर्म
मुख्य संयोजक	: आन्ध्र प्रदेश बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	: नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	: श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Jewel Junction, Achari Street,
Nellore - 524 001 (A.P)
Ph.: 0861-6611777, 2328185,
e-mail:shantilalramani@rediffmail.com

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001